विषय-सूची ।

अनुकम्पा—

प्राय: देखा जाता है कि पुस्तक के प्रारम्भ में भूमिका दी जाती है। यह एक प्रकार प्रथा ही हो गयी है। प्रचलित प्रथा को मानते हुए हम भी इस पुस्तक की भूमिका लिखने को उद्यत हुए हैं।

भूमिका शब्द का एक अर्थ है छोटी भूमि—जैसे बड़े क्षेत्र में बीज वपन के पहले थोड़े से जगह में बीजों को अङ्कुरित कराके पीछे उन:अङ्कुरित बीजों को समुचे क्षेत्र में बोया जाता है। वैसे ही पुस्तक की भूमिका पुस्तक के विषय को तैयार कर उसे मूल पुस्तक में विस्तारित भाव से व्याख्या करती है। यह तो केवल ग्रन्थकार का निजकृत भूमिका के लिये ही प्रयोज्य है।

भूमिका का दूसरा अर्थ सोपान, (पगोथिया) जिसके सहारे नीचो भूमि से ऊंची भूमि में सहज से चढ़ा सके। पुस्तक की "भूमिका" इस अर्थ से, पुस्तक का गहन विषय को सरल भाव से समझा कर पाठकों को सहज में उसमें प्रविष्ट कराती है। इसलिये भूमिका में (१) ग्रन्थकार परिचय (२) ग्रन्थ परिचय (३) ग्रन्थ प्रतिपाद्य विषय परिचय (४) ग्रन्थ प्रतिपाद्य विषय से कौन सा फल प्राप्ति होता है। इसका परिचय होना आवश्यक है।

प्रस्तूयमान पुस्तक में कुछ संग्रह मात्र है। जो सब ढाल दोहाओं का संग्रह है वह मारवाड़ी भाषा में पूज्यपाद श्रीमद् भीखनजी स्वामी का रचित है। श्रीमद् गणिराज भीखनजी स्वामी का परिचय यों तो जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी मात्र के लिये अनावश्यक है। पर जैनेतर पाठकों के लिये उनका संक्षिप्त परिचय देना यहां अप्रासंगिक न होगा।

(१) ग्रन्थकार परिचय।

संवत् १७८३ आषाढ़ शुक्ला १३ के दिन मारवाड़ राज्य के कंटा-लिया ग्राम में उच्च ओसवाल कुल संभूत साह वलूजी सुखलेचा के पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ। पुत्र के गर्भ स्थिति के काल में माता "सिंह" का स्वप्न देखा था ऐसा कहा जाता है। यह पुत्र रत्न बाल्यकाल से ही प्रखर बुद्धिशाली मालूम होता था, और उनकी लालसा क्रमशः आत्मिक कल्याण की तरफ दिखाई पड़ती थी। इन्होंने १८०८ संवत् बाइस संप्रदाय के "रघुनाथजी" नामक आचार्य्य के पास दीक्षा ग्रहण की। इसके पहले ये कुल गुरु गच्छवासी संप्रदाय वालों के पास और पोतियावन्ध संप्रदाय वालों के पास जाते आते थे। पर वहां उनका हृदय का धर्मानुराग का अनुकूल वातावरण न देख उन्होंने रघुनाथजी के पास दीक्षा ली। रघुनाथजी के पास १८१७ संवत् तक रहे पर कुशाग्र बुद्धि भीखनजी को इस संप्रदाय का आचार विचार सर्वथा शास्त्रानुकूल न मिला। आपने गुरुवर्य्य से शास्त्रानुसार प्रवृत्ति करने के लिये बहुत अनुनय करने पर भी जब वे नहीं माने तब आत्मार्थी भीखनजी उनसे अलग होकर शास्त्रोक्त विधि से शुद्ध संयम पालने के लिये स्वयंमेव १८१७ आषाढ़ शुक्ल १५ के दिन फिर से भाव दीक्षा लिया। कुल १३ साधु उस वक्त अलग होकर नवीन मार्ग में आये। भीखनजी ने बड़ा ही उद्यम और एकाग्र चित्तता से सत्य धर्म का स्वरूप प्रचार में जीवन उत्सर्ग किया। तत्कालीन प्रचलित जैन धर्म का जो स्वरूप लोगों के सामने थे उसका शास्त्रोक्त प्रमाण से सत्य स्वरूप समझाने के लिये साधारण गृहस्थ के बोधगम्य भाषा में पद्य में जो ढाल दोहे आदि बना कर उन्होंने प्रचार किया उनमें से कुछ इस पुस्तक में संग्रहित है। भीखनजी स्वामीजी का स्वर्गवास १८६० भाद्रव सुदी १३ के दिन हुआ। आपके अष्टम पाठ में वर्तमान में श्री १००८ श्री कालूरामजी महाराज तेरापन्थ सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य्य हैं।

जहां केवल मात्र १३ साधु मात्र नवीन मार्ग के प्रचार में निकले थे वहां आज प्राय १२५ साधु व २७५ साध्वियें श्रीमान् कालूरामजी महाराज के आज्ञा को पालते हुए शुद्ध धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

(२) ग्रन्थ परिचय।

श्रीमद् भीखनजी स्वामी के रचित "अनुकम्पा" के विषय पर तेरह ढाल, साधु के आचार की छः ढाल जिन आज्ञा का चौढालिया, अठारह पाप की ढाल, आदि ढालें संग्रहित है। जिन जिन मुख्य विषयों पर जैन सम्प्रदाय के विभिन्न शाखाओं में मतभेद है अथवा आचार-भेद है उसपर सरल भाषा में न्याय व सूत्रादि की साख सहित प्रकाश डालने का प्रयास स्वामीजी ने इन ढालों में किया है। एक २ विषय पर जितनी शास्त्रों की साख व युक्तियां दी जा सके सब समावेश कर दी है। पद्य में होने से कंठस्थ कर इन ढालों को श्रावक लोग पठन पाठन के काम में लाते हैं। स्वामीजी की वर्णन शैली ओजस्विनी भाषा में है और यह कहना अत्युक्ति न होगा कि साधारण से साधारण मारवाड़ी भाषी गृहस्थ इन्हें पढ़ कर इनको न्याय से स्वामीजी के मत का पक्षपाती हो जाता है।

(३) व (४) ग्रन्थ प्रतिपाद्य विषय व ग्रन्थ पठन का फल ऊपर में कहा जा चुका है कि ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय सत्य शास्त्रोक्त जैन धर्म के रहस्य का परिचय कराना है। कुछ जैन मत के अन्य सम्प्रदाय वाले सावद्य अनुष्ठानों को निरवद्य बताते हैं, सांसारिक दया—जो स्नेह, राग, ममत्व मात्र है उसे पारलौकिक साधन बताते हैं। उनका यह कथन जैन शास्त्रों के आधार पर नहीं, जैन शास्त्रों का कथन क्या है—न्याय व तर्क के सहारे, सच्चा रास्ता कौन सा है, वह दिखाना स्वामीजी के ग्रन्थों का मुख्य उद्देश्य है। ग्रन्थ पठन से भ्रान्त मानव सच्चे मार्ग का आदर करेंगे यही फल है। सांसारिक मार्ग व मुक्ति मार्ग में कितना पार्थक्य है यह सब बात इस ग्रन्थ के पठन से मालूम होगा। साधुओं

का आचार व जीवन यापन प्रणाली कितनी कठिन है। शिथिलाचारी साधुओं की पहिचान कराना इस ग्रन्थ का उद्देश्य है और इसके पठन से व मनन से, इसके न्याय व युक्ति को हृदयङ्गम करने से सत्यासत्य मार्ग का ज्ञान होगा। मिथ्यात्व से सम्यक्त्व के रास्ते में आना सहज होगा।

इस ग्रन्थ का मुद्रन व्यय सूरत के प्रसिद्ध जौहरी मगन भाई नागिन भाई ने प्रदान किया है इसलिये उन्हें धन्यवाद है।

२८, ग्रांड रोड,
भाद्र कृष्ण ८ सं० १९८८

छोगमल चोपड़ा।
अ० मंत्री—जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा।

॥ वन्दे जिनवरम् ॥

॥ अनुकम्पा ॥

॥ दोहा ॥

अनुकम्पा ने आदरी, कीज्यो घणा जतन ।
जिनवरना धर्म मांहिलो, समकित पाय रतन ॥ १ ॥
गाय भैंस आक थोरनो, ये चारूं ही दूध ।
ज्यूं अनुकम्पा जाणज्यो, मन में आणी शुद्ध ॥ २ ॥
आक दूध पीधां थकां, जुदा हुवै जीव काय ।
ज्यूं सावद्य अनुकम्पा कियां, पाप कर्म बंधाय ॥ ३ ॥
भोले ही मत भूलज्यो, अनुकम्पा रे नाम ।
कीज्यो अन्तर पारिखा, ज्यूं सीझै आतम काम ॥ ४ ॥
अनुकम्पा ने आगन्या, तीर्थङ्कर नी होय ।
सावद्य निरवद्य ओलखे, ते तो विरला जोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहली ॥

धिक् धिक् छै नागश्री ब्राह्मणीने (एदेशी)

मेघ कुमर हाथीरा भवमें, श्रीजिन भाषी दया दिल आणी । ऊंचो पग राख्यो सुसलो न मार्यो, आकरणी श्रीवीर वखाणी ॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा

में ॥ १ ॥ कष्ट सह्यो तिण पापसूं डरते, मन दृढ मेंठी राखी तिण काया। बलता जीव दावानल देखी, सूंडस्यूं ग्रही ग्रही बाहिर न लाया ॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में ॥ २ ॥ परत संसार कियो तिण ठामें, उपन्यो श्रेणिक रे घर आई। भगवन्त आगल दीक्षा लीधी, पहिला अध्ययन गिनाता मांई ॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में ॥ ३ ॥ मांडलो एक योजननो कीधो, घणा जीव बचिया तिहां आई। तिण बचियांरो धर्म न चाल्यो, समकित आयां विना समझ न काई ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ४ ॥ नेम कुमर परणीजण चाल्या, पशु पंखी देख दया दिल आणी। इसड़ो काम सिरे नहीं मुझने, म्हारे काज मरे बहु प्राणी ॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में ॥ ५ ॥ परणीजण सूं परिणाम फिरिया, राजमती ने ऊभी छिटकाई। कर्म तणे बन्धसूं नेम डरिया, तोड़ी आठ भवांरी सगाई ॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में ॥ ६ ॥ आपसूं मरता जीव जाणिने, कड़वा तूंबारो कीधो आहारो। कीड़ि-यांरी अनुकम्पा आणी, धन्य धन्य धर्म रुची अण-गारो ॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में ॥ ७ ॥ फोरवी लब्धि अनुकम्पा आणी, गोशालाने वीर बचायो। छः लेश्या छद्मस्थज हूंता, मोह कर्म वश रागज आयो ॥

आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ८ ॥ गोशालो असंयती कुपात्र, तिणने साक्ष शरीरनो दीधो। धर्म जाणता तो जगत दुखी थो, वलि वीर ओ काम कदे नहीं कीधो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ९ ॥ तेजु लेश्या मेली गोशाले बाल्या. दोय साध भस्म करी काया। लब्ध धारी साधु हुंता घणाई, मोटा पुरुष त्यांने क्यों न बचाया ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो॥ १० ॥ जिन ऋषि ए अनुकम्पा कीधी, रैणादेवी स्हामो तिण जोयो। सेलख यक्ष हेठो उतारयो, देवी आय तिण खड्ग में पोयो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ११ ॥ भगता हिरण गवेषीरी सुलसां, अनुकम्पा आणी बिलखी जाणी। छः बेटा देवकीरा जाया, सुलसां रे घर मेल्या आणी ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १२ ॥ यक्ष रे पाड़े हरकेशी आया, अशनादिक त्यांने नहीं दीधा। यक्ष देवता अनुकम्पा कीधी, रुधिर वमन्ता ब्राह्मण कीधा ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १३ ॥ मेघ कुमर गर्भ मांहीं हूंता, सुखरे तांई किया अनेक उपायो। धारणी राणी अनुकम्पा आणी, मन गमता अशनादिक खायो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १४॥ कृष्णजी नेम वन्दन मे जाता, एक पुरुष ने दुखियो जाणो। साझ दियो अनुकम्पा कीधी, एक ईंट उठाय

उणरे घरे आणी ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥१५॥ दुखिया दीरा दरिद्री देखी, अनुकंपा उणरी कुण आणी। गाजर मूलादिक सचित्त खुवावै, वले पावै काचो अणगल पाणी॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥१६॥ आप सूं मरता जीव जाणी ने, टल जाय साध सकोची काया। आप हणै नहीं पाप सूं डरता, अनुकंपा आण मेलै नहिं छाया॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो॥ १७॥ ऊपाड़ी जो मेलै छाया, तो असंयती री वियावच्च लागै। आ अनुकंपा साधु करै तो, त्यांरा पांचू ही महाव्रत भागै॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो॥ १८॥ सौ साधु विषम काले उनाले, पाणी विना जुदा हुवे जीव काया। अनुकंपा आणी अशुद्ध वहिरावे, छः काया रा पीहर साधु वचाया॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥१६॥ गजसुकुमाल ले नेम री आज्ञा, काउसग कियो मसाण में जाई। सोमल आय खीरा शिर ठविया, शीश न धूणयो दया दिल आई॥ आ अनुकंपा जिन आज्ञा में ॥ २०॥ अभय कुमार रो मन्त्री देवता, तिण अभय कुमार री अनुकम्पा आणी। धारणी राणी रो डोहलो पूरयो, अकाले वर्षा कर वर्षायो पाणी॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो॥ २१॥ साधु विना अनेरा सर्व जीवां री, अनुकंपा आणी साधु बांधे बंधावे। तिणने निशीथ

है बारहवें उद्देशे, साधुने चौमासो प्रायश्चित आवे ॥
आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २२ ॥ रासड़ी आदिक
जीव सूत सूं बंध्या छै, ते तो भूख तृषादिक अत्यन्त
दुःख पावे। अनुकंपा आणी ने त्यांने छुड़ावे, तिण ने
चौमासो प्रायश्चित आवे॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो
॥ २३ ॥ व्याधि अनेक कोढादिक सुणने, तिण ऊपर
वैद चलाई ने आवे। अनुकम्पा आणी साजो कीधो,
गोली चूर्ण दे रोग गमावे॥ आ अनुकम्पा सावद्य
जाणो ॥ २४ ॥ लब्धधारी रा खेलादिक थी, सोलह ही
रोग शरीर सूं जावे। वले साध जाणे ओ रोग सूं
मरसी, अनुकंपा आणी नहीं रोग गंवावे॥ आ अनुकंपा
सावद्य जाणो ॥ २५ ॥ जो अनुकंपा साधु करे तो,
उपदेश दे वैराग्य चढावे। चोखे चित्त पेखो हाथ जोड़े
तो, चारूं ही आहार रा त्याग करावे॥ आ अनुकंपा
जिन आज्ञा में ॥ २६ ॥ गृहस्थ भूलो ऊजड़ बन में,
अटवी ने वले उजड़ जावे। अनुकंपा आणी साधु मार्ग
बतावे, तो चार महीनां रो चारित जावे॥ आ अनु-
कंपा सावद्य जाणो ॥ २७ ॥ अटवी में अत्यन्त दुखिया
देखी, चारूं ही शरणा साधु धरावे। मार्ग पूछे तो
मौन जु साधे, बोले तो भिन्न भिन्न धर्म सुणावे॥ आ
अनुकंपा जिन आज्ञा में ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

अनुकम्पा यह लोक नी, कर्म तणो बंध होय।
ज्ञान दर्शन चारित्र तप बिना, धर्म म जाणो कोय ॥१॥
जे अनुकम्पा साधु करै तो, नवा न बन्धे कर्म।
तिण मांहली श्रावक करै तो, तिणनै पिण होसी धर्म ॥२॥
साधु श्रावक दोनां तणी, एक अनुकम्पा जाण।
अमृत सहुनै सारखो, तिणरी म करो ताण ॥३॥
वली अनुकम्पा साधु नै, सूत्र री दे साख।
चित्त लगाई साम्भलो, श्रीवीर गया छै भाख ॥४॥

॥ ढाल दूसरी ॥

हांवे साम्भलज्यो नरनार (देशी)

डाभ मुञ्जादिक नी डोरी, बंधिया करै हिला नै गोरी। शीत ताप करीने दुखिया, साता वांछे जाणै हुवां सुखिया ॥ १ ॥ त्यांरी अनुकम्पा आणै, छोड़ै छुड़ावै भला जाणै। तिणने चौमासी प्रायश्चित आवै, धर्म जाणै तो समकित जावै ॥ २ ॥ इम बांधै बंधावै हुवै राजी, ज्यांरो संयम जावै भाजी। ए तो सावद्य कारज जाणो, त्यांरा साध किया पच्चक्खाणो ॥ ३ ॥ जीवणो मरणो नहीं चावै, साधु क्यांने बंधावै छुड़ावै। त्यांरी लागी मुक्ति सूं ताली, तिका किणरी करै रख-

वालो ॥ ४ ॥ गृहस्थरै लागी लायो घर बारै, निक-
लियो न जायो। वलता जीव बिलबिल बोलै, साधु
जाय किंवाड़ न खोलै ॥ ५ ॥ द्रव्ये भावे लाय लागी,
जिणमें कोईक हुवे वैरागी। उणरी अनुकम्पा आवे;
उपदेश देई समझावे ॥ ६ ॥ जन्म मरण री लाय थी
काढै, उणरो काम सिराड़े चाढै। पकड़ावे ज्ञानादिक
डोरी, तिणथी कर्म आठूं दे तोरी ॥ ७ ॥ अनुकम्पा
कियां दण्ड आवे, परमार्थ बिरला पावै। निशीथ रो
वारमो उद्देशो, जिन भाख्यो दया रो रेसो ॥ ८ ॥
छोड़े साध कहे सूत्र में चाल्यो, ओ तो अर्थ अणहुन्तो
घाल्यो। भोलां ने कुगुरां बहकाया, कूड़ा कूड़ा अर्थ
लगाया ॥ ९ ॥ सिंह बाघादिक बनचारी, हिंसक जीव
देखे आचारी। उणने मार कह्यां हिंसा लागे, पहिलो
होज महाव्रत भागे ॥१०॥ मत मार कहे उणरो रागी,
तीजे करण हिंसा लागी। सूयगडांग छे तिणरो साखी,
श्रीवीर गया छे भाखी ॥ ११ ॥ गृहस्थ रो शरीर ममता
में, साधु बैठा समता में। रक्षा धर्म शुक्ल ध्यान ध्याई,
मुवा गया फिकर नहीं काई ॥ १२ ॥ इह लोगा ने
परलोगा, जीवणो मरणो काम भोगा। ए तो पांचूं ही
छे अतिचारो, वंछ्यां नहीं धर्म लिगारो ॥ १३ ॥ आपणो
बंछे तो हो पापो, पर नो कुण घाले सन्तापो। मरणो

जीवणो वंछै अज्ञानी, सम भाव राखै ते सुज्ञानी ॥१४॥
वायरो वर्षा शीत तापो, रह्यो न रह्यो चावै तो पापो।
राग विरोध रहित ते सुख्यालो, उपद्रव जावै तत्कालो
॥ १५ ॥ सात बोलां रो यह विस्तारो, ते ए ओलखिया
अणगारो। घट मांहे जो समता आवै, हुवो न हुवो
पकौ नहीं चावै ॥ १६ ॥ एकण रे देई चपेटी, एकण
रो उपद्रव मेटी। ए तो राग द्वेष रो चालो, दशवैका-
लिक सम्भालो ॥ १७ ॥ साधु बैठा नाव मांय आई,
नावड़िये नाव चलाई। नाव फूटी मांहे आवै पाणी,
साधु देखी लोगां नहीं जाणी ॥ १८ ॥ आप डूबै अनेरा
प्राणी, अनुकम्पा किण री नहीं आणी। बतावै तो
व्रता में भङ्ग, जिण रो साखो आचाराङ्ग ॥१९॥ सानी
कर साध बतावै, लोग कुशले खेमे घर आवै। डूबां
पण साध न चावै, रह्या चावै तो तुरत बतावै ॥ २० ॥
मौन साध रह्या ते सन्तो, ते करै संसार नो अन्तो।
परिणामज राखै सेंठा, धर्म ध्यान में रह्या बैठा ॥२१॥

॥ दोहा ॥

वांछै मरणो जीवणो, तो धर्म तणो नहीं अंश।
ए अनुकम्पा कीधां थकां, वधै कर्म नो वंश ॥ १ ॥
मोह अनुकम्पा जो करै, तिणमें राग ने द्वेष।
सोग वधै इन्द्रियां तणो, अन्तर ऊंडो देख ॥ २ ॥

दया अनुकम्पा आदरी, तिण आतम आणी ठाय ।
मरता देखो जगत ने, सोच फिकर नहिं काय ॥ ३ ॥
कष्ट सह्या घर में थका, पाल्या व्रत रसाल ।
मोह अनुकंपा श्रावकां, त्यां पण दीधी टाल ॥ ४ ॥
काचा था ते चल गया, हो गया चकना चूर ।
सेंठा रह्या चलिया नहीं, त्यांने वीर वखाण्या शूर ॥५॥

॥ ढाल तीसरी ॥

जीव मारे ते धर्म आछो नहीं (एदेशी)

चम्पा नगरी ना वाणिया, जहाज भरी समुद्र में जाय रे । हिवे तिण अवसर एक देवता, त्यांने उपसर्ग दीधो आय रे ॥ जीव मोह अनुकम्पा न आणिये ॥१ ॥ मिनका रयाल कांधे बेसाणिया, गले पहरी छे रुण्ड-मालरे । लोही राधसूं लीप्यो शरीरने, हाथे खड्ग दीसै विकराल रे ॥ जीव० ॥ २ ॥ लोक धड़ धड़ लाग्या धूजवा, डर देव रह्या मन ध्याय रे । अरणक श्रावक डिगियो नहीं, तिण काउसग दीधो ठायरे ॥ जीव० ॥३॥ तिण सागारी अनसन कियो, धर्म ध्यान रह्यो चित ध्यायरे । सगलांने जाण्या डूबता, मोह करुणा न आणी काय रे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ अरणक श्रावकने डिगायवा, देव बद बद बोले वायरे । जो तूं अरणक धर्म न छोड़सी,

थारी जहाज डुबोऊं जल मांयरे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ ऊंची उपाड़ नीची न्हांखने, करस्यूँ सगलांरी घात रे। काली पीली अमावसरा जणा, मान रे तूं अरणक वातरे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन म्हारा व्रत ने, दुणरो कीधो विघ्न न थायरे। हूं तो सेवक छूं भगवानरो, मोने न सके देव डिगायरे ॥ जीव० ॥ ७ ॥ लोक विल विल करता देखने, अरणकरो न विगड्यो नूररे। मोह करुणा न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूररे ॥ जीव० ॥८॥ देव धन्य धन्य अरणक ने कहै, तूं तो जीवादिकनो जाणरे। सुधर्मी सभा मध्ये तांहिरा, इन्द्र कीधा घणा वखाणरे ॥ जीव० ॥ ९ ॥ अरणक श्रावकना गुण देखने, ए तो आया देवरी दायरे। दोय कुण्डलरी जोड़ी आपने, देव आयो जिण दिशि जायरे ॥ जीव० ॥ १० ॥ नमिराय ऋषि चारित्र लियो, तेतो वागमें उतरया आय रे। इन्द्र आयो तिण ने परखवा, ते तो किण विध बोलै वाय रे ॥ जीव० ॥ ११ ॥ थारी अग्नि करी मिथिला वलै, एकरसां म्हामो जोय रे। अन्तेवर वलता मेलसी, आतो वात सिरै नहिं तोय रे ॥ जीव० ॥ १२ ॥ सुख वपरायो सारा लोक में, विलखा देखे पुतरत्न रे। जो तूं दया पालणने उठियो, तो तूं करै नी यांरा यत्न रे ॥ जीव० ॥ १३ ॥ नमि कहै वसूँ जीउं सुखे, म्हारी

पल मल सफलो जात रे । ए तो मिथिला नगरी दाझ्क तां, म्हारो बलै नहीं तिल मात रे ॥ जीव० ॥ १४ ॥ म्हारे हर्ष नहीं मिथिला रह्यां, बलियां नहिं शोग लिगार रे । मैं तो सावद्य जाणी त्यागी तिका, रह्यो बलो न चावै अणगार रे ॥ जीव० ॥ १५ ॥ नमिराय ऋषि आणो नहीं, मोह अनुकम्पारी बात रे । समभाव राखो मुगते गया, करो आठ कर्मा री घात रे ॥ जीव० ॥ १६ ॥ ए तो केशव केरो बन्धवो, ए तो नामे गज-सुकुमाल रे । तिण दीचा लेई काउसग कियो, सोमल आयो तिण काल रे ॥ जीव० ॥ १७ ॥ माथे पाल बाधी माटी तणी, मांहि घाल्या लाल अंगार रे । कष्ट सह्यो वेदना अति घणी, नेम करुणा न आणी लिगार रे ॥ जीव० ॥ १८ ॥ श्रीनेम जिनेश्वर जाणता, होसी गज सुकुमालरी घात रे । पहिलां अनुकम्पा आणी नहीं, और साधु न मेल्या साथ रे ॥ जीव० ॥ १९ ॥ श्रीवीर जिनेन्द्र चौबीसवां, जिण कल्पी मोटा अणगार रे । ज्यांने देव मनुष्य तिर्यञ्चना, उपसर्ग उपना अपार रे ॥ जीव० ॥ २० सङ्गम देवता भगवान् ने, दुःख दीधा अनेक प्रकार रे । अनार्य लोकां श्रीवीर रे, श्वानादिक दीधा लार रे ॥ जीव० ॥ २१ ॥ चौसठ इन्द्र महोत्सव आविया, दीचा रे दिन्न भेला होय रे । पिण कष्ट पड्यो

श्रीवीर में, न आया उपसर्ग टालण कोय रे ॥ जीव० ॥ २२ ॥ दुःख देता देखी भगवान ने, देव अलगा न कीधा आय रे। समदृष्टि देव हुंता घणा, पिण किण ही न कीधी सहाय रे ॥ जीव० ॥ २३ ॥ देवां जाण्यो श्रीवर्द्ध-मान रे, उदय आया दीसे छै कर्म रे। अनुकम्पा आणी बीच में पड्यां, ओतो जिन भाख्यो नहिं धर्म रे॥ जीव० ॥२४॥ धर्म हुंतो तो आघो न काढता, वले वीर ने दुखिया जाण रे। परीषह देवण आया तेह ने, देव अलगा करता ताण रे ॥ जीव० ॥ २५ ॥ आतो मच्छ गलागल मंड रहि, सारा द्वीप समुद्रां मांय रे। भगवन्त कहता जो इन्द्र ने, तो थोड़ा में देता मिटाय रे ॥ जीव० ॥ २६ ॥ पड़ती जाणी अन्तराय तो, अचित खवाड़त पूर रे। एहवी शक्ति घणी छै इन्द्रनी, तिणथी कर्म न हुवे दूर रे ॥ जीव० ॥ २७ ॥ चूलणी पिया ने पोसा मध्ये, देव दीधो छै दुःख आय रे। कुण कुण हवाल तिण में किया, ते साम्भलज्यो चित्त लाय रे ॥ जीव० ॥ २८ ॥ तीन बेटांरा नव शूला किया, तिण रे मुंहडा आगे ल्याय रे। तेल उकालने मांहि तल्यां, बलबलत्तांसूं छांटी काय रे ॥ जीव० ॥ २९ ॥ सम परि-णामा वेदना खमी, जाण्या आपरा संच्या कर्म रे। करुणा न आणी अङ्ग जात री, तिण छोड्यो नहीं जिन

धर्म रे ॥ जीव० ॥ ३० ॥ मति मारणरो कह्यो नहीं, ते तो सावद्य जाणी बाय रे। करुणा न आणी मरता देख नै, सेंठो रह्यो धर्म ध्यान मांय रे ॥ जीव ॥ ३१ ॥ देव कहै तूं धर्म न छोड़सी थांरे देव गुरु सम छै माय रे। तिण नै मारूं विध आगली, थारे मुंहडा आगै ल्याय रे ॥ जीव० ॥ ३२ ॥ जब तूं आर्त्त ध्यान ध्याय ने पड़सी माठी गति में जाय रे। इम सुणने चुलणी पिया चल यगो, मानें राखणरो करै उपाय रे ॥ जीव० ॥३३॥ ओ तो पुरुष अनार्य्य कहै जिसो, झाल राखूं ज्यूं न करै घात रे। ओतो भद्रा बचावण उठियो, इणरे थाम्भो आयो हाथ रे ॥ जीव० ॥ ३४ ॥ अनुकम्पा आणी जननी तणी, तो भाग्या व्रत ने नेमरे। देखो मोह अनुकम्पा एहवी, तिण में धर्म कहीजै कीम रे ॥ जीव० ॥ ३५ ॥ चुलणी पिया नै सूरा देवना, चूल शतक नै शकडाल रे। यां च्यारांरा मारा डीकरा, देव तलिया तेल उकाल रे ॥ जीव० ॥ ३६ ॥ जब बेटा ने मरता देखने, न आणी मोह अनुकम्पा एम रे। उठ्यो मात पियादिक राखवा, तो भाग्या व्रत नै नेम रे ॥ जीव० ॥ ३७ ॥ मात पियादिक नै राखतां भागा वरतने बंधिया कर्म रे। तो साध जाय बिच में पड्यां त्यांने किण विध होसी धर्म रे ॥ जीव० ॥ ३८

चेड़ा ने कोणिक नी वारता, निरयावलिका भग-वती साख रे। मानव मुआ दोय संग्राम में, एक क्रोड़ ने अस्सी लाख रे ॥ जीव० ॥ ३९ ॥ भगवन्त अनुकम्पा आणी नहीं, पोते न गया न मेल्या साध रे। यांने पहिलां पिण वरज्या नहीं, ते तो जीवां री जाणी विराध रे ॥ जीव० ॥ ४० ॥ एमां दया अनु-कम्पा जाणता, तो वीर विचाले जाय रे। सगलां ने साता उपजावता. ए तो थोड़े में देता मिटाय रे ॥ जीव० ॥ ४१ ॥ कोणिक भक्त भगवान रो, चेड़ो बारह व्रत धार रे। इन्द्र भीड़ आयो ते समकिती. ते किण विध लोपता कार रे ॥ जीव० ॥ ४२ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र मांहिलो, किण रे वधतो जाणै उपाय रे। करै अनुकम्पा भव जीव री, वीर विगर बुलायां जाय रे ॥ जीव० ॥ ४३ ॥ समद् पाल सुखा में झिल रह्यो, संसार विषय सुख लाग रे। तिण चोर ने मरतो देखने, उपनो उत्कृष्ट परम वैराग्य रे ॥ जीव० ॥ ४४ ॥ चारित्र लियो कर्म काटवा, जाणी मोक्ष तणो उपाय रे। करुणा न आणी चोर री, छुड़ावण रो न काढ़ो वाय रे ॥ जीव० ॥ ४५ ॥ साध श्रावक नी एक रीत छे, तुमे जोवो सूत्र रो न्याय रे। देखो अन्तर मांहि विचारने, कूड़ो कांय करो वकवाय रे ॥ जीव० ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

दुखिया देखी तावड़े, जो नहीं मेलै छांय।
साध श्रावक न गिणे तेहने, ए अन्यतीर्थी नी वाय ॥१॥
मार्‍यां मरायां भलो जाणियां. तीनूं ही करणा पाप।
देखण वाला ने कहै, खोटो कुगुरु सन्ताप ॥२॥
कर्मा करने जीवड़ा, उपजे नै मर जाय।
असंयम जीतब तेहनो, साधु न करै उपाय ॥३॥
देख मांहो मांही विणशतां, अलगा करदे जाय।
एम कहै तिण ऊपरै, साधु बतावे न्याय ॥४॥

॥ ढाल चौथी ॥

श्रीजिन धर्म जिन आज्ञा तिहाँ (एदेशी)

नाडो भरियो हो डेडक माछलां, मांही नीलण फूलण रो पूर हो। भविकजन, लट पुहरा आदि जलोक सूं, त्रस स्थावर भरियो अपूर हो। भविक जन, करज्यो पारिखा जिन धर्म री ॥१॥ सुलिया धान तणा ढिगला पड़्या, मांहि लटां ने इल्यां अथाह हो॥ भ०॥ सुल-सुलिया ईंयडा अति घणा, ते तो टलवल करै तिण मांह हो॥ भ० क०॥ २॥ गाडो भरियो जमीकन्द सूं तिण में जीव घणा छै अनन्त हो॥ भ०॥ च्यार पर्याय च्यार प्राण हैं, मार्‍यां कष्ट कह्यो भगवन्त हो॥ भ० क०

॥ ३ ॥ काचा पाणी तणा माटा भस्या, घणा जीव छै अणगल नीर हो ॥ भ० ॥ नीलण फूलण आदि लटां घणी, तिणमें अनन्त वताया वीर हो ॥ भ० क० ॥ ४ ॥ खात भीनी उकरड़ी लटां घणी, गिंडोला ने गधैया जाण हो ॥ भ० ॥ टरवल टरवल कर रह्या, यांने कर्मां न्हाख्या आण हो ॥ भ० क० ॥ ५ ॥ कोईक जांगां में उन्दर घणा, फिरै, आमां ने स्हामां अथाग हो ॥ भ० ॥ थोड़ो सो खड़को सांभलै. तो जाय दिशों दिशि भाग हो ॥ भ० क० ॥ ६ ॥ गुड़ खांड़ आदि मिष्टान्न में, जीव चिहुँदिशि दोड्या जाय हो ॥ भ० ॥ माखी ने मांका फिर रह्या, ते तो हुवको करै मांहो मांय हो ॥ भ० क० ॥ ७ ॥ नाडो देखि ने आवै भैंसिया, धान टूका है वकरा आय हो ॥ भ० ॥ गाडै आया वलद पाधरा, माटै आय उभी छै गाय हो ॥ भ० क० ॥ ८ ॥ पंखी चुगै उकरड़ी ऊपरै, उन्दर पासे मिनकी जाय हो ॥ भ० ॥ माखी ने माको पकड़ ले. साधु किण ने वंचावै छुड़ाय हो ॥ भ० क० ॥ ६ ॥ भैंस्यां हांकल्यां नाडा मांहली, तो सगलां रे साता थाय हो ॥ भ० ॥ वकरा ने अलगा कियां थकां, ईण्डादिक जीव बच जाय हो ॥ भ० क० ॥१०॥ थोड़ा सा वलदां ने हांकलै तो न मरै अनन्तो काय हो ॥ भ० ॥ पाणी पुहरादिक

किण विध न मरै, जो नेड़ो न श्राण दे गाय हो ॥ भ० क० ॥ ११ ॥ लट गिराडोलादिक कुशले रहै, जो ते पंखी ने देवे उड़ाय हो। भ० ॥ मिन को धकाल उन्दर बचायले, तो उन्दर घर शोक न थाय हो। भ० क० ॥ १२ ॥ घोड़ोसो माको आगो पाछो कियां, माखी नाठी उडजाय हो। भ० ॥ साधां रे सगला सारखा, ते न पड़े बीच में जाय हो। भ० क० ॥ १३ ॥ मिनकी धकाल उन्दर बचायले, माखी राखै मांका नै धिकाय हो। भ० ॥ और मरता देख राखे नहीं, यामें चूक पड़ी ते बताय हो। भ० क० ॥ १४ ॥ साधु पीयर बाजै छःकायरा, एक छुड़ावै तसकाय हो। भ० ॥ पांच काय मरती देख राखै नहीं, ते पीयर किण विधि थाय हो। भ० क० ॥ १५ ॥ रजोहरणो लेइ ने उठिया, जोरी दावै देवै छुड़ाय हो। भ० ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप मांहिलो, यांरे बधियो ते मोय बताय हो। भ० क० ॥ १६ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप बिना, और मुक्ति रो नहीं है उपाय हो। भ० ॥ छोडामेला उपकार संसार ना, तेथी सिद्ध गति किम विध थाय हो। भ० क० ॥ १७ ॥ जितरा उपकार संसार रा, ते तो सगला ही सावद्य जाण हो। भ० ॥ श्रीजिनधर्म मांही आवे नहीं, ते कूड़ो म करो ताण हो। भ० क० ॥ १८ ॥

अज्ञानी रो ज्ञानी कियां थकां, हुवे निश्चय पेला रो उद्धार हो । भ० ॥ कीधो मिथ्याती रो समकिती, ते तो उतार्‍यो भव पार हो । भ० क० ॥ १६ ॥ कीधो असंयती रो संयती, ते तो मुक्ति रा दलाल हो ॥ भ० ॥ तपस्या कर पार उतारियो, ते मेट्या सर्व जंजाल हो ॥ भ० क० ॥ २० ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप तणो, करै कोई उपकार हो ॥ भ० ॥ आप तिरै पेलो उद्धरै, दोनां रो खेवो पार हो ॥ भ० क० ॥ २१ ॥ ये चार उपकार छै मोटका, तिण में निश्चय जाणो धर्म हो ॥ भ० ॥ शेष रह्या काम संसार रा, तिण थी बंधता जाणो कर्म हो ॥ भ० क० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

जीव दया रै ऊपरै, सूलगा तीन दृष्टान्त ।
आगै विस्तार करै जितो, ते सुणज्यो मन कर खन्त ॥१॥

॥ ढाल पांचवीं ॥

सहेल्यां हे वन्दो रूड़ा साधु ने (एदेशी)

एक चोर चोरै धन पारको, चोरावे हो ते तो दूजो आगेवाण । तीजो कोई करै अनुमोदना, यां तीनां रा हो खोटा कर्त्तव्य जाण ॥ भव जीवां तुमे जिन धर्म ओलखो ॥ १ ॥ एक जीव हणै त्रस काय ना, हणावे हो

दूजो पर ना प्राण। तीजो पिण भलो जाणै मारियां, ये तीनूं ही हो जीव हिन्सक जाण॥ भ०॥ २॥ एक कुशील सेवे हर्ष्यौ थको, सेवावे हो ते तो दूजो करण जोय। तीजो पिण भलो जाणै सेवियां, यां तीनां रै हो कर्म तणो बन्ध होय॥ भ०॥ ३॥ यां सगलांई ने सत गुरु मिल्या, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय। हिवे किण २ जीवां ने साधां उद्धस्या, तिण रो सुणज्यो हो विवरा सुध न्याय॥ भ०॥ ४॥ चोर हिंसक ने कुशी-लिया, यांरे ताईं हो साधां दियो उपदेश। त्यांने सावद्य रा निर्वद्य किया, एहवो छै हो जिन दया धर्म रेस॥ भ०॥ ५॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप तणो, साधां कीधो हो तिण थी उपकार। ए तो तरणतारण हुवा तेहना, उतास्या हो त्यांने संसार थी पार॥ भ०॥ ६॥ चोर तीनूं ही समझयां थकां, धन रह्यो हो धणी रो कुशले क्षेम। हिंसक तीनूं ही प्रतिबोधिया, जीव बचिया हो किया मारण रा नेम॥ भ०॥ ७॥ जे शील आद-रियो तेहनी, स्त्री हो पड़ी कूवा मांही जाय। यां रो पाप धर्म नहीं साधु ने, रह्या सूवा हो तीनूं अव्रत मांय॥ भ०॥ ८॥ धन रो धणी राजी हुवो धन रह्यो, जीव बचिया हो ते पिण हर्षित थाय। साधु तिरण तारण नहीं तेहना, नारी ने हो नहीं डुबोई आय॥ भ०॥६॥

केई मूढ मिथ्याती इम कहे, जीव वचिया हो धन रह्यो तिण रो धर्म। तो उण रो श्रद्धा रे लेखे, स्त्री मुई हो तिण रा लाग्या पाप कर्म ॥ भ० ॥ १० ॥ जीव जीवै ते दया नहीं, मरै ते तो हो हिन्सा मति जाण। मारणवाला ने हिन्सा कही, नहीं मारै हो ते तो दया गुण खाण ॥ भ० ॥ ११ ॥ सर द्रह तालाव फोड़ण तणा, सूंस लेई हो मेट्या आवता कर्म। सर द्रह तालाव भख्या रह्या, तिण मांहि हो नहीं जिनजी रो धर्म ॥ भ० ॥ १२ ॥ नीरव आमादिक वृक्ष ना, किण ही कीधा हो वाढ़ण रा नेम। तो अव्रत घटी तिण जीव रे, वृक्ष ऊभा रह्या हो तिण रो धर्म केम ॥ भ० ॥ १३ ॥ लाडू घेवर आदि पकवान ने, खावा छोड्या हो आत्म आणी तिण ठाय। तो वैराग्य वध्यो उंण जीव रे, लाडू रह्या हो तिण रो धर्म न थाय ॥ भ० ॥ १४ ॥ दव देवो गांव जलाइवो, इत्यादिक हो सावद्य कार्य अनेक। साधु सर्व छुड़ावे समझाय ने, सगलां री हो विधि जाणो तुमे एक ॥ भ० ॥ १५ ॥ केईक अज्ञानी इम कहै, छ: काय काजे हो देवां छां उपदेश। एकण जीव ने समझावियां, मिट जावे हो घणा जीवां रा कलेश ॥ भ० ॥ १६ ॥ छ: काय घरे साता हुवे, एहवो भाषे हो अन्यतीर्थी धर्म। त्यां भेद न पायो जिन धर्म रो, ते तो भूला हो

उदै आया अशुभ कर्म ॥ भ० ॥ १७ ॥ हिवे साधु कहै तुमे साम्भलो छः काया रे हो साता किण विध थाय। शुभाशुभ बांध्या तै भोगवे, नहीं पाम्यो हो त्यां मुगत उपाय ॥ भ० ॥ १८ ॥ हणवा सूँस किया छः काय ना, तिणरै टलिया हो मैला अशुभ कर्म पाप। ज्ञानी जाणै साता हुई तेहने, मिट गया हो जन्म मरण सन्ताप ॥ भ० ॥ १९ ॥ साधु तिरण तारण हुवा तेहना, सिद्ध गति में हो मेल्या अविचल ठाम। छः काय लारै झिलती रही, नहीं सीझ्या हो त्यांरा आत्म काम ॥ भ० ॥ २० ॥ आगे अरिहन्त अनन्ता हुवा, कहितां कहितां हो नहीं आवे त्यांरो पार। ते आप तिरया और तारिया, छः काया रे हो साता न हुई लिगार ॥ भ० ॥ २१ ॥ एक मोते बच्यो मरवा थको, दूजो कीधो हो तिण रो जीवण रो उपाय। तीनो पिण भलो जाणे जीवियां, यां तीनां में हो सिद्ध गति कुण जाय ॥ भ० ॥ २२ ॥ कुशले रह्यो तिण रै अव्रत घटी नहीं, तो दूजां ने हो तुमे जाणज्यो एम। भलो जाण्यो तिण रै व्रत न नीपनो, ये तीनूं ही हो सिद्ध गति जासी केम ॥ भ० ॥ २३ ॥ जीवियां जीवायां भलो जाणियां, ए तीनूँ ही हो करण सरीखा जाण। कोई चतुर होसी ते समझसी, अणसमझ्यां हो करसी ताणाताण ॥ भ०

॥ २४ ॥ छः काय रो वंधे मरणो जीवणो, ते तो रहसी हो संसार मझार। ज्ञान दर्शन चारित्र तप भलो, आदरियां हो आदरायां खेवो पार ॥ भ० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

पोते हणे हणावे नहीं, पर जीवांरा प्राण।
हणे तिणने भलो जाड़े नहीं, ये नवकोटी पचखाण ॥१॥
अभयदान दया कही, श्रीजिन आगम मांय।
तो पिण द्रव्य उठावियो, जैनी नाम धराय ॥ २ ॥
त्यां अभयदान नहिं ओलख्यो, दयारी खबर न काय।
भोला लोगां आगले, कूड़ा चोच लगाय ॥ ३ ॥
कहे साधु बचावे जीव ने, औरां ने कहे तूं बचाय।
भलो जाणे वचिया थकां, पिण पूछ्यां पलटे जाय ॥४॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

(चतुर नर छोड़ो कुगुरु नो संग—एदेशी)

इण साधां रे भेषसेंजी, बोले एहवी वाय। म्हे पीहर छां छः कायनाजी, जीव बचावा जाय। चतुर नर समझो ज्ञान विचार ॥ १ ॥ एहवी करे परूपणाजी, पिण बोले बंधन होय। पलट जाय पूछ्यां थकां, ते भोला ने खबर न कोय ॥ च० ॥ २ ॥ पेट दुखे सौ श्रावकांजी, जुदा हुवे जीव काय। साध आया तिण

अवसरेजी, हाथ फेरयां सुख थाय ॥ च० ॥ ३ ॥ साधु पधारया देखनेजी गृहस्थी बोल्या बाय। थे हाथ फेरो पेट ऊपरै, सौ श्रावक जीवां जाय ॥ च० ॥ ४ ॥ जद कहै हाथ न फेरणोजी, साधां ने कल्पै नांय। थे कहता जीव बचावणा, अब बोल ने बदलो कांय ॥ च० ॥ ५ ॥ गोशाला नें वीर बचावियोजी, तिण में कहो छों धर्म। सौ श्रावक नहीं बचावियां, ज्यांरी सरधा रो निकल्यो भ्रम ॥ च० ॥ ६ ॥ गोशालारै कारणै जी, लब्धि फोरी जगन्नाथ। सौ श्रावक मरता देखने, थे कांय न फेरो हाथ ॥ च० ॥ ७ ॥ धर्म कहो भगवन्त ने तो पोतै कांय छोड़ी रीत। सौ श्रावक नहीं बचावियां, त्यांरी कुण मानसी प्रतीत ॥ च० ॥ ८ ॥ गोशालाने बचावियां में, धर्म कहो साचात। सौ श्रावक मरता देख ने, थे कांय न फेरो हाथ ॥ च० ॥ ९ ॥ इम कह्यां जाब न ऊपजै, जब कूड़ो करै बकवाय। हिवे साध कहै तुमे सांभलोजी, गोशाला रो न्याय ॥ च० ॥ १० ॥ साधां ने लब्धि न फोड़णीजी, सूत्र भगवती मांय। पिण मोह कर्म वश राग थी, तिणसूं लियो गोशालो बचाय ॥च०॥११॥ छः लेश्या हूंती जद वीर में जी, हूंता आठू ही कर्म। छद्मस्थ चूक्या तिण समयजी, मूर्ख थापै धर्म ॥ च० ॥ १२ ॥ छद्मस्थ चूकपरो तिकोजी, मूंढै आणे बोल।

पिण निर्वद्य कीय म जाणज्योजी, अकल हियारी खोल ॥ च० ॥ १३ ॥ ज्यूं आनन्द श्रावक ने घरेजी, गौतम वोल्या कूर । पड़िया छद्मस्थ चूक में, शुद्ध हुय गया वीर हजूर ॥ च० ॥ १४ ॥ इम अवश उदय मोह आवियोजी, नहीं टाल सक्या जगन्नाथ । ए तो न्याय न जाणियोजी, ज्यांरे मांहे मूल मिथ्यात ॥ च० ॥ १५ ॥ गोशालाने नहीं वचावता, तो घटतो अच्छेरो एक । निश्चय होनहार टलै नहीं. थे समझो आण विवेक ॥ च० ॥ १६ ॥ गोशाले ने वचावियो तो, वधियो घणो मिथ्यात । लोहो ठाण कियो भगवन्त ने, वले दोय साधां री घात ॥ च० ॥ १७ ॥ गोशाले ने वचाविया में, धर्म जाणै जो स्वाम । दोय साध वंचावत अपणा, वले करता ओहिज काम ॥ च० ॥ १८ ॥ गोशाला ने वचावियां में, धर्म जाणै जिनराय । तो दोय साध न राख्या आपणा, ओ किण विध मिलसो न्याय ॥ च० ॥ १९ ॥ जगत मे मरता देखनेजी, आडा न दीधा हाथ । धर्म हुंतो तो आघो न काढ़ता, ए तो तरणतारण जगन्नाथ ॥ च० ॥ २० ॥ एहवो विवरो शुद्ध वतावियोजी, सूत्र भगवती मांय । कोई कुबुद्धि करे कदाग्रहोजी, सुबुद्धि रे आवे दाय ॥ च० ॥ २१ ॥ कहे साधां रे मुख आगले, पंखी पड़ियो मालाथी आय । तो मेलां

ठिकाणै हाथसूं, म्हारै दया रहै घट मांय ॥ च० ॥२२॥ तपसी श्रावक उपासरै जी, काउसग दीधो ठाय । त्यांमें मृगी आय ने ढह पड्योजी, गावर भांजी जीव जाय ॥ च० ॥ २३ ॥ कोई गृहस्थ आय ने इम कहैजी, थे मोटा छो मुनिराज । बैठो न कीधो एह ने, ओ मरै छै गावर भांज ॥ च० ॥ २४ ॥ जद तो कहै म्हे साधकांजी, श्रावक बैठो करां कीम । म्हारे काम कांई गृहस्थसूंजी बोलै पाधरा एम ॥ च० ॥ २५ ॥ श्रावक बैठो करै नहीं, पंखो मेलै माला रे मांय । देखो पूरो अन्धेरो एहवो अे चौड़े भूला जाय ॥ च० ॥ २६ ॥ पंखो माला मांहि मेलतांजी, शकै नहीं मन मांय । श्रावक ने बैठो कियां में, धर्म न श्रद्धै कांय ॥ च० ॥ २७ ॥ इतरी समझ पड़े नहीं, त्यांमें समकित पावै कीम । कुकिया मोह मिथ्यात में, बोलै मतवाला जेम ॥ च० ॥ २८ ॥ कहै साधां में उन्दर छुड़ावणोजी, मिनकी पासै जाय । श्रावक बैठो करै नहीं, ओ किण विध मिलसी न्याय ॥ च० ॥ २९ ॥ मूसादिक ने बचावतांजी, मिनकी ने दुःख थाय । श्रावक ने बैठो कियांजी, नहीं किण रै अन्तराय ॥ च० ॥३०॥ मूसादिक रै कारणेजी, मिनकी नसाड़े डराय । श्रावक मरै मुख आगले, बैठो न करै हाथ संभाय ॥ च० ॥ ३१ ॥ ए प्रत्यक्ष बात मिले

नहीं जी, तावड़ा छांहड़ो जेम । ज्यां श्रीजिन मारग ओलख्यो, त्यांरे हृदये वसे कीम ॥ च० ॥ ३२ ॥ कहे लाय लागे तो ढांढा खोलने, साधु काढ़े उघाड़ी द्वार । श्रावकने बैठो करे नहीं, आ श्रद्धा करे खुवार ॥ च० ॥ ३३ ॥ ढांढादिक ने खोलतांजी, खप घणी छे ताय । सौ श्रावक हाथ फेस्यां बचे, त्यांरी कांय न आणे मन मांय ॥च०॥ ३४ ॥ कहे ढांढा खोल बचावस्यां, श्रावक रे न फेरां हात । एह अज्ञानी जीव री, कोई मूरख माने वात ॥ च० ॥ ३५ ॥ कहे गाडा हेठे आवे डावड़ो तो, साधां ने लेणो उठाय । श्रावक ने बैठो करे नहीं, ओ ऊंधो पन्थ इण न्याय ॥ च० ॥ ३६ ॥ ऋतु वर्षालारे समयजी, जीव घणा छे ताय । लटां गिजायां ने कातराजी, पड़िया मारग मांय ॥ च० ॥ ३७ ॥ साधु वारे निकल्याजी, जोय जोय मूके पाय । लारे ढांढा देखया आवता, पिण जीवां ने न ले उठाय ॥ च० ॥ ३८ ॥ जो बालक लेवे उठायनेजी, जीवां ने न ले उठाय । तो उणरी श्रद्धारे लेखे उणरे दया नहीं घट मांय ॥ च० ॥ ३९ ॥ जो बालक लेवे उठायने, और जीव देखि ले नाहिं । इण श्रद्धारी करज्यो पारखा, कोई रखे पड़ो फन्द माहिं ॥ च० ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

मच्छ गलागल लोक में, सबला निबलां ने खाय ।
तिण में धर्म परूपियो, कुगुरां कुबुद्धि चलाय ॥ १ ॥
मूला जमीकन्द खुवाड़यां, कहै छै मिश्र धर्म ।
ए श्रद्धा पाखण्ड्यां आदरी, जाडा बन्धसी कर्म ॥२॥
मूला खुवायां पाणी पावियां, सचित्तादिक द्रव्य अनेक ।
खाधांखवायां भलो जाणियां, यां तीनांरो विधि एक ॥३॥
ये तो न्याय न जाणियो, ऊजड़ पड़िया अजाण ।
करण योग विकटाविया, ए मिथ्यादृष्टि अनाण ॥४॥
कुहेत लगावे जीवनें, हिंसा धर्म भाषन्त ।
हिवे सात दृष्टान्त साधु कहैं, ते सुणज्यो कर खन्त ॥५॥
मूला पाणी अग्नि नो, चौथो होकारो जाण ।
त्रस जीव कलेवर तणो, सातमो मनुष्य बखाण ॥६॥
त्यामें तीन दृष्टान्त करड़ा कह्या, ते जाणै अज्ञानी विरुद्ध ।
समदृष्टि जिन धर्म ओलख्यो, ते न्यायसूं जाणै शुद्ध ॥७॥
केशीकुमर दृष्टान्त करड़ा कह्या, तो छोड़ी परदेशी रूढ ।
न्याय मेल हुवो समकिती, झगड़ो झाले ते मूढ ॥८॥
जिणरो बुद्धि छै निर्मली, ते लेसी न्याय विचार ।
सुणै भारी कर्मा जीवड़ा, तो लड़वा नै छै त्यार ॥९॥
हिवे सात दृष्टान्त धुरसूं कहे, आगे घणो विस्तार ।
भिन्न भिन्न भवियण सांभलो, अन्तर आंख उघार ॥१०॥

॥ ढाल सातवीं ॥

(वीर सुणो मोरी विनती—एदेशी)

मूला खवायां मिश्र कहै, लगावै हो खोटा दृष्टान्त एह। पाप लागो मूलां तणो, धर्म हुवो हो खाधां बचिया तेह। भवियण जिन धर्म ओलखो ॥ १ ॥ कहै कूवा बाव खिणावियां, हिंसा हुई हो तिण रा लाग्या कर्म। लोक पिये कुशले रहै, साता पामी हो तिण रो हुवो धर्म ॥ भ० ॥ २ ॥ इम कही मिश्र परूपतां, नहिं शंके हो करता बकवाय। इण श्रद्धा रो प्रश्न पूछियां, जाब न आवै हो जब लोग लगाय ॥ भ० ॥ ३ ॥ हिवे सात दृष्टान्त री थापना, त्यांरी सुणज्यो हो विवरा सुध वात। निर्णय कीजो घट भीतरै, बुद्धिवन्ता हो छोड़ि ने पक्षपात ॥ भ० ॥ ४ ॥ सौ मनुष्या ने मरता राखिया, मूला गाजर हो जमीकन्द खुवाय। वले मरता राख्या सौ मानवी, काचो पाणी हो त्यांने अणगल पाय ॥भ०॥ ५ ॥ पौ माह महीने ठारी पड़ै, तिण कालि हो वाजे शीतल वाय। अचेत पड्या सौ मानवी, मरता राख्या हो त्यांने अग्नि लगाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ पेट दुखे तड़फड़ करै, जीव दोहरा हो करै हाय तिराय। साता वपराई सौ जणा, मरता राख्या हो त्यांने होको पाय ॥ भ० ॥ ७ ॥ सौ जणा दुर्भिक्ष काल में, अन्न विना

हो मरै उजड़ मांय । कोईक मारै त्रसकाय ने, सो जणां ने हो मरता राख्या जिमाय ॥ भ० ॥८॥ किण-हिक काले अन्न विना, सो जणांरा हो जुदा हुवै जीव काय । सहजे कलेवर मुवो पड्यो, कुशले राख्या हो त्यांने तेह खुवाय ॥ भ० ॥ ९ ॥ वले मरता देखी सो रोगला, ममाई विना हो ते साजा न थाय । कोई ममाई करै एक मनुष्य री, सो जणारै हो साता कीधी बचाय ॥ भ० ॥ १० ॥ जमीकन्द खुवायां पाणी पावियां, त्यां में थापै हो पाप ने धर्म दोय । तो अग्नि लगाय होको पाविया, इत्यादिक हो सगले मिश्र होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ जो धर्म कहै बचिया तिको, हण्या तिण रा हो लाग्या जाणै कर्म । तो सातों ही सरीखा लेखवै, कह देना हो सगले पाप ने धर्म ॥ भ० ॥ १२ ॥ जो सातां में मिश्र कहै नहीं, तो किम आवे हो यांरी बोल्यां री प्रतीत । आप थापै आप उत्थापै, तो कुण माने हो आ श्रद्धा विपरीत ॥ भ० ॥ १३ ॥ जो सातां ही में मिश्र कहै, तो नहीं लागे हो गमती लोकांमें बात । मिलती कह्यां विन तेहनी, कुण करै हो कूड़ां री पखपात ॥ भ० ॥ १४ ॥ एक दोय बोलां में मिश्र कहै, सगलां में हो कहता लाजै मूढ । एहवो उलटो पन्थ झालियो, त्यांरे केड़े हो बूड़े कार कार रूढ ॥ भ० ॥१५॥ सो सो

मनुष्य सगलै वच्या, थोड़ो घणो हो हुई सगलै घात। जो धर्म बरोबर न लेखवै. तो उत्थप गयो हो मूलां पाणीरी वात ॥ भ० ॥ १६ ॥ वात उत्थपतो जाणने. कदे कहदे हो सगलै पाप ने धर्म। पिण समदृष्टि श्रद्धै नहीं, ए तो काढ्यो हो खोटी श्रद्धा रो भ्रम ॥ भ० ॥ १७ ॥ असंयती रो मरणो जीवणो, वांछा कीधां हो निश्चय राग न द्वेष। ए धर्म नहीं जिन भाषियो, संशय हुवै तो अङ्ग उपांग देख ॥ भ० ॥ १८ ॥ काच तणा देखी मिणकला, अणसमझू हो जाणै रत्न अमोल। ते निज स्वांपडियां सराफ री, कर दीधा हो त्यांरा कौड्यां मोल ॥ भ० ॥ १९ ॥ मूला खुवायां मिश्र कहै, ए श्रद्धा हो काच मिणिया समान। तो पिण धारी रत्न अमोल ज्यूं, न्याय न सूझै हो चाला कर्मा रा जान ॥भ०॥२०॥ जीव मारी झूठ बोलने. चोरी करने हो पर जीव बचाय। बलि करै अकारज एहवो, मरता राखै हो मैथुन सेवाय ॥भ०॥२१॥ धन दे राखै पर प्राणने. क्रोधादिक हो अठारै ही सेवाय। एहिज कामां पोतै करी, पर जीवां ने हो मरता राखै ताय ॥ भ० ॥२२॥ हिन्सा करी जीव राखिया, तिण में होसी हो धर्म नै पाप दोय। तो इम अठारह ही जाणज्यो, ए चर्चा मां हो विरला समझै कोय ॥ भ० ॥ २३ ॥ जो एकण में मिश्र कहै, सतरै में हो

भाषा बोले और। ऊंधी श्रद्धा रो न्याय मिले नहीं, जद उलटो हो कर उठै भोर ॥ भ० ॥ २४ ॥ जीव मारि जीव राखणा, सूत्र में हो नहीं भगवन्त बेण। ऊंधो पन्थ कुगुरां चलावियो, शुद्ध न सूझै हो फूटा अन्तर नेण ॥ भ० ॥ २५ ॥ कोई जीवता मनुष्य तिर्यञ्च ना, होम करै हो युद्ध जीतण संग्राम। एक तो ओ पाप मोटको, जीव होम्या हो दूजो सावद्य काम ॥ भ० ॥२६॥ कोई नाहर कसाई ने मारने, मरता राख्या हो घणा जीव अनेक। जो गिणै दोयां ने सारखा, त्यांरी बिगड़ी हो श्रद्धा बात विवेक ॥ भ० ॥ २७ ॥ पहला कहता जीव बचावणो, तिण लेखै हो बोलै शुद्ध न काय। जीव बचियां रो धर्म गिनै नहीं, खिण थापै हो खिण में फिर जाय ॥ भ० ॥ २८ ॥ देवल ध्वजा तेहनी परै, फिरता बोलै हो न रहै एकण ठाम। त्यांनै पाखण्डी जिन कह्या, झगड़ो झाल्यो हो नहीं चर्चा रो काम ॥ भ० ॥ २९ ॥ जो एकण में अधर्म कहै, दूजा में हो कहै धर्म नै पाप। ए लेखो क्रियां तो लड़ पड़ै, त्यांरै घट में हो खोटी श्रद्धा री थाप ॥ भ० ॥ ३० ॥ वलै शरणो लेई श्रेणिक तणो, सावद्य बोलै हो तिण री खबर न कांय। जोरी दावे पिलां ने बरजियां, तिण मांहे हो जिन धर्म बताय ॥ भ० ॥ ३१ ॥ कहै श्रेणिक पड़हो बजा-

वियो, हणी मति हो फेरी नगरी में आण। तिण मोक्ष हेतु धर्म जाणियो, एहवो भाषै हो मिथ्याद्दष्टि अजाण ॥ भ० ॥ ३२ ॥ राय श्रेणिक थो समकिती, धर्म विना हो किम करसी ए काम। इम कहि कहि भोला लोक ने, फन्द में न्हाखै हो श्रेणिक रो ले नाम ॥ भ० ॥ ३३ ॥ श्रेणिक ने करै मुख आगलै, आमी स्हामी हो मांहै खांचा ताण। आप छान्दे उटंकां मेलतां, कुण पालै हो श्रीजिनवर आण ॥ भ० ॥ ३४ ॥ समद्दष्टि तणो कोई नाम ले, भरमावे हो अनसमझू अजाण ते शक्र इन्द्र समद्दष्टि देवता, जिन भक्ताहो एका अवतारी जाण ॥भ०॥३५॥ ते भीड़ आया कौणक तणी, युद्ध कीधो हो ते सावद्य जाण। एक करोड़ अस्सी लाख ऊपरै, मनुष्यां रा हो कीधा घमसाण ॥ भ० ॥ ३६ ॥ श्रेणिक राय पड़हो फिराविया, ए तो जाणो हो मोटां राजा री रीत। भगवन्त न सराह्यो तेहने, तो किम आवे हो तेहनी परतीत ॥ भ० ॥ ३७ ॥ पड़हो फेर्यो हणो मति, इतरी छै हो सूत्र में वात। कोई धर्म कहे श्रेणिक भणी, ते तो बोलै हो चौड़े झूठ मिथ्यात ॥ भ० ॥३८॥ लोकां सूं मिलती वात जाणने, कर रह्या हो कूड़ी बकवाय। मिश्र कहे ते पिण अटकलां, सांचा हुवे हो तो सूत्र में देवे बताय ॥ भ० ॥ ३९ ॥ ए तो पुत्रादिक

जायां परणियां, उछ्वादिक हो ओरी शीतला जाण। एहवे कारण कोई ऊपनें. श्रेणिक राजा हो फेरी नगर में आण ॥ भ० ॥४०॥ ते तो रुकिया नहीं कर्म आवता, नहीं कटिया हो तिण रा आगला कर्म। वले नरक जातो रह्यो नहीं, न सिखायो हो भगवन्त ओ धर्म ॥ भ० ॥ ४१ ॥ भगवन्त मोटा मोटा राजवी, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय। साधु श्रावक धर्म बतावियो, न सिखायो हो पड़हो फेरणो ताय ॥ भ० ॥ ४२ ॥ तो श्रेणिक सीखो किण आगले, भगवन्तने हो पूछ्यां साभै सून। वले न जणावे आमना, आज्ञा बिना हो करणी जाणो जबून ॥ भ० ॥ ४३ ॥ वासुदेव चक्रवर्ती मोटका, त्यांरी बर्त्ते हो तीन छः खण्ड में आण। जो पड़हो फेरयां मुगत मिलै, तो कुण काढे हो आघो जिन धर्म जाण ॥ भ० ॥४४॥ कोई विसन वाला मिनख ने, विसन सातूं हो विना मन दे छुड़ाय। जो इण विध जिन धर्म निपजे, तो छः खण्ड में हो बरजे आण फिराय ॥ भ० ॥ ४५ ॥ फल फूलादिक अनन्त काय में, हिन्सादिक हो अठारह पाप जाण। जोरी दावै पेला ने, मने कियां, धर्म हुवे तो हो फेरै छः खण्ड में आण ॥ भ० ॥ ४६ ॥ वले तीर्थंकर घर में थकां, त्यां में हुंता हो तीन ज्ञान विशेष। वले हाल हुक्म थो लोक में, त्यां

म फेरयो हो पड़हो सूत्र देख ॥ भ० ॥ ४७॥ बलदेवादिक मोटा राजवी, घर छोड़ी हो किया पाप रा पच खाण। श्रेणिक जिम पड़हो न फेरियो, जोरी दावे हो न वरताई आण ॥ भ० ॥ ४८ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती तेह ने, चित्त मुनि हो समझावण आय। साधु श्रावक रो धर्म बतावियो, पड़ह री हो न कहीं आमना काय ॥ भ० ॥ ४९ ॥ वीसां भेदे रुकै कर्म आवता, बारह भेदे हो कटै आगला कर्म। ए मोक्ष रो मारग पाधरो, छोडा मेला हो सगला पाखण्ड धर्म ॥ भ० ॥ ५० दोय वेश्या कसाई वाड़े गयी, करता देखी हो जीवां रा संहार। दोनूं जण्यां मतो करी, मरता राख्या हो जीव दोय हजार ॥ भ० ॥ ५१ ॥ एक गहणो देई आंपणो, तिण छुड़ाया हो जीव एक हजार। दूजी छुड़ाया इण विधि, एक दोयसूं हो चौथो आस्रव सेवाड़ ॥ भ० ॥ ५२ ॥ एकण ने पाखण्डी मिश्र कहै, दूजी ने हो पाप किण विध होय। जीव बराबर बचाविया, फेर पड़सी हो ते तो पाप में जोय ॥ भ० ॥ ५३ ॥ एकण सेवायो आस्रव पांचमो, तो उण दूजी हो चौथो आस्रव सेवाय। फेर पड्यो तो इण पाप सें, धर्म होसी हो ते तो सरीखो थाय ॥ भ० ॥ ५४ ॥ एकण ने धर्म कहतां लाजे नहीं, दूजी ने हो कहतां आणे शङ्क। जब लोकां सूं

करै लगावणी, एहवा जाणो हो चौड़े कुगुरां डक ॥ भ० ॥ ५५ ॥ एक वेश्या सावद्य कामो करी, सहस्र नाणो हो ले चली घर मांय । दूजी कर्त्तव्य करी आपणो, मरता राख्या हो सहस्र जीव छुड़ाय ॥ भ० ॥ ५७ ॥ धन आण्यो खोटा कर्त्तव्य करी, तिण रै लाग्या हो दोनूं विध कर्म । तो दूजी छुड़ाया तेह ने, उण लेखै हो हुवो पाप ने धर्म ॥ भ० ॥ ५७ ॥ पाप गिणै मैथुन में, जीव बचिया हो तिण रो न गिणै धर्म । पोते श्रद्धारी खबर पोते नहीं, ताण ताण हो बांधै भारी कर्म ॥ भ० ॥ ५८ ॥ इण प्रश्न रो जाब न उपजै, चर्चा में हो अटकै ठामो ठाम । तो पिण निर्णय करै नहीं, बक उठै हो जीवां रो ले नाम ॥ भ० ॥ ५६ ॥ जीव जीवै काल अनादि रो, मरै तिण री हो पर्याय पलटो जाण । संवर निर्जरा तो न्यारा कह्या, ते लेजावे हो जीव ने निर्वाण ॥ भ० ॥ ६० ॥ पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायरो, वनस्पति हो छठो त्रसकाय । मोलसूं छुड़ावे तेह नें, धर्म होसी हो ते तो सगलां में थाय ॥ भ० ॥ ६१ ॥ त्रसकाय छुड़ायां में धर्म कहै, पांच काय में हो बोले नहीं निःशंक । भ्रम में पाड्या लोक ने, त्यां लगाया हो मिथ्यात रा डंक ॥ भ० ॥ ६२ ॥ त्रिविधे छः काय हणावी नहीं, एहवी छै हो भगवन्त री वाय । मोल लियां धर्म

कहै मोक्ष री, ए फन्द मांड्यो हो कुगुरां कुबुद्धि चलाय ॥ भ० ॥ ६३ ॥ देव गुरु धर्म रत्न तीनूं. सूत्र में हो जिन भाष्या अमोल। मोल लियां नहीं नीपजै, सांची श्रद्धा हो आंख हिया री खोल ॥ भ० ॥ ६४ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ने तप, मोक्ष जावा हो मारग छै च्यार। त्यांने भिन्न भिन्न ओलख आदरै, शुद्ध पालै हो ते पामै भव पार ॥ भ० ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

दया दया सब को कहै, ते दया धर्म छै ठीक।
दया ओलखने पालसी, त्यांने मुक्ति नजीक ॥१॥
दया तो पहलो व्रत छै, साधु श्रावक रो धर्म।
पाप रुकै जासूं आवता, नवा न लागे कर्म।
छः काय हणे हणावे नहीं, हणतां भलो न जाणै ताय ॥२॥
मन वचन काया करी, ए दया कही जिनराय।
दया चोखे चित्त पालियां, तिरै घोर रुद्र संसार ॥३॥
आ हिज दया परूपतां, भव जीव उतरै पार ॥४॥
पण एक नाम दया लौकिकरो, तिण रा भेद अनेक।
त्यांमें भेषधारी भूला घणा, सुणज्यो आण विवेक ॥५॥

॥ ढाल आठवीं ॥

आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में (पदेशी)

द्रव्ये लाय लागी भावे लाय लागी, द्रव्य कूवो ने भावे कूवो। ओ भेद न जाणै मूढ मिथ्याती, संसार ने मुगत रो मारग जूवो॥ भेष धरने भूलां रो निरणो करज्यो॥ १॥ कोई द्रव्य लाय सूं बलता ने राखै, द्रव्य कूवै पड़ता ने झाल बचायो। ए तो उपकार कियो इण भव रो, विवेक विकल त्यांने खबर न कायो॥ भे० ॥ २॥ घट में ज्ञान घालो ने पाप पचखावे, तिण पड़तो राख्यो भव कूवा मांयो। भावे लाय बलता ने काढ़ै ऋषिश्वर, ते पिण गहिला भेद न पायो॥ भे० ॥ ३॥ सूने चित्त सूत्र बांचे मिथ्याती, द्रव्य ने भाव रा नहीं निवेरा। परिवार सहित कुपन्थ में पड़िया, त्यां नरकां रै सन्मुख दीना डेरा॥ भे० ॥ ४॥ गृहस्थ ने औषध भेषज देई ने, अनेक उपाय कर जीवां बचायो। ए संसार तणो उपकार कियां में, मुक्ति रो मारग मूढ बतायो॥ भे० ॥ ५॥ करै यन्त्र मन्त्र झाड़ा झपटा, सर्पादिक रो जहर देवै उतारी। काढ़ै डाकण साकण भूत यचादिक, तिण में धर्म कहै सांगधारी॥ भे० ॥ ६॥ एहवा कर्तव्य सावद्य जाणी, त्रिविधे त्रिविधे साधां त्यागज कीधो। भेषधारी लोकां सूं मिलने,

जीव जिवावण रो शरणो लीधो ॥ भे० ॥ ७ ॥ ए जीव वचावण रो मुख सूं कहै, पिण काम पड्यां बोलै फिरती वाणी। भोलां ने भ्रम में पाड़ विगोया, ते पिण डूबै छै कर कर ताणी ॥ भे० ॥ ८ ॥ कीड़ी मांकादिक लटां गिजायां, ढांढा रै पग हेठे चौंथ्या जावै। भेषधारी कहै म्हे जीव वचावां तो, चुग चुग जीवां ने क्यूं न उठावै ॥ भे० ॥ ९ ॥ जो आखो चौमासो उपदेश देवै तो, दश बीस जीवां ने दोहरा समभावै। जो उद्यम करै चार महीना रै मांहो, तो लाखां गमे जीव तेहिज वचावै ॥ भे० ॥ १० ॥ सौ घर रै आंतरै कोई लेवै सन्थारो, तो तुरत आलस छोड़ देवण जावै। सौ पगल्या गयां जीव लाखां वचै छै, त्यां जीवां ने जाय ने क्यूं न वचावै ॥ भे० ॥ ११ ॥ घर छोड़तो जाणै सौ कोसां ऊपर, तो सांग पहिरावण सताव सूं जावै। एक कोस गयां जीव कोड़ां वचै छै, त्यां जीवां ने जायर क्यूं न वचावै ॥ भे० ॥ १२ ॥ जब तो कहै म्हांरो कल्प नहीं छै, म्हे तो संसार सूं हुवा न्यारा। कभी कहै म्हे जीव वचावां, ए वाणी न वोलै एकण धारा ॥ भे० ॥ १३ ॥ साधु तो आपणा व्रत राखण ने, त्रिविध त्रिविध जीव नहीं सतावै। संसार मांही जीव पच रह्या छै, तिण सूं तो साधु हुआ निरदावै ॥ भे० ॥ १४ ॥ जीवणो

मरणो त्यांरो न चावे, समझता दीखे तो साधु समझावे। ज्ञानादिक घट मांही घाले, मुक्त नगर ने संत पहूंचावे ॥ भे० ॥१५॥ गृहस्थ रै पग हेठे जीव आवै, तो भेषधारी कहै म्हे तुरत बतावां। ते पिण जीव बचावण काजे, सर्व ही जीवां रो जीवणो चावां ॥ भे० ॥१६॥ अव्रती जीवां रो जीवणो चावै, तिण धर्म रो परमार्थ नहीं पायो। श्रद्धा अज्ञान्यां री पगपग भटकै, न्याय सुणज्यो भवियण चित लायो ॥ भे० ॥ १७ ॥ गृहस्थ रै तेल ढुलै मूण फूट्यां, कीड्यांरा दल मांहि रेला आवे। बीच में जीव आवें तेलसूं बहता, तेल बुहो बुहो अग्नि में जावै ॥ भे० ॥ १८ ॥ जो अग्नि उठै तो लाय लागै छै, त्रस स्थावर जीव मार्या जावे। गृहस्थ रा पग हेठे जीव बतावे, तो तेल ढुले ते बासण क्यूं न बतावे ॥ भे० ॥ १९ ॥ पगसूं मरता जीव बतावे तेलसूं मरता जीव नहीं बतावे। ए खोटी श्रद्धा उघाड़ी दीसै, पण अभ्यन्तर अंधारो नजर न आवे ॥ भे० ॥ २० ॥ भेषधारी विहार करता मारग में, त्यांने श्रावक स्हामा मिलिया आयो। मारग छोड़ने उजड़ पड़िया, त्रस स्थावर जीवां ने चींथता जायो ॥ भे० ॥२१॥ श्रावक ने उजड़ पड़िया जाणे, त्रस स्थावर जीवां ने मरता देखे। गृहस्थ रै पग हेठै जीव बतावे, तो मारग बतावणो कुण

लेखे ॥ भे० ॥ २२ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे अज्ञानी, ठाले वादल अम्बर जिम गाजे। श्रावक उजाड़ में मारग पूछे, जद मौन साजे बोलतां कांय लाजे ॥ भे० ॥ २३ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे, त्यां में थोड़ासा जीवां ने बचता जाणी। श्रावकां ने उजाड़सूं मारग धाल्यां, घणा जीव बचे तस स्थावर प्राणी ॥ भे० ॥२४॥ थोड़ी दूर बतायां थोड़ो धर्म हुवे, तो घणी दूर बतायां घणो धर्म जाणो। घणी दूर रो नाम लियां बक उठे, ते खोटी श्रद्धारो छै अहिनाणो ॥ भे० ॥ २५ ॥ कोई अन्धा पुरुष ग्रामान्तर जातां, आंख बिना जीव किण विध जोवे,। कीड़ी मांकादिक चींथतो जावे, तस स्थावर जीवां रा घमसाण होवे ॥ भे० ॥२६॥ भेषधारी सहुजी साथे हो जाता, आन्धारा पगसूं मरता जीवां ने देखे। ओ पग पग जीवां ने नहीं बतावे, तो खोटी श्रद्धा जाणज्यो इण लेखे ॥ भे० ॥ २७ ॥ त्यां ने बताय बतायने जीव बचावणा, पूंज पूंजने करणा दूरो। इण धर्म कियां सूं मोतेज लाजे, तो बीजो कुण मानसी ओमत कूरो ॥ भे० ॥ २८ ॥ ईल्यां सुलसुलियां सहित आटो छै, गृहस्थ सूं ढुले मारग मांयो। आ तपती रेत उन्हाले री तिण में, पड़त प्रमाण हुवे जुदा जीव कायो ॥भे०॥ २६ ॥ गृहस्थ नहीं देखे आटो ढुलतो, ते भेषधारयां

री निजरां आवे। ए पग हेठै जीव बतावै अज्ञानी तो, आटो ढुलता जीव क्यूं न बचावै ॥ भे० ॥३०॥ इत्यादिक गृहस्थ रै अनेक उपधिसूं, त्रस स्थावर जीव मुवा ने मरसी। एक पग हेठै जीव बतावै, त्यां ने सगली ही ठौड़ बतावणा पड़सी ॥ भे० ॥ ३१ ॥ किणहिक ठौड़ जीव बतावै, किणहिक ठौड़ शङ्का मन आणै। समझ पड़्यां बिन श्रद्धा परूप, पीपल बांधी मूरख जिम ताणै ॥ भे० ॥ ३२ पग पग जावक अटकता देखै, कदा सर्व आरै हुवा अज्ञानी थूलो। कूड़ कपट रो मत कुशले राखणने पिण बुद्धिवन्त बात न मानै मूलो ॥ भे० ॥ ३३ ॥ गृहस्थ रो न वंछणो जीवणो मरणो, वंछ्यां बतायां लागै पाप कर्मों। राग द्वेष रहित रहणो निरदावै, एहवो निर्मल श्रीजिन धर्मों ॥

आ श्रद्धा श्रीजिनवर भाषी ॥ ३४ ॥

समवसरण एक योजन मांडला में, नर नार्‍यांना वृन्द आवे ने जावे। अरिहन्त आगल वाणी सुणवा, भगवन्त भिन्न भिन्न धर्म सुणावे ॥ आ० ॥ ३५ ॥ चार कोस मांही त्रस स्थावर हूंता, मर गया जीव उराणे आया। नर-नार्‍यां रा पगसूं बिना उपयोगे, भगवन्त कठे ही न दीसे बताया ॥ आ० ॥ ३६ ॥ नन्दन मणिहारो डेडको हुय ने, वीर वांदण जातां मारग मांयो। तिण ने चींथ

मारयो श्रेणिक ने वछेरै, वीर साध सांहमा मेल क्यां ने वचायो ।। आ० ॥ ३७ ॥ गृहस्थ रा पग हेठै जीव आवै तो, साधां ने वचावणो कठै ही न चाल्यो । भारी कर्मा लोगां ने भ्रष्ट करण ने ओपिण घोचो कुगुरां घाल्यो ॥ आ० ॥३८ ॥ साधां रो नाम तो अलगो मेलो. श्रावकां री चर्चा मुख लावै । साधु साधुसूं मरता जीव वतावै, ज्यूं श्रावक श्रावक ने जीव वतावै ॥ आ० ॥३९॥ सिद्धान्तरा वल विना वोले अज्ञानी, श्रावकांरि सम्भोग साधां ज्यूं वतायो । ए गालां रा गोला मुख सूं चलावै, ते न्याय सुणज्यो भवियण चित्त लायो ॥ आ० ॥ ४० ॥ साधुसूं मरता जीव देखिने, सम्भोगी भाधु देखी जो नहीं वतावै । ते अरिहन्त री आज्ञा लोपावै, पाप लागै ने विराधक थावै ॥ आ० ॥ ४१ ॥ साधु तो साधु ने जीव वतावै, ते पोता रो पाप टालण रे काजे । श्रावक श्रावक ने जीव नहीं बतावै. तो किसो पाप लागै किसो व्रत भांजे ॥ आ० ॥ ४२ ॥ श्रावक श्रावक ने न वतायां पाप लागो कहै, ए भेषधारयां मत काढ्यो कूरो । श्रावकां रे सम्भोग साधां ज्यूँ हवै तो, पगपग वंधजाय पाप रो पूरो ॥ आ० ॥ ४३ ॥ पाट वाजोटादिक साधु वाहरै मेली, ठरड़े मातादिक कारज जावै । लारै और साधु त्यांने भीजता देखै, जो ए लेइ न आवै तो प्रायस्चित

थावे ॥ आ० ॥ ४४ ॥ गरढा गिलाण साधु री वेयावच, साधु न करै तो जिन आज्ञा बारै। महा मोहनी कर्म-तणो बन्ध पाड़ै, इहलोक ने परलोक दोनूं बिगारै॥ आ० ॥ ४५ ॥ आहार पाणी साधु बहरी ने आणे, सम्भोगी साधु ने वांटदेवा री रीती। आप आण्यो जो अधिक लेवै तो, अदत्त लागे ने जाय प्रतीती ॥ आ० ॥ ४६ ॥ इत्यादिक साध साधां रे अनेक बोलांरो, सम्भोगी साधांसूं न कियां अटके मोखो। एहिज बोलांरो श्रावक श्रावकांरै, न करै तो मूल न लागै दोषो॥ आ० ॥ ४७ ॥ श्रावकांरै सम्भोग साधांज्यूं हुवे तो, श्रावक श्रावकां ने पिण इण विध करणो। ए श्रद्धा रो निर्णय न काढै अज्ञानी, त्यां विटल थई लियो लोकां रो शरणो ॥ आ० ॥ ४८ ॥ जो ए श्रावक श्रावकां रो नहीं करै तो, भेषधारयां रे लेखे भागल जाणो। श्रावकां रै सम्भोग साधांज्यूं परूपै. ते पड़ गया मूरख उलटी ताणो ॥ आ० ॥ ४९ ॥ श्रावकांरै सम्भोग तो श्रावकांसूं छै, वले मिथ्यातासूं राखे मिलापो। त्यांरा सभोग तो अव्रत में छै, तिके त्याग कियां सूँ टलसी पापो ॥ आ० ॥ ५० ॥ त्यासूं शरीरादिक नो सम्भोग टालि ने, ज्ञाना-दिक गुण रो राखे मिलापो। उपदेश देई निरदावे रहणो, पेलो समभोने टाले तो टलसी पापो ॥ आ० ॥

५१ ॥ लाय लागी जो गृहस्थ देखे, तो तुरत बुझावे छ: काय ने मारो। ए सावद्य कर्त्तव्य लोक करै छै, तिण मांही धर्म कहै भांगधारी ॥ आ० ॥ ५२ ॥ कहै अग्नि पाणी छ:काय मुई त्यांरो, थोड़ोसो पाप कहै हुवे कानी। और जीव बच्या त्यांरो धर्म बतावे. लाय बुझावण री करै सानी ॥ आ० ॥ ५३ ॥ ए धर्म ने पाप रो मिश्र परूपे, टोटा बिचे लाभ घणो बतावे। त्यां ने भेषधारयां री प्रतीति आवे, तो लाय बुझावण दौड्या दौड्या जावै ॥ आ० ॥५४॥ एहवी दया बतावे लोकां ने, छ:कायारा पीहर नाम धरावे। मिश्र धर्म कहै तेउ काया ने मारयां, पिण प्रश्न पूछे ज्यां रो जाव न आवे ॥ आ० ॥ ५५ ॥ छ:काय जीवां री हिंसा कीधां, और जीव बचे त्यांरो कहै छै धर्मो। ए श्रद्धा सुण सुणने बुद्धिवन्ता, खोटा नाणा जिम काढियो भरमो ॥ आ० ॥ ५६ ॥ कोई नित्य नित्य पांच सौ जीवां ने मारै, कोई करै कसाई अनारज कर्मो। जो मिश्र धर्म हुवे अग्नि बुझायां, तो इणने ही मारयां हुवे मिश्र धर्मो ॥ आ० ॥ ५७ ॥ लायसूं बलता जीव जाणी ने छ:काय हणी ने लाय बुझाई। जो कसाईसूं मरता जीवां ने देखी, कोई जीव बचावण हणों कसाई ॥ आ० ॥ ५८ ॥ जो लाय बुझायां जीव बचे तो, कसाई ने मारयां बचे घणा

प्राणो । लाय बुझायां कसाई ने मार्यां, दोयां रो लेखो सरीखो जाणो ॥ आ० ॥५८॥ बले सिंह सर्पादिक चीता बघेरा, दुष्टी जीव करै पर घाता । मिश्र धर्म छे लाय बुझायां, तो यांने ही मार्यां घणारै साता ॥आ० ॥६०॥

॥ दोहा ॥

जीव हिंसा छे अति बुरी, तिणमें अवगुण अनेक ।
दया धर्ममें गुण घणा, ते सुणज्यो आण विवेक ॥१॥

॥ ढाल नवमीं ॥

(श्री भवरत्न चिन्तामणि सरिखो)

दया भगवती जीवां ने सुखदाई, आ मुक्तपुरीनी साई-जी । साठ नाम दयारा कह्या जिन, दशमा अङ्गरै मांई जी । दया धर्म श्री जिनजीरो बाणी ॥१॥ पूजनीक नाम दया रो भगवती मङ्गलीक नाम छे नीकोजी । जे भव जीव आया इण शरणे, त्यांने मुक्ति नजीकोजी ॥ दया० ॥२॥ त्रिविधे त्रिविधे छ:काय न हणवी, आ दया कही जिन-रायो जी । दया भगवती रा गुण छे अनन्ता, ते पूरा केम कहायोजी ॥ दया० ॥ ३ ॥ त्रिविधे त्रिविधे छ:काय जीवांने, भय न उपजावै तामोजी, । ए अभयदान कह्यो अरिहन्तां, ते पिण दया रो छे नामोजी ॥ दया०

॥ ४ ॥ विविधे विविधे छःकाय मारणा रा, कोई त्याग करै मन सून्धेजी। आ पूरी दया भगवन्तां भाखी, तिण सूं पाप रा बारणा रून्धेजी ॥ दया० ॥ ५ ॥ कोई त्याग कियां बिन हिन्सा टालै, तोही कर्म निर्जरा थावैजी। हिंसा टाल्यां शुभ योग वर्त्तै छे तिहां पुण्य रा ठाठ बन्धावैजी ॥ दया० ॥ ६ ॥ इण दयासूं पाप कर्म रुक जावै, वले कर्म हुवै चकचूरोजी। यां दोय गुणा में अनन्त गुण आया, ते पालै छे विरला शूरोजी ॥ दया० ॥ ७ ॥ छःकाय हणै हणावै नाहीं, वले हणतां ने नहीं सरावैजी। इसड़ी दया निरन्तर पालै, त्यांरे तुलै कुण आवैजी ॥ दया० ॥ ८ ॥ आहिज दया ने महाव्रत पहिलो, तिण में दया दया सर्व आईजी। पूरी दया तो साधुजी पालै, बाकी दया रही नहीं कांईजी ॥ दया० ॥ ९ ॥ आहिज दया चोखे चित्त पालै, ते केवलियां री छै गादीजी। आहिज दया सभा में परूपै, त्यां ने वीर कह्या न्यायवादीजी। दया० ॥ दया ॥ १० ॥ आहिज दया केवलियां पाली, मनःपर्यव ने अवधि ज्ञानीजी। मति ज्ञानी ने श्रुत ज्ञानी रे, आहिज दया मनमानीजी ॥ दया० ॥ ११ ॥ आहिज दया लब्धिधार्‍यां पाली, आहिज पूर्वधर ज्ञानी जी। शङ्का हुवे तो निःशङ्क जोवो, सूत्र में नहीं बात छानीजी ॥ दया० ॥ १२ ॥

देश थकी दया श्रावक पाले, तिण ने पिण साधु वखाणै जी । श्रावक हिंसा करै घर बैठो, तिण में धर्म न जाणेजो ॥ दया० ॥ १३ ॥ प्राण, भूत, जीव ने सत्व, त्यांरी घात न करणीं लिगारोजी । आ तीन काल रा तीर्थङ्करांरी वाणी, आचाराङ्ग चौथा अध्ययन मंझारीजी ॥ दया० ॥१४॥ मति हणो हति हणो कह्यो अरिहन्तां, तो जीव हणो किण लेखेजो । अभ्यन्तर आंख हिया री फूटो, ते सूत्र स्हामो नहि देखे जो ॥ दया० ॥ १५ ॥ हिंसा धर्म जीवांने दुःखदाई, ते नरकतणी छे साईजी । तीस नाम खोटा खोटा हिंसारा, कह्या दशमां अङ्गरे मांईजी ॥

हिंसा धर्म कुगुरांरी वाणी ॥ १६ ॥

प्राणघात हिंसा छे खोटी, ते सर्व जीवां ने दुःख-दाईजी । जीव हिंसा में अवगुण अनेक छे, ते पूरा कीम कहाईजो ॥ हिंसा० ॥ १७ ॥ कोई कहै म्हे हिंसा किया में, जाणाछां पाप एकान्तो जी । पिण हिंसा किया विना धर्म न हुवे, म्हे किण विध पूरां मनखन्तोजी ॥ हिंसा० ॥ १८ ॥ कोई कहै म्हे हणां एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीवांरे तांईजी । एकेन्द्रिय मार पंचेन्द्रिय, पोष्यां म्हाने धर्म घणो तिण मांईजो ॥ हिंसा० ॥ १९ ॥ कहै एकेन्द्रिय सूं पंचेन्द्रियरा, मोटा घणा पुण्य भारीजो । तिणसूँ

एकेन्द्रिय मार पंचेन्द्रिय पोष्यां म्हाने पाप न लागै लिगारीजी ॥ हिंसा० ॥ २० ॥ कोई इसड़ो धर्म धारीने बेठा, ते तो कुगुरां तणो सिखायोजी । निःशङ्क थका छःकायां ने मारै, वले मन मांहीं हर्षित थायोजी ॥ हिंसा० ॥ २१ ॥ कोई पांच स्थावर ने सहल गिणी ने, त्यां ने मार्‌यां न जाणै पापो जी । तिणसूं त्यांने हणतां शङ्क न श्राणै. ते तो कुगुरां तणो प्रतापोजी ॥ हिंसा० ॥ २२ ॥ पांच स्थावर रा आरम्भ सेती, दुर्गति दोष वधारैजी । कह्यो दशवैकालिक छठे अध्ययने, तो बुद्धिवन्त किण विध मारैजो ॥ हिंसा० ॥ २३ ॥ छःकाय जीवां ने जीवसं मारी ने, सगा सयण न्यात जिमावेजी । ए प्रत्यक्ष छै सावद्य ससारनो कामो, तिण में धर्म वतावेजो ॥ हिंसा० ॥ २४ ॥ जीवां ने मार जीवां ने पोषै, ते तो मारग संसार नो जाणोजी । तिण मांही साधु धर्म वतावै, ते पूरा मूढ़ अयाणोजी ॥हिंसा० ॥ २५ ॥ मूला, गाजर, शकरकन्द कान्दा इत्यादिक नीलोती अनेकोजी । त्यांरो दान दियां में पुण्य परूपै, ते डूबै छै विना विवेको जी ॥ हिंसा० ॥ २६ ॥ जीव खुवायां में पुण्य परूपै. कोई मिश्र कहै छे सूंठोजी । ये दोनूं ही हिन्सा धर्मी अनार्य, ते डूबै छै कर कर कूंठोजी ॥ हिंसा० ॥२७॥ कोई जीव खुवायां में पुण्य परूपै, त्यांरो

जीभ बहै तरवारोजी । बले पहिरण सांग साधां रो राखै, धिक् त्यांरो जमवारोजी ॥ हिन्सा० ॥ २८ ॥ कोई साधु रो विरद धरावे लोकां में, बले बाजे भगवन्त रा भक्ताजी । पिण हिन्सा मांही धर्म परूपे, त्यांरे तीन व्रत भागे लगताजी ॥ हिन्सा० ॥ २९ ॥ छ: काय मार्‌यां में धर्म परूपै, त्यांने हिन्सा छ: काया री लागैजी । तीन काल री हिन्सा अनुमोदी, तिण सूं पहिलो महाव्रत भागैजी ॥ हिन्सा० ॥ ३० ॥ हिन्सा में धर्म तो जिन कह्यो नहीं, हिन्सा में धर्म कह्यां झूठ लागैजी । दूसड़ो झूठ निरन्तर बोलै, त्यांरो बीजो ही महाव्रत भागैजी ॥ हिन्सा० ॥ ३१ ॥ जीवां ने मार्‌यां धर्म परूपै, त्यां जीवां रो अदत्त लागैजी । बले आज्ञा लोपी श्री अरिहन्त नी, तिण सूं तीजो महाव्रत भागैजी ॥ हिंसा० ॥ ३२ ॥ छ: काय मार्‌यां में धर्म बतावे, त्यांरी श्रद्धा घणी छै ऊंधीजो । ते मोह मिथ्यात में जड़िया अज्ञानी, त्यांने श्रद्धा न सूझे सूंधीजो ॥ हिन्सा० ॥३३॥ त्यांने पूछ्यां कहै म्हे दया धर्मी छां, पिण निश्चय छ: काय नां घातीजी । त्यां हिन्सा धर्मियां ने साधु श्रद्धे, ते पिण निश्चय मिथ्यातीजी ॥ हिन्सा० ॥ ३४ ॥ कोई कहै साधु जीव बचावे, राखे रखावे भलो जाणेजी । ते जिन मारग ना अजाण अज्ञानी, दूसड़ी चर्चा आणे

जी ॥ हिन्सा० ॥३५॥ साधु तो जीवां ने क्यां ने बचावे, ते तो पच रह्या निज कर्मोंजो। कोई साधु री संगति आय करै तो, सिखाय देवे जिन धर्मोजी ॥ हिन्सा० ॥ ३६ ॥ छ:काय रा शस्त्र जीव अव्रती, त्यांरो जीवणो मरणो न चावैजी। त्यांरो जीवणो मरणो साधु चावै तो, राग द्वेष वेहूं आवैजी ॥ हिंसा० ॥ ३७॥ छ: काय रा शस्त्र जीव अव्रती, त्यांरो जीवणो मरणो छै खोटोजी। त्यांने हणवारा त्याग किया त्यांरै, दया तणो गुण मोटोजी ॥ हिंसा० ॥ ३८ ॥ असंयम जीवितव्य ने वाल मरण यांरो, आशा वांछा नहीं करणोजो। पण्डित मरण ने संयम जीवितव्यनी आशा वांछा मन धरणीजी ॥ हिंसा० ॥ ३९ ॥ छ:काय रा शस्त्र जीव अव्रती, त्यांरो असंयम जीवितव्य जाणोजी। सर्व सावद्य रा त्याग किया त्यांरो, संयम जीवितव्य एह पिछाणोजो॥ हिंसा• ॥ ४० ॥ तिविधे तिविधे ताहि छ:काय री साधु, त्यांरी दया निरन्तर राखैजी। ते छ:काय रा पीहर छ:काय ने मारयां, धर्म किसि लेखे भाषैजी ॥ हिसा ॥४१॥ छ:काय रा शस्त्र हणे संसारी, त्यांरे बीच न पड़णो जायोजी। बीच पड्यां व्रत भागे साधुरा, ते विकलां ने खबर न कायोजी ॥ हिंसा० ॥ ४२ ॥ केई कहै साधु ने बीच न पडणो, केई कहै बीच पड़णोजी। साधु ने समभावे

रहणो. ते विकलां ने नहीं निरणोजी ॥ हिंसा० ॥ ४३ ॥ साधु ने बीच पड़णो त्रिविधे निषेध्यो, ते हणतां बीच पड़े नहीं जायोजी। पिण गृहस्थ ने धर्म कहै बीच पड़ियां, तो घर रो धर्म कांई गंवायोजी ॥ हिंसा० ॥ ४४ ॥ हणे जीतबने प्रशंसा हेते, हणे मान पूजा रे कामोजी। बले जन्म मरण मुकावण हणे छे, हणे दुःख गमावण कामोजी ॥ हिंसा० ॥४५॥ ए छःकारण छःकाय ने मारै तो, अहित रो कारण थायोजी। जन्म मरण मुकावण हणे तो, समकित रत्न गमायोजी ॥ हिंसा० ॥ ४६ ॥ ये छः कारण छःकाय ने माऱ्यां, आठ कर्मा री गांठ बंधायोजी। मोहनी मार बधै घणी निश्चय, बली पड़े नरक में जायोजी ॥ हिंसा० ॥ ४७ ॥ अर्थ अनर्थ हिंसा कीधां, अहित रो कारण तासोजी। धर्म रै कारण हिंसा कीधां, बोध बीजरो नाशोजी ॥ हिंसा० ॥ ४८ ॥ ये छः कारण छः कायने मारै, ते तो दुःख पामे दुण संसारोजी। ए तो आचाराङ्ग पहले अध्ययने, छः उद्देशा में कह्यो विस्तारोजी ॥ हिंसा० ॥ ४८ ॥ केई श्रमण माहण आचार्यपण, करै हिंसा धर्मनो थापोजी। कहै प्राणभूत जीव ने सत्व, धर्म हेतु हण्यां नहीं पापोजी ॥ हिंसा० ॥५०॥ एहवी ऊंधी परूपणा करै अनार्य, त्यांने आर्य बोल्या धर प्रेमोजी। थे भूंडो दीठो भूंडो

साम्भलियो, भूण्डो मान्यो भूण्डो जाण्यो एमोजी॥ हिंसा०॥ ५१॥ जीवां ने मार्‍यां धर्म परूपे, ए तो अनार्यनी वाणोजी। ते तो भारी कर्मा मूढ मिथ्याती, त्यांरी सुधबुध नहीं ठिकाणोजी॥ हिन्सा०॥ ५२॥ तिण हिंसा धर्मियांने आर्य पूछ्यो, थाने मार्‍यां धर्म के पापोजी। तब तो कहै म्हाने मार्‍यां पाप एकान्त छै, साच बोल कीधौ शुद्ध थापोजी॥ हिंसा०॥ ५३॥ तब आर्य कहै थांने मार्‍यां पाप छै, तो सर्व जीवांने इम जाणोजी। औरांने मार्‍यां धर्म परूपो, थे बूड़ो कांइ कर कर ताणोजी॥ हिंसा०॥ ५४॥ इम हिंसा धर्मी अनार्य त्यांने, कीधा जिन मार्ग सूं न्यारोजी। जोवो आचाराङ्गरे चौथे अध्ययने, बीजे उद्देशे विस्तारोजी॥ हिंसा०॥ ५५॥ औरांने मार्‍यां धर्म परूपै, आपनै मार्‍यां कहै पापोजी। आ श्रद्धा विकलां री ऊंधी, इण में कर रह्या मूढ विलापोजी॥ हिंसा०॥ ५६॥ अर्थ अनर्थ धर्मरे काजे, जीव हणे छः कायोजी। तिणने मन्द बुद्धि कह्यो दशमें अङ्गे, पहिला अध्ययनरे मांयोजी॥ हिंसा॥५७॥ छः काय जीवां रो धमसाण करने, श्रावकने जीमावेजी। उणने मन्दबुद्धि कह दियो भगवन्त, तिण में धर्म किसी विध थावेजी॥ हिंसा०॥ ५८॥ कोई तो जीवांने मरता राखावे, कोई जीव खवावे आखाजी। तिण मांही एकान्त

धर्म बतावे, ते अनार्य री भाषाजी ॥ हिंसा० ॥ ५९ ॥ कोई जीव मार्‌यां मांहि धर्म कहै छै, ते पूरा अज्ञानी ऊंधाजी। त्यांने जाण पुरुष मिलै जिन मारग रो, ते किण विध बोलै संधाजी ॥ हिंसा० ॥ ६० ॥ लोहनो गोलो अग्नि तपाय, ते अग्निवर्ण कर तातोजी। ते पकड़ संडासो लायो तिण पासे, कहै बल तो गोलो झेलो हातोजी ॥ हिंसा० ॥ ६१ ॥ जब पाखण्डियां हाथ पाछो खैंच्यो, जब जाण पुरुष कहै त्यांनेजी। थे हाथ पाछो खैंचो किण कारण, थांरी श्रद्धा मत राखो छानेजी ॥ हिंसा० ॥ ६२ ॥ जब कहै गोलो म्हे हाथ में ल्यांतो, म्हारो हाथ बलै लागै तापोजी। तो थांरो हाथ बालै तिण ने पापकै धर्म, जब कहै उणने लागै पापोजी ॥ हिंसा ॥६३॥ थांराहाथ बालै तिणनै पाप हुवै तो, औरांने मार्‌यां धर्म नाहोंजी। थे सर्व जीव सरीखा जाणो, थे सोच देखो मन मांहोंजी ॥ हिंसा० ॥ ६४ ॥ जे जीव मार्‌यां में धर्म कहै छै, रुलै काल अनन्तोजी। सूयगडाअङ्ग अध्ययन अठारह में, भाष गया भगवन्तोजी ॥ हिन्सा० ॥ ६५ ॥ थानक करावै छः काय हणने, करै अनन्त जीवां री घातोजी। अहित नो कारण निश्चय हुयो छै, धर्म जाणै तो आवै मिथ्यातोजी ॥ हिंसा० ॥ ६६ ॥ जब कहै म्हे थानक करावां तिण में, जाणाछां एकान्त पापोजी।

तिण कहिवाने पाप कह्यो झूठ बोलै, सदा गोप विगोयो आपोजी ॥ हिन्सा० ॥ ६७ ॥ कोई मनुष्य आन्तरियो छै तिण काले, धन उदकै थानक काजोजी । जो ओ पाप जाणै परभव जातो, इसड़ो कांई कियो अकाजोजी ॥ हिन्सा० ॥ ६८ ॥ घर रो धन देई जीव मराया, ते आर्य न दीसै कांईजी । अनर्थ पण जाण्यो नहीं दीसै, धर्म जाणयो दीसै तिण मांईजी ॥ हिन्सा० ॥ ६९ ॥ हिंसारी करणी में दया नहीं छै, दया री करणी में हिन्सा नाहीं जी । दया ने हिन्सारी करणी न्यारी छै ज्यूं तावड़ो ने छांहीजी ॥ हिन्सा ॥ ७० ॥ और वस्तु में भेल हुवै पिण, दया में नहीं हिन्सा रो भेलोजी । ज्यूं पूर्व ने पश्चिम रो मारग, किण विध खावै मेलोजी ॥ हिन्सा० ॥ ७१ ॥ कोई दया ने हिन्सारी मिश्र करणी कहै, ते कूड़ा कुहेतु लगावैजी । मिश्र थापण ने मूढ मिथ्याती, भोला लोकां ने भरमावैजी ॥ हिन्सा० ॥७२॥ जो हिन्सा कियां मिश्र हुवै तो, मिश्र हुवै पाप अठारो जी । एक फिरयां अठारह फिरै छै, बुद्धिवन्त करज्यो विचारोजी ॥ हिन्सा० ॥ ७३ ॥ जिन मारग री नींव दया ऊपर, खोजी हुवै ते पावैजी । जो हिन्सा कियां धर्म हुवै तो, जल मथियां घी आवैजी ॥ हिन्सा० ॥७४॥ सम्वत् अठारह वर्ष चंवाले, फागुण सुदी नवमी

रविवारोजी। जोड़ कीधी दया धर्म दीपावस, बगड़ी शहर मझारोजी ॥ हिन्सा० ॥ ७५ ॥

॥ दोहा ॥

नमो वीर शासण धणी, गणधर गौतम स्वाम।
त्यां मोटा पुरुषां रा नाम थी, सीझै आत्म काम ॥ १ ॥
त्यां घर छोड़ी संयम लियो, भगवन्त श्री वर्द्धमान।
बारह वर्ष ने तेरह पख, छद्मस्थ रह्या भगवान् ॥ २ ॥
त्यां गोशाला ने चेलो कियो, ते निश्चय अयोग्य साक्षात।
सराग भाव आयो तेह थी, ते पिण छद्मस्थ पणां री बात ॥३॥
तीर्थङ्कर छद्मस्थ थकां, चेलो न करै दीक्षा देवे नाहिं।
धर्मकथा पिण कहै नहीं, जोवो सूत्र रे मांहि ॥ ४ ॥
बारह वर्ष तेरह पक्ष मझे, दीक्षा दे चेलो न कस्यो कोय।
एक गोशाला अयोग्यने चेलो कियो,
निश्चय होणहार टलै नहिं कोय ॥ ५ ॥
तीर्थङ्कर साथे दीक्षा लिये, तिणने दीक्षा दे जिणराय।
पछे केवली हुवे नहीं त्यां लगे, दीक्षा न देवे ताय ॥६॥
गोशाला ने बचावियो, छद्मस्थ पणा रो स्वभाव।
मोह राग आयो तिण ऊपरै, ते विकल न जाणै न्याय ॥७॥
गोशाला ने बचावियो, तिण में मूर्ख थापै धर्म।
सूने चित्त बकवो करै, ते भूला अज्ञानी भ्रम ॥८॥

कहै भगवन्त दीक्षा लियां पछै न कियो किञ्चित पाप प्रमाद
जाणता नै अजाणता कहै, दोष न सेव्यो जिन आप ॥६॥
इम कहि कहि भोला लोकां भणी, नाखै छै फन्द मांय।
तिणरो न्याय निर्णय यथातथ्य कहूं, ते सुणज्यो चित्तलाय

॥ ढाल दूसरी ॥

आयुष टूटो को सान्धो को नहीं रे (एदेशी)

गोशाला ने बचायो वीर सराग थी रे, तिण मांहे धर्म नहीं छै लिगार रे। आ तो निश्चय होणहार टलै नहीं रे, ते भोला न जाणै मूल विचार रे ॥ गो० ॥१॥ कुपात्र ने बचायो वीर सराग थी रे, तिण में म जाणो कोई कूड़ रे। शङ्का हुवे तो भगवती रो अर्थ देखने रे, खोटी श्रद्धा ने करज्यो दूर रे ॥ गो० ॥ २ ॥ भारी कर्मा जीवां ने समझ पड़े नहीं रे, ते तो कुगुरां रे वदलै बोलै कूड़ रे। ताणां ताण में जासो ताणिया रे, वहतो अगाध नदी रे पूर रे ॥ गो० ॥ ३ ॥ गोशालो अधर्मी अविनीतड़ो रे, भारी कर्मो कुपात्र जीव रे। वले दावानल छै जिन धर्मनो रे, दुष्टी घणो है अतीव रे ॥ गो० ॥ ४ ॥ भगवन्त ने झूठा पाड़ण कारणै रे, तिल उखाड़ियो पापी जाण रे। मिथ्यात्व पड़ि वञ्चियो श्रीभगवन्तथी रे, त्यांरी मूल न राखी पापी काण रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ जगत तणा सगला चोरां थकी रे, गोशालो

अधिको चोर निःशंक रे। वली कूड़ कपट तणो तो कोथलो रे, तिण रो करड़ो मिथ्यात तणो छै बंक रे॥ गो०॥ ६॥ तिण ने वीर बचायो बलतो जाणने रे, लब्धि फोरी शीतल लेश्या मूक रे। राग आण्यो तिण पापी ऊपरै रे, छद्मस्थ गया तिण काले चूक रे॥ गो० ॥ ७॥ कोई भेषधारी भागल इसड़ी कहै रे, गोशालेने बचायां हुवो धर्मरे। त्यां घर्म जिनेश्वर नो नहिं ओलख्योरे, ते भूला अज्ञानी भ्रम रे॥ गो० ॥ ८॥ वली भगवन्त तो घर कोड्यां पछै रे, दोष न सेव्यो मूल लिगार रे। प्रमाद किञ्चित् मात्र सेव्यो नहीं रे, वले आस्रव न सेव्यो किण वार रे॥ गो० ॥ ६ ॥ इम कहि कहि सचवाया हुवैरे, पण एकान्त बोलै मृषावाय रे। त्यां धर्म जिनेश्वरनो नहिं ओलख्यो रे, फूटा ढोल ज्यूं बोलै विरुआ वाय रे॥ गो० ॥ १० ॥ ते झूठा बोलै छै सुधबुध बाहिरा रे, त्यांरी श्रद्धारी त्यांने खबर न काय रे। त्यां विकलां री श्रद्धा प्रगट करूं रे, ते भवियण साम्भलज्यो चित्त लाय रे ॥ गो० ॥ ११ ॥ भगवन्त आहार कियो छै जाणने रे, तिण में कहै छै प्रमादास्रव पाप रे। वली निद्रा लीधा में कहै पाप छै रे, ते निद्रा पण लीधी भगवन्त आप रे ॥गो०॥१२॥ प्रमाद न सेव्यो कहै भगवाननैं रे, वली कहता जावे पापी प्रमाद रे।

न्याय निर्णय विकलां रे छै नहीं रे, यूंही करै कूड़ो बकवाद रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ मोह कर्म उदय सावद्य सेविया रे, छद्मस्थ थकां भगवान रे । अजाणपणो ने विम उपयोग छै रे, ते बुद्धिवन्त सुणो सुरत दे कान रे ॥ गो० ॥ १४ ॥ दश स्वप्ना पिण भगवन्त देखिया रे, दश स्वप्नां रो पाप लागै छै आण रे । दश स्वप्नां रो पाप जुओ जुओ रे, शंका म करज्यो चतुर सुजाण रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ कोई कहै भगवन्त घर छोड्यां पछै रे, पाप रो अंश न सेव्यो मूल रे । जो वे स्वप्न देख्यां में पाप परूपसीरे, त्यां रे लेखे त्यांरी श्रद्धा में धूल रे ॥ गो० ॥१६॥ छद्मस्थ थका पड़िकमणो करै रे, ते पाप लागो जाणै ताम रे । जो पाप लाग्यो न जाणै सर्वथा रे, तो पड़िकमणो क्यां ने करै वेकाम रे ॥ गो० ॥ १७ ॥ त्यांरी खोटी श्रद्धा उत्थपती जाणनै रे, झूठ बोलै अज्ञानी पाल पंपाल रे । तीर्थङ्कर तो पड़िकमणो करै नहीं रे, कोई यूं पिण कहै मूरख बाल रे ॥ गो० ॥ १८ ॥ सात प्रकारे छद्मस्थ जाणिये रे, कह्यो छै ठाणाङ्ग सूत्र मांय रे । हिंसा लागै छै प्राणी जीवरी रे, वली लागै मृषा ने अदत्त ताय रे ॥ गो० ॥१९॥ शब्दादिक आस्वादे रागे करीरे, पूजा सत्कार वांछै छै ताय रे । कदे अशनादिक सावद्य भोगवै रे, वागरै जैसो करणी आवै नांय रे ॥

गो० ॥ २० ॥ ये सातूं ही थानक सावद्य रा कह्या रे, छद्मस्थ सेवे छै किणही बार रे। त्यांरो पिण प्रायश्चित यथा योग्य छै रे, जाण अजाण सेव्यां रो करै विचार रे ॥ गो० ॥ २१ ॥ ये सातूं ही बोल न सेवै केवली रे, छद्मस्थ पिण निरन्तर सेवे नांय रे। सेवे तो मोह कर्म उदय हुवां रे, शङ्का हुवे तो जोवो सूत्र मांय रे ॥ गो० ॥ २२ ॥ भगवन्त ने पिण केवल ज्ञान उपनो रे, पहिलै तो छद्मस्थ होता ताम रे। पड़िकमणो पिण जद करताथा पापनो रे, त्यांरै उपयोग न रहतो एकण ठाम रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ गोशाला ने वीर बचायो जिण दिने रे छद्मस्थ होता जिण दिन भगवान रे। मोह राग आयो भगवन्तने जिण दिने रे, निश्चय होणहार टले नहीं आसान रे ॥ गो० ॥२४॥ छद्मस्थ थकां पिण श्रीभगवन्तरै रे, समय समय लागता कर्म सात रे। मोह कर्म अवश्य उदय हुवो रे, कुपात्रने बचाय लियो साक्षात रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ गोशालो दावानल छै श्रीजिनधर्मरो रे. ते दुष्टां में दुष्ट घणो अतीव रे। वले कूड़कपटनो कोथलो तेहनेरे, बचायां रो फल सुणो भव जीव रे ॥ गो० ॥ २६ ॥ गोशालो तेजुलेश्या मेलने रे, दोय साधां री कीधी घात रे। ऊंधो अंवलो बोल्यो भगवानने रे, वीर सूं पड़िवज्जियो मिथ्यात रे।

कुपात्र ने वचायां धर्म किहां थकी रे ॥ २७॥ वली लेश्या मेली छे पापी वीरने रे, त्यांरी पिण एकान्त करवा घात रे। जाण्यो जमाऊ शासन मांहिरो रे, एहवो गोशालो दुष्ट कुपात रे ॥ कु० ॥ २८ ॥ तिण रो प्रश्न पूछ्यां भगवन्त कह्यो रे, सांगणी मांहो तिल वताया सात रे। जव वीरने झूंठा घालण पापिये रे, तिल उखाड़ने कीधी घात रे ॥ कु० ॥ २९॥ तेजूलेश्या सिखाई गोशाला भणी रे, इण लेश्याथी कीधो साधांरी घात रे। वले लोहीठाण कियो भगवन्तने रे, इसड़ो काम कियो पापी साचात रे ॥ कु० ॥ ३० ॥ गोशाले पापी ने वीर वचावियो रे, तो वधियो भरतमें घणो मिथ्यात रे। घणा जीवां ने पापी वोड़या रे, ऊंधी श्रद्धा हिये में घात रे ॥ कु० ॥ ३१ ॥ कूड़कपट करने पापिये रे, झूठा ही शासन दियो थाप रे। अणहूँतो तीर्थङ्कर वाज्यो लोक में रे, वीरनो शासन दियो उत्थाप रे ॥ कु० ॥ ३२ ॥ गोशाला ने वीर वचायो तठा पछे रे, घणा जीवांरै हुवो विगाड़ रे। ओ पापी धाड़ायत हुवो धर्मनो रे, इण गुण तो न कीधो पापी लिगार रे॥ कु० ॥ ३३ ॥ गोशालो पापीड़ो वचियां पछे रे, तिण कीधा पापिड़ै अनेक अकाज रे। तिण दुष्टी ने वचायां धर्म किहांथकी रे, विकलां ने मूल न आवे लाज रे ॥

कु० ॥ ३४ ॥ गोशाले ने बचायां धर्म कहै तिके रे; गोशालारा केड़ायत जाण रे। त्यां धर्म न जाणयो श्रीजिनराजनो रे, यूंही बूड़े अज्ञानी कर कर ताण रे ॥ कु० ॥ ३५ ॥ जो धर्म होसी गोशाले ने बचावियां रे, तो छः ही काय बचायां होसी धर्म रे। तो वे जीव बचायां धर्म गिणे नहीं रे, तो विकलां री श्रद्धा रो निकल्यो भ्रम रे ॥ कु० ॥ ३६ ॥ गोशालेने वीर बचायो तिण विधेरे, श्रावक ने तिण विध बचावे नांय रे। कहै छै तिणहिज विध करै नहीं रे, तो धूल छै त्यांरी श्रद्धा मांय रे ॥ कु० ॥३७॥ पेट दुखै छै सौ श्रावकां तणो रे, जुदा हुवे छै जीव ने काय रे। साध पधास्या छै तिण अवसरै रे, त्यांरे हाथ फेरयां साता थाय रे ॥ कु० ॥ ३८ ॥ लब्धिधारी तो साधु पधास्या देखने रे, गृहस्थ बोल्या छै इम वाय रे। हाथ फेरो त्यांरा पेट ऊपरै रे, नहीं फेरयां तो श्रावक जीवां जाय रे ॥ कु० ॥ ३९ ॥ जब कहै म्हाने तो हाथ न फेरणो रे, ये मरै भावे दुखिया घणा हुवै ताम रे। मरणो जीवणो मूल न वंछणो रे, म्हारै कांई गृहस्थसूं काम रे ॥ कु० ॥ ४० ॥ गोशाला दुष्टी ने वीर बचावियो रे, इण मांही कहै छै निश्चिल धर्म रे। ते श्रावक मरतां ने नवि बचावियां रे, यांरी श्रद्धा रो त्यांहिज काढ्यो भ्रम रे ॥ कु० ॥ ४१ ॥

श्रावक वचायां धर्म गिणै नहीं रे, गोशालो वचायां गिणै धर्म रे। ते विवेक विकल छै सुधबुध बाहिरा रे, ऊंधी श्रद्धासूं बंधै पाप कर्म रे ॥ कु० ॥४२॥ गोशाला पापी दुष्टी रे कारणै रे, लब्धि फोरवी श्रीजगन्नाथ रे। तो श्रावक मरता ने देखने रे, घे कांई न फेरो त्यांरे हाथ रे ॥ कु० ॥ ४३ ॥ धर्म कहै गोशाला ने वचावियां रे, तो पोते छोड़ी कांई धर्मरी रीत रे। सो श्रावक मरतां ने वचावें नहीं रे, त्यां विकलां री विकल मानै प्रतीत रे ॥ कु० ॥ ४४ ॥ गोशाला दुष्टी ने वीर वचा-वियो रे, तिण मांहे धर्म कहै साक्षात रे। सो श्रावक मरतां ने नहीं वचावियां रे, त्यां विकला री विगड़ी श्रद्धा वात रे ॥ कु० ॥ ४५ ॥ श्रावक आखड़ ने मरतो हुवे रे, जिण ने पड़तो झेले नांय रे। गोशालो वचायां कहे धर्म छै रे, ओ पिण अन्धारो त्यांरे मांह रे ॥ कु० ॥ ४६ ॥ ज्ञान दर्शन ने देश चारित्र श्रावक मझे रे, गोशालो तो एकान्त अधर्मी जाण रे। तिणने वचायां धर्म किहांथकी रे, तिणरो न्याय न जाणै मूढ अयाण रे ॥ कु० ॥४७॥ गोशाला ने वचायां रो धर्म छे रे श्रावक वचायां कहे पाप रे। एहवो अन्धारो छै विकलां तणे रे, ऊन्धी श्रद्धारी कर राखी छै थाप रे ॥ कु० ॥ ४८ ॥ बारह वर्ष ने तेरह पख मझे रे, छद्मस्थ रह्या श्रीभग-

वान रे। तिण में एक गोशालाने बचावियो रे, किणने न बचायो श्रीवर्द्धमान रे। कु० ॥ ४९ ॥ गोशाला दुष्टी ने बचावियां रे, जो धर्म कठही जाणै स्वामरे। तो दोनूं ही साध बचावत आपरा रे, वले रात दिन करता ओहिज काम रे। कु० ॥ ५० ॥ गोशाले दुष्टीने बचावियांरे, तिण मांही धर्म जाणे जिनराय रे। दोय साध मरता न राख्या आपरा रे, ओ पिण किण विध मिलसी न्याय रे। कु० ॥ ५१ ॥ अकाले जगतने मरता देखियारे, पिण आडा नहीं दीधा भगवन हाथ रे। जो धर्म हुवे तो भगवन्त आघो न काढतारे, तरण-तारण जगन्नाथरे। कु० ॥ ५२ ॥ अनन्त चौवीसी तो आगै हुई रे, हिवड़ां तो ऋषभादिक चौबीस रे। त्यां तारया भव जीवांने समझायनेंरे, पिण मरता न राख्या श्रीजगदीश रे। कु० ॥ ५३ ॥ एक गोशालो वीर बचावियोरे, ते तो निश्चय ही होणहार रे। मोह राग आयो भगवाननेंरे, तिणरो न्याय न जाणे मूढ़ गिंवार रे। कु० ॥ ५४ ॥ संवत् अठारह लेपने समय रे, आषाढ़ वदी इग्यारस मंगलवार रे। गोशाले पापीने ओलखायवारे, जोड़ कीधी छे मांढा गांव मझार रे। कु० ॥ ५५ ॥

॥ अन्तर ढाल ॥

(समझू नर विरला—देशी)

केई लोग मिथ्याती त्यांनें नहीं ज्ञान, वले पूरो नहीं विज्ञान रे। समझू नर विरला। (आंकड़ी) ॥ आज दोय तीर्थङ्कररै झगड़ो लागो, ते तो सावत्थी नगरी रै वागोरे। स० ॥ १ ॥ ये दोनूँ माहोंमाहीं वाद में बोलै, एक एकरा पड़दा खोलै रे। स० ॥ वीर कहै म्हारो चेलो गोशालो, सोसूं मतकर झूठो झकालोरे। स० ॥ २ ॥ गोशालो कहै हूं थारो चेलो नाहीं, तैं कूड़ी कथी लोकां मांही रे। स० ॥ मैं तो साधपणो थां आगे नहीं लीधो, मैं तो गुरु तोने कदेय न कीधो रे। स० ॥ ३ ॥ वीर कहै गोशालो तीर्थङ्कर नाहीं, तीर्थङ्करना गुण छै मो मांहीरे। स० ॥ गोशालो कहै हूं तीर्थङ्कर शूरो, ओतो काश्यप प्रत्यक्ष कूरोरे। स० ॥ ४ ॥ वीरनें सन्मुख कह्यो गोशालो, तूं तो मो प्रहिली करसी कालोरे। स० ॥ जब वीर कहै सुण रे गोशालो, करसी तूं मो पहिली कालोरे। स० ॥ ५ ॥ आप आप तणा मत दोनूं थापै, एक एक नै माहोमां उत्थापै रे। स० ॥ यामें कुण साचो कुण मृषावाई, केई कहै म्हांने तो खबर न कांई रे। स० ॥

६ ॥ यांमें केई कहै गोशालोजी साचा, यांने किण विध जाणां काचा रे ॥ स० ॥ यांमे उघाड़ी दीसे करामातो, तुरत कीधी वे साधां री घातो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इण देखतां वे इण रा बाल्या होय चेला, इण सूं पाछा न हुआ हेला रे ॥ स० ॥ इण ने खोटो कहतो जब बोलतो सेंठो, पछे अण बोल्यो कांई बैठो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ गोशालोजी बोले गुञ्जार करतो, वीर पाछो बोले सोई डरतोरे ॥ स० ॥ गोशालोजी सिंहतणी पर गुंज्या, वीरना साधु सगला धूज्या रे ॥ स० ॥ ९ ॥ वीर री तो लोकां देख लीधी सिद्धाई, इण में कला न दीखे कांई रे ॥ स० ॥ जो सिद्धाई होवै तो देखावता याने, जब ये पिण ऊभा रहता क्यांने रे ॥ स० ॥ ओ तो इण ऊपर चलायने आयो, इण कोठग बागरै मांयो रे ॥ स० ॥ ओ शूरपणो तो दीसै इण मांई, इण में कमी न दीखे कांई रे ॥ स० ॥ ११ ॥ जब पिण लोकां में हूंतो इसड़ो अन्धारो ते विकलां ने नहीं विचारो रे ॥ स० ॥ ओ गोशालो पाखण्डी प्रत्यक्ष पापी, तिण ने दियो तीर्थङ्कर थापो रे ॥ स० ॥ १२ ॥ केई चतुर विचक्षण था तिण कालो, त्यां खोटो जाण्यो गोशालो रे ॥ स० ॥ ओ गोशालो कुपात्र मूढ मिथ्याती, तिण कीधी साधां री घातो रे ॥ स० ॥ १३ ॥ क्षमा शूरा अरिहन्त भगवन्त,

त्यांरे ज्ञान तणो नहीं अन्त रे ॥ स० ॥ ज्यांरा कोड़ जिह्वा कर नित्य गुण गावे, त्यांरो पार कदे नहीं आवे रे ॥ स० ॥ १४ ॥ यां लखणां कर तीर्थङ्कर पिछाणो, ते तो भगवन्त महावीर जाणो रे ॥ स० ॥ ये तो अति-शय गुणे करी पूरा, यांने कदेय म जाणो कूड़ा रे ॥ स० ॥ १५ ॥ केई तो भगवन्त ने जिण जाणे, ते तो एकान्त त्यांने वखाणे रे ॥ स० ॥ केई अज्ञानी गोशाले री ताणे, ते तो जिन गुण मूल न जाणे रे ॥ स० ॥१६॥ केई कहे दोनूं ही साचा, आपां थी दोनूं ही आछा रे ॥ स० ॥ आपां ने तो यांरे झगड़े में न पड़णो, सगलांने नमस्कार करणो रे ॥ स० ॥ १७ ॥ केई कहे दोनूं ही कूड़ा ते कर रहा फैल फितूरा रे ॥ स० ॥ आप आप तणो मत बांधन काजे, तिणसूं झगड़ा करता नहीं लाजे रे ॥ स० ॥ १८ ॥ ओ तो पेट भरण रो करे छै उपाय, लोकां ने घाले छै फन्द मांय रे ॥ स० ॥ इण विध केई बोले अज्ञानी, ते तो भाखा काढ़े मन-मानी रे ॥ स० ॥ १९ ॥ इसड़ो अन्धारो हूंतो तिण काले, अशुभ उदय आपो न सम्भालें रे ॥ स० ॥ तीर्थङ्कर थकां हुआ इसड़ा वेहदा, ते तो अनादि काल रा सेंहदा रे ॥ स० ॥ २० ॥ इम साम्भल उत्तम नर नारी, अन्तरङ्ग मांही करज्यो विचारी रे ॥ स० ॥

पक्षपात किण री मूल नहीं कीजे, साचो मारग ओलख लीजे रे ॥ स० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

दोय उपकार जिन भाषिया, त्यांरो बुद्धिवन्त करो विचार ।
तिणमें एक उपकार छै मोक्षरो, बीजो संसारनो उपकार ॥
उपकार करै कोई मोक्षरो, तिणरी आज्ञा दे आप ।
उपकार करै संसार नो, तिणमें आप रहे चुपचाप ॥२॥
उपकार करै कोई मोक्षरो, कुण कुण संसारनो उपकार ।
त्यांरा भाव भेद प्रगट करूं, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ग्यारहवीं ॥

(आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में—एदेशी)

ज्ञान दर्शन चारित्र ने वली तप, यां च्यारां री कोई करै उपकारो । तिण ने निश्चय ही निर्जरा धर्म कह्यो जिन, वली जिन आज्ञा छै श्रीकारो । ओ तो उपकार निश्चय ही मुगत रो ॥ १ ॥ ॥ आंकड़ी ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ने तप, यां च्यारां बिना कोई करै उपकार । तिण ने निश्चय ही धर्म नहीं जिन भाष्यो, वली जिन आज्ञा नहीं छै लिगार । ओ उपकार संसार तणो छै ॥ २ ॥ ॥ आंकड़ी ॥ संसार तणो उपकार करै छै,

तिणरे निश्चय ही संसार बधै ते जाण । मोक्ष तणो उपकार करै छै, तिणने निश्चय ही नेड़ो होसी निर्वाण ॥ ओ० मु० ॥ ३ ॥ कोई दरिद्री जीव ने धनवन्त कर दे, नवजात रो परिग्रह देई भरपूर । वले विविध प्रकारे साता उपजावे, उणरो जावक दारिद्र कर दियो दूर ॥ ओ० सं० ॥ ४ ॥ छः काय रो शस्त्र जीव अव्रती, साता पूछै ने साता उपजावै । त्यांरी करै वैयावच्च विविध प्रकारे, तिण ने तीर्थङ्कर देव तो नहीं सरावे ॥ ओ० सं० ॥ ५ ॥ गृहस्थ री साता पूछ्यां ने वैयावच्च कियां में, तेथी साधु होय जावै अनाचारी । आ साता पूछ्यां ने वैयावच्च कियां में, पिण जिन आज्ञा नहीं छै लिगारी ॥ ओ० सं० ॥ ६ ॥ साता पूछ्यां तो साधु ने पाप लागै छै, तो साता कियां में धर्म किहां थी होवे । पिण मूढ मिथ्याती विवेक रा विकल, श्री जिन आज्ञा साहमो नहीं जोवै ॥ ओ० सं० ॥ ७ ॥ कोई मरता जीवां ने जीवां बचावे, झाड़ा झपटा कर औषध देई ताम । वले अनेक उपाय करने तिण ने, मरतो राख्यो साजो कियो तमाम ॥ ओ० सं० ॥ ८ ॥ कोई मरता जीवां ने सूँस करावे, चारूं शरणा देई ने करावे सन्थारो । ज्ञान ध्यान मांही परिणाम चढावे, न्यातीला सूँ देवे मोह उतारो ॥ ओ० मु० ॥ ९ ॥ श्रावक रो खाणो पीणो छै

सर्व अव्रत में, ते सेवे सावद्य योग व्यापारो। वले नव ही जातरो परिग्रह अव्रत में, तिण ने सेवे छै कोई बारंबारो॥ ओ० सं०॥ १०॥ श्रावक रो खाणो पीणो छै सर्व अव्रत में, तिण ने त्याग करावे चढावे वैरागो। वले नवही जात रो परिग्रह अव्रत में, ते छोडे छुडावे त्यांरे शिरै भागो॥ ओ० मु०॥ ११॥ कोई लायसूं बलता ने काढ बचायो, वले कूवे पड़तां ने बचायो। वले तालाव में डूबता ने बारै काढै, वले ऊंचा थी पड़तां ने झाल लियो तायो॥ ओ० सं०॥ १२॥ जन्म मरण री लायथी बारै काढै, भाव कूवा मांयथी काढै बारै, नरकादि नीच गति पड़तां ने राखे, संसार समुद्रथी बारै काढै उद्धारे॥ ओ० मु०॥१३॥ किणरै लाय लागी घर बले छै तिण में, नाना मोटा जीव बल जाय। कोई लाय बुझाई त्यांने बारै काढै, घणां रे साता दीधी बपराय॥ ओ० सं०॥ १४॥ किणरै तृष्णा लाय लागी घट भीतर, ज्ञानादिक गुण बले त्यां मांई। उपदेश देई तिण री लाय बुझावे, समय समय साता दीधी बपराई॥ ओ मु०॥ १५॥ कोई टावर ने पालने मोटो करे छै, आछी आछी वस्तु तिणने खवाय। वले मोटे मण्डाण करी परणावे, धन माल देवे कमाय कमाय। ओ० सं०॥ १६॥ कोई बेटां ने रूड़ो रीत

समझावै, धन माल सगलोही देवै छुड़ाय। काम भोग स्त्री आदिक खावो ने पीवो, भली भांति सूं त्याग करावै ताय॥ ओ० मु०॥ १७॥ कोई मात पितारी सेवा करे दिन रात, वली मनमान्या भोजन त्यांने खवाई। वली कांवड़ कान्धे लियां फिरे त्यांरी, वली वेहूं टङ्कांरो स्नान करावै ताई॥ ओ० सं०॥ १८॥ कोई माता पिता ने रूड़ी रीते, भिन्न भिन्न करने धर्म सुणावै। ज्ञान दर्शन चारित्र पमावै, त्यांने भोग शब्दादिक सर्व छुड़ावै॥ ओ० मु०॥ १९॥ जिण रो खाणो पीणो गहणो अव्रत में छै, तिण ने मनमाने ज्यूं खवावै पिवावै। वली मांगे तिण ने धन धान्य आपे, वली विविध पणे तिण ने साता उपजावै॥ ओ० सं०॥२०॥ जिण रो खाणो पीणो गहणो अव्रत में छै, उपदेश देई ने परहो छुड़ावै। तिण रे ज्ञानादिक गुण घट मांही घाले, तिण री तृष्णा लाय ने परी बुझावे॥ ओ० मु०॥ २१॥ किणरा वाला काढे किणरा कीड़ा काढै, वली लटां जूं आदिक काढे छै ताही। कानसलायां बुगादिक काढै, घणी साता उपजावै शरीर मांही॥ ओ० सं०॥ २२॥ किणरे वाला कीड़ा ने लटां जूं आदिक शरीर में उपना जीव अनेक। तिण मे वारे काढण रा त्याग करावै, कहे शरीर वारे काढना नहीं एक॥

ओ० मु० ॥ २३ ॥ गृहस्थ भूलो उजाड़ वन में, अटवी ने वले ऊजड़ जावै । तिण ने मार्ग बतायने घरे पहुंचावै, वले थाको हुवै तो कांधे बैठावै ॥ ओ सं० ॥ २४ ॥ संसार रूपिणी अटवी भूल्या ने, ज्ञानादिक मारग शुद्ध बतावै । सावद्य भारने अलगो मेलै, सुखि सुखि शिवपुर में पहुंचावै ॥ ओ० मु० ॥ २५ ॥ नाग नागिनी हूंता बलता लकड़ा में, त्याने पार्श्वनाथजी काढ्या कहै बारै । अग्नि में बलतां ने राख्या जीवता, पाणी अग्नि आदिक जीवां ने मारै ॥ ओ० सं० ॥२६॥ पार्श्वनाथजी घर छोड़ काउसग कीधो, जब कमठ उपसर्ग कर वर्षायो पाणी। जब पद्मावती हेठै सिंहासन कीधो, धरणीन्द्र छत्र कियो शिर आणी ॥ ओ० मु० ॥ २७ ॥ नाग नागिनी ने नवकार सुणावै, चारूं शरणा ने सूंस कराया जाणी । ते शुभ परिणामां सूं मरनै हुआ, धरणीन्द्र ने पद्मावती राणी ॥ ओ० मु० ॥२८॥ सुग्रीव सूं उपकार कियो राम ने लछमण, जब सुग्रीव हुवो त्यांरो सखाई । सीता री खबर आण रावण ने मरायो, पाछो उपकार कियो भीड़ आई ॥ ओ० सं० ॥ २९ ॥ कोई दुष्टी जीव जूं जीव ने मारतो थो, तिण ने वर्जने जूं ने बचाई । ते जूं रो जीव मनुष्य हुओ जब, इण रो कजियो इण पिण दियो मिटाई ॥ ओ० सं० ॥ ३० ॥

धणी रे मुंडा आगे सेवक मरने, धणी ने कुशले खेमे जीवतो काढै । जब धणी तूठ्यो थको रिजक रोटी दे, इह लोक रो काम सिराड़े चाढै ॥ ओ० सं० ॥ ३१ ॥ दोय इन्द्र आया कौणक री भीड़ी, कौणक रै साता करदी ताम । एक कोड़ अस्सी लाख मनुष्यांने मारी; कौणक रो सुधार्‍यो काम ॥ ओ० सं० ॥ ३२ ॥ एकी का जीवां ने अनन्ती वार बचायो, त्यां पिण इणने अनन्ती वार बचायो । आमा सामा उपकार संसार ना कीधा, त्यां सूं जीव री गर्ज सरै नहीं कायो ॥ ओ० सं० ॥ ३३ ॥ हांती नेवतादिक दे आमा सामा, लाडु खोपरादिक दे आमा सामा । अथवा कोई आधा पण देवै, इत्यादिक अनेक संसारना कामा ॥ ओ० सं० ॥ ३४ ॥ संसार ना उपकार करे तिण सेती, कदा ते पिण पाछो करै उपकारो । एतो एक एक जीवां सूं, कीधो छे अनन्त अनन्ती वारो ।

आ श्रद्धा श्री जीनिवर भाषी ॥ ३५ ॥ आंकड़ी ॥ संसारना उपकार सबही फीका, ते तो थोड़ा में विलय होय जावै । संसारना उपकार फीका छे त्यांसूं, मुक्ति तणा सुख कोय न पावै ॥ ओ० ॥ ३६ ॥ संसार तणो उपकार कियां में, कोई मूढ मिथ्याती धर्म बतावै । श्रीजिन मारग ओलखियां विन, ज्यूं मनमाने गालांरा

गोला चलावै । आ० ॥ ३७ ॥ जितरा उपकार संसार तणा छै, जे जे करै ते मोह वश जाणो। साधु तो त्यांने कदे न सरावै, संसारी जीव तिण रा करै बखाणो ॥ आ० ॥ ३८ ॥ संसार रो उपकार कियां में, जिन धर्म रो अंश नहीं छै लिगार । संसार तणा उपकार किया में, धर्म कहै ते तो मूढ गिंवार ॥ आ० ॥३९॥ किणही जीव ने खप करने बचायो, किणही उपाय ने कीधो मोटो । जो धर्म होसी तो दोयां ने होसी, जो टोटो होसी तो दोयां में टोटो ॥ आ० ॥४०॥ बचावणवाला बिचे तो पालणवालो, साम्प्रत दीसे उपकार मोटो । यांरो निर्णय कियां बिन धर्म कहै छै, त्यांरो मत निश्चिवल खोटो ॥ आ० ॥४१॥ बचावणवालो उपजावणवालो, ये तो दोनूं संसार तणा उपकारी । एहवो उपकार करै आमा सामा, तिण में केवलियां रो धर्म नहीं छै लिगारी ॥ आ० ॥४२॥ जीव ने जीवां बचावे तिण सूं, बंध जावै तिण सूं द्वेष विशेष । जो पर भव मांही आय मिलै तो, देखत पाण जागै तिण सूं द्वेष ॥ आ० ॥ ४४ ॥ मित्र सूं मित्रपणो चलियो जावे, वैरी सूं वैरीपणो चलियो जावै । ए तो राग द्वेष कर्मां रा चाला छै, श्रीजिन धर्म मांहीं नहीं आवे ॥ आ० ॥४५॥ कोई अनुकम्पा आणी घर मण्डावे, कोई मण्डाता घर

ने देवै भंगाय । ए तो प्रत्यक्ष रागने द्वेष उघाड़ो, ते आगै लागा चलिया जाय ॥ आ० ॥ ४६ ॥ कोई तो पैलेरा काम भोग वधारै, कोई काम भोग री देवै अन्तराय । ओ पिण राग ने द्वेष उघाड़ो, ते आगै लागा दोनूँ चलिया जाय ॥ आ० ॥४७॥ कोई पैला री धन गमियो बतावै, वले स्त्री आदिक पण गमिया बतावै । कोई लाभ ने टोटो लोकां ने बतावै, तिण सूं आगै लाग्यो राग चलियो जावै ॥ आ० ॥ ४८ ॥ कोई वैद्यगरी करने लोकां रो, रोग गमावै ने जीवां बचावै। ओ उपकार लोकां सूं कीन्हो, आगे लग्यो राग चलियो जावै ॥ आ० ॥ ३६ ॥ कही कही ने कितरा एक कहूं, संसार तणा उपकार अनेक । ज्ञान दर्शन चारित्र तप विना, मोक्ष रो उपकार नहीं छै एक ॥ आ० ॥ ५० ॥ संवर ना वीस भेद कह्या जिन, निर्जरा तणा भेद कह्या छै बार । ए बत्तीस भेद उपकार मुक्ति रो, और मोक्ष रो उपकार नहीं छै लिगार ॥ आ० ॥५१॥ संसार ने मोक्ष तणो उपकार, समदृष्टि हुवै ते न्यारा न्यारा जाणै। पण मिथ्याती ने खबर पड़े नहीं सूंधी, तिण सूं मोह कर्मवश ऊन्धी ताणै ॥आ०॥५२॥ संसारने मोक्ष रो उपकार ओल-खावण, जोड़ कीधी खेरवा शहर मझार। संवत् अठारह वर्ष चोपनै, आसोज सुदी बीज शुक्रवार ॥आ० ॥५३॥

॥ दोहा ॥

चौबीसमा जिनवर हुवा, महावीर विख्यात ।
पहिली वाणी निष्फल गयी, हुवो अच्छेरो अचरज बात।१।
जम्भिका ग्राम बाहिरे, श्याम नाम कर्षणीरे खेत ।
तिहां शाल नाम वृक्ष छै, गहर गम्भीर पान समेत ॥२॥
तिण शाल वृक्ष हेठे आविया, भगवंत श्रीवर्द्धमान ।
वैशाख सुदी दशमी दिने, उपनो केवल ज्ञान ॥३॥
केवल महोत्सव करवा भणी, तिहां देवता आया अनेक ।
पिण मनुष्यांनेठोकपड़ीनहीं, तिणसूं मनुष्य न आयो एक ॥
देवतामें वाणी वागरी, थिति सांचववा काम ।
कोई साध श्रावक हुवो नहीं, तिणसूंवाणीनिष्फलगईआम
जो धन थकी धर्म निपजे, तो देवता पिण धर्म करन्त ।
वीर वाणी सफली करै, मनमांहीं पिण हर्ष धरन्त ॥६॥
व्रत पचखाणनहुवे देवतातणे धनसूं पिण धर्म न थाय ।
तिणसूंवीरवाणीनिष्फलगयी, तिणरोन्यायसुणोचित्तलाय ॥७

॥ ढाल बारहवीं ॥

(शील सुरतरु वर सेविये—देशी)

जिन धर्म हुवे सोनइया दियां, तो देवता देता हाथो हाथजी । पूरता मन री मनरली, वीर वाणी निष्फल न गमातजी । भवि करज्यो पारखा जिन धर्म री ॥१॥

(आंकडी) रत्न हीरा ने माणिक्य पन्ना, मन माने ज्यूं देवता देतजी ॥ भ० ॥ २ ॥ धन दियां धर्म हुवे जिन भाषियो, तो देवता दान दे दकचालजी । यों कियां वाणी सफली हुवै, तो अच्छेरो न हुवे तिणकालजी ॥ भ० ॥ ३ ॥ धन धान्यादिक लोकां ने दियां, ए तो निश्चय छो सावद्य दानजी । तिण में धर्म नहीं जिन-राज रो, ते भाष्यो छे श्रीभगवानजी ॥ भ० ॥ ४ ॥ जो जीव बचायां धर्म हुवे, ओतो देवता रै आसान जी । अनन्ता जीव बचायने, वाणी सफल करता देव आनजी ॥ भ० ॥ ५ ॥ असंख्याता समदृष्टि देवता, एकेको बचा-वतो अनन्तजी । जो धर्म हुवे तो आघो न काढता, वीर वाणी सफल करंतजी ॥ भ० ॥ ६ ॥ साध श्रावक नो धर्म व्रत में, जीव हणवारा करे पचखाणजी । ओ धर्म देवता थी न हुवे, तिण सूं निष्फल गई वीर वाण जी ॥ भ० ॥ ७ ॥ जीवांने जीवां बचावियां, हुवै संसार तणो उपकारजी । यूं तो वाणी सफल न हुवे वीरनी, धर्म नो अंश नहीं छे लिगारजी ॥ भ० ॥८॥ असंयति ने जीवां बचावियां, वले असंयति ने दियां दानजी । इम करतां वीर वाणी सफली हुवे, ओ तो देवता रै आसानजी ॥भ०॥९॥ कुपात्रने जीवां बचावियां, कुपात्रने दियां दान जी । ओ सावद्य कर्त्तव्य संसार नो, भाख्यो छे श्रीभग-

वानजी ॥ भ० ॥१०॥ उत्तराध्ययन अट्ठावीसमें, मोक्ष ना मार्ग भाष्या च्यारजी। बाकी सर्व कामा संसार ना; सावद्य योग व्यापारजी ॥ भ० ॥ ११ ॥ धर्म हुवे सावद्य दान में, असंयति ने बचायां हुवे धर्मजी। ते निश्चय समदृष्टि जीवड़ा, ओ धर्म कर काटे कर्मजी ॥ भ० ॥ १२ ॥ कर्म काटे एह सावद्य धर्म सूं, एहवा सावद्य कामा अनेकजी। ते तो थोड़ासा प्रगट करूं, ते सुणज्यो आण विवेकजी ॥ भ० ॥१३॥ मच्छ गलागल लग रह्यो; सारा द्वीप समुद्रां मांयजी। मोटो मच्छ छोटा ने भखे; उण सूं मोटा मोटा उण ने खायजी ॥ भ० ॥ १४ ॥ जो उद्यम करे एक देवता, एक दिन में बचावे अनेक जी। धर्म हुवै तो आवो काढै नहीं, ओ तो छे देवता में विवेकजी ॥ भ० ॥ १५ ॥ जीव बचायां अभयदान हुवे तो, अभयदान घणां ने देतजी। धर्म जाणे जीव बचावियां, देव भव में पिण लाहो लेतजी ॥ भ० ॥१६॥ मछला बचावे एक दिन मझे, लाखां क्रोड़ां ही गिणियाई न आयजी। इण में धर्म हुवे जिनराज रो, तो देवता देवे बचायजी ॥ भ० ॥ १७ ॥ मच्छ आगा सूं मच्छ छोड़ावियां, उणरे पड़ती जाणें अंतरायजी। तो अचित्त मच्छला उपाय ने, उण ने पिण देवे खवायजी ॥भ०॥१८॥ जो धर्म हुवे माछला बचावियां, माछलाने

पोष्यां हुवे धर्मजी। जो धर्म हुवे देवता थको, यूँ कर कर काटै कर्मजी ॥भ०॥१९॥ जो धर्म हुवे तो देवता, असंख्याता माछला बचायजी। असंख्याता पोषे माछला देवता, आलस्य पण न करै तायजी ॥ भ० ॥२०॥ पृथ्वी पाणी तेउ वायु मझे, जीव कह्या असंख्यातजी। वनस्पति में जीव अनन्त छै, यांने पण देव बचातजी ॥ भ० ॥ २१ ॥ तीन विकलेन्द्रिय मनुष्य तिर्यञ्च ने, बचायां धर्म जाणे तो देवजी। तो त्यांने ही बचावण री खप करै, समदृष्टि देवता स्वयमेवजी ॥ भ० ॥ २२ ॥ नाहर चीता आदिक दुष्ट जीव छै, करै गाय आदिक री घातजी। गाय आदिक ने तो खवावै नहीं, त्यांने पिण देव अचित खवातजी ॥ भ० ॥ २३ ॥ जीव जीव तणो भक्षण करै, त्यांने बचावै अचित खवायजी जो यूं कियां में धर्म निपजै, तो देवता करै ओहिज उपायजी ॥ भ० ॥२४॥ अढ़ाई द्वीप में मनुषां तणै, घर में आरम्भ करै जाणजी। ते तो कत्ल करै जीवां तणी, छः ही काय तणो घमसाणजी ॥ भ० ॥२५॥ नित्य एक एक घर में जीवो, आरम्भ हुवै दिन रातजी। छेदन भेदन करै निलोतरी, करै अनन्त जीवां री घातजी ॥ भ० ॥ २६ ॥ दलणो पीसणो ने पोवणो, घर घर चूल्हो धुकावै तासजी। आचोट कूटो करै छः कायनो, करै अनन्त जीवां री

विनाशजी ॥ भ० ॥२७॥ एकेका समदृष्टि देवता, त्यांरी शक्ति घणी छै अत्यन्तजी अढ़ाई द्वीपनो आरम्भ मेटने, बचावै जीव अनन्तजी ॥ भ० ॥ २८ ॥ अढ़ाई द्वीपना मनुष्यां भणी, भूख तृषा न राखं सीयजी । अचित अन्न पाणी निपाय ने, सगलां ने तृप्त करै सीयजी ॥ भ० ॥ २९ ॥ विविध प्रकार ना भोजन करै, विविध प्रकार ना पकवानजी । खादम स्वादम विविध प्रकारना, विविध प्रकार ना खानपानजी ॥ भ० ॥ ३० ॥ शाक व्यञ्जन विविध प्रकार ना, फल नीलोती विविध प्रकारजी । मनशा भोजन सगला मनुष्यां भणी, करावै देवता बारम्बारजी ॥ भ० ॥ ३१ ॥ ठाम ठाम अचित्त पाणी तणा, कुण्ड भर भर राखै साम्हजी । वले भोजन विविध प्रकार ना, त्यांरा ढिगला करै ठाम ठामजी ॥ भ० ॥ ३२ ॥ चारों आहार अचित्त निपायने, दीधां हुवै धर्म ने पुण्य तामजी । धर्म हुवै जीव बचावियां, तो देवता करता ओहिज कामजी ॥ भ० ॥ ३३ ॥ देवता खाणो देवै मनुष्यां भणी, तो खेत रो आरम्भ टल जायजी । वले गहणा कपड़ा देवै देवता, तो घणा जीव मरै नहीं तायजी ॥ भ० ॥३४॥ घर हाट हवेलियां महलायतां, इत्यादिक कमठाणा तायजी । ए पिण निपजाए देवी देवता, तो अनन्त जीव मरता रह जायजी ॥ भ०

॥ ३५ ॥ ते छावणा लीपणा न पड़ै, ते तो सुन्दर ने शोभायमानजी। ते पिण दीसै घणा रलियामणा, देवतां ने करणा आसानजी ॥ भ० ॥३६॥ एही करणी कियां धर्म निपजै, तो देवता आघो न काढन्तजी। आ करणी कर कर्म काटने, काम सिराड़ै चाढन्तजी ॥ भ० ॥ ३७ ॥ दान दियां ने जीव बचावियां, जो कर्म तणो होय शोषजी। तो दान दे जीव बचाय ने, देवता पिण जावै मोक्षजी ॥ भ० ॥ ३८ ॥ अनेराने दियां पुण्य निपजै, देवता रै हुवै पुण्य रा थाटजी। वले धर्म हुवै जीव बचावियां, देवता मोक्ष जावै कर्म काटजी ॥ भ० ॥ ३९ ॥ असंयति जीवां रा जीवणो, ते सावद्य जीतव साक्षातजी। तिण ने देवै ते सावद्य दान छै, तिण में धर्म नहीं अंश मातजी ॥ भ० ॥ ४० ॥ धर्म हुवै तो सगला मनुष्यां तणा, रत्न जड़ाा कर दे महल जी। ते पिण थोड़ा में निपायदे, देवता ने करतां सहलजी ॥ भ० ॥४१॥ खाणो पीणो गहणो कपड़ादिक, गृहस्थ तणा सारा काम भोगजी। त्यांरी करै वधोतर तेह ने, वधै पाप कर्मना संयोगजी ॥ भ० ॥ ४२ ॥ काम भोग सारा गृहस्थ ना, दुःख ने दुःख री छै खान जी। त्यांने किंपाक फल री उपमा, उत्तराध्ययन में कही भगवानजी ॥ भ० ॥ ४३ ॥ त्यांने भोगवावै धर्म

जाण ने, तिणरे बंधे छै पाप कर्मजी। तिण में समदृष्टि देवता, अंश मात्र न जाणै धर्मजी ॥ भ० ॥ ४४ ॥ कोई कोई अज्ञानी इम कहै, श्रावक ने पोष्यां हुवे धर्मजी। लाडू खवाय दया पलावियां, तिणरा कट जावे पाप कर्मजी ॥ भ० ॥४५॥ लाडुवां साटै उपवास बेला करै, तिण रा जीवितव्य ने छै धिक्कारजी। तिण ने पोषै छै मोल ले, तिण में धर्म नहीं छै लिगारजी ॥ भ० ॥४६॥ लाडुवां साटै पोषा करै, तिण में जिन भाष्यो नहीं धर्मजी। ते तो इह लोक रै अर्थे करै, तिण रो मूर्ख न जाणै मर्मजी ॥ भ० ॥ ४७ ॥ धर्म हुवे तो समदृष्टि देवता, अचित्त लाडुवादिक निपजायजी। वले पाणी पिण अचित्त निपजायने, श्रावकां ने जिमावै धपायजी ॥ भ० ॥ ४८ ॥ यावज्जीव सगला श्रावकां भणी, लाडू आदिक अचित्त खवायजी। अढ़ाई द्वीप रा श्रावकां भणी, दया पलाय पोषो करायजी ॥ भ० ॥ ४९ ॥ त्यां ने आरम्भ करवा दे नहीं, कल्पै ते देवता देतजी। धर्म हुवै तो आघो न काढता, यो पिण देवता लाहो लेतजी ॥ भ० ॥ ५० ॥ श्रावकां ने वस्तु हुवै चाहती, ऊणायत न राखै कायजी। धर्म हुवै तो आघो काढ़ै नहीं, त्यांरे कमी न दीसै कायजी ॥ भ० ॥ ५१ ॥ जो धर्म हुवै श्रावक ने पोषियां, तो देवता पण करै यो

धर्मंजी । असंख्याता श्रावक पोषने, काटता निज पाप मे कर्मंजी ॥ भ० ॥ ५२ ॥ असंख्याता द्वीप समुद्र में, असंख्याता श्रावक छै तामजी । त्यांने पोषै समदृष्टि देवता, जो जाणै धर्म नो कामजी ॥ भ० ॥ ५३ ॥ श्रावक नो खाणो पीणो सर्वथा, अव्रत में कह्यो छै आमजी । तिण सूँ समदृष्टि देवता, एहवो किम करसी कामजी ॥ भ० ॥५४॥ शक्र इन्द्र ने ईशान इन्द्र छे, तिरछा लोक-तणा सरदारजी । हाल हुक्म छै सगलां ऊपरे, असंख्याता द्वीप समुद्र मझारजी ॥ भ० ॥५५॥ मच्छ गलागल लग रह्यो, सारा द्वीप समुद्रां मांयजी । जो धर्म हुवै जीव बचावियां, तो इन्द्र थोड़ा में देता मिटायजी ॥ भ० ॥५६॥ भगवन्त कह्यो हुवै इन्द्र ने, जीव बचावियां धर्म होयजी । तो दोनूं इन्द्र जीव बचावता, आलस्य नहीं करता कोयजी ॥ भ० ॥ ५७ ॥ मच्छ मच्छ आगा सूं छुड़ायने, मच्छां ने देता जीवां बचायजी । त्यांने पिण भूखां नहीं मारता. अचित्त भक्ष कर देता खवाय ज़ी ॥ भ० ॥५८॥ यूं कियां जिन धर्म निपजै, तो भगवन्त सिखावता आपजी । वले आज्ञा देता तेहने, वसे चौड़े करता आहिज थापजी ॥ भ० ॥ ५९ ॥ जीव ने जीवां बचावियां, ओ तो संसार नो उपकारजी । अठै जिन आज्ञा जावक नहीं, धर्म पिण नहीं छै लिगारजी

भ० ॥ ३० ॥ छः कायरा शस्त्र बचावियां, छः काया नो वैरी होयजो । त्यारां जीवितव्य पिण सावद्य कह्यो, त्यांने बचायां धर्म न होयजी ॥ भ० ॥ ६१ ॥ असंयतीरा जीवणा मझे, धर्म नहीं अंशमातजी । वली दान देवै छै तेहने ते पिण सावद्य साक्षातजी ॥ भ० ॥६२॥ दान देवो ने जीव बचायवो, ओ तो देवता रे आसानजी। जो यूं कियां धर्म हुवै तो देवता, जाय पंचमी गति प्रधानजी ॥ भ० ॥६३॥ जीव बचावणो ने सावद्य दान ने ओलखायो पुर शहर मझारजी । संवत् अठारह ने वर्ष सतावनै, कार्तिक बदी चौदस ने शुक्रवारजी ॥ भ० ॥ ६४ ॥

॥ इति श्री वृद्ध सिद्धान्त सारोपरि अनुकम्पा की चौपाई समाप्त ॥

॥ दोहा ॥

भेषधारी भूल्या थका, त्यारे दया नहीं घट मांय।
हिंसा धर्म परूपियो, बिना सूत रे न्याय ॥१॥
दया दया मुख सूं कहै, पिण दया री खबर न काय।
भोलां ने पाड्या भ्रम में, ते हणे जीव छः काय ॥२॥

हिंसा धर्म परूपता, फिरता बोलै बैण।
आप डूबे अनेरांने डुबोयने, त्यांरा फूटा अभ्यन्तर नैण ॥३॥
हंसा धर्म परूपियो, तिण सूं डूबा जीव अनेक।
ते खोटी श्रद्धा प्रकट करूं, सो सुणज्यो आण विवेक ॥४॥

॥ ढाल तेरहवीं ॥

(आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में—एदेशी)

श्रावक ने मांहो मांही छः काय खुवावे, छः काय मारी ने जिमावे। ए जीव हिन्सा रो राहज खोटो, तिण मांही धर्म अनार्य बतावे॥ यां हिन्सा धर्म्यां रो निर्णय कीजो॥ १॥ छः काय जीवां रो तो घमसाण कीधो, जिमाय कियो उण ने कर्मां सूं भारी। दोनां-कानी जोयां दीसे दिवालो, तिण मांहे धर्म कहे भेष-धारी॥ यां०॥ २॥ छः काय जीवां ने तो खाधां खुवायां, अरिहन्त भगवन्त पाप बतावे। ये वचन उथा-पीने मिश्र परूपे, तिण दुष्टी रे दिल दया नहीं आवे॥ यां०॥ ३॥ रांकां ने मार धींगाने पोषे, आ तो बात दीसै घणी गैरी। इण मांही दुष्टी धर्म परूपै, तो रांक जीवां रा उठिया वैरी॥ यां०॥ ४॥ पाछल भव पाप उपाया तिण सूं, हुआ एकेन्द्रिय पुण्य परवारी। तिण

रांक जीवां रे अशुभ उदय सूँ, लोकां सहित लागू उठ्या भेषधारी ॥ यां० ॥ ५ ॥ कुपात्र दान में पुण्य परूपै, तिण सूँ लोक हणै जीवां ने विशेषो। कुगुरु एहवा चाला चलावै, ते भ्रष्ट हुआ लेई साधु रो भेषो ॥ यां० ॥ ६ ॥ पूछे तो कहे म्हे मौनज साजां, सानीकर जीव मरावण लागा, हेठलो ओवरो खेंच अलगा हुआ, त्यांने व्रत विहुणा कहीजे नागा ॥ यां० ॥ ७ ॥ कोई माली रे ओडे भूखो आय ऊभो, गाजर मूला धपाय खुवावै। एकान्त पाप उघाड़ो दीसै, तिण मांही मूरख धर्म बतावै ॥ यां० ॥ ८ ॥ बैंगण वालोरादिक अनेक नीलोतरी, कोई राम्धी राम्धी पोषे पर प्राणी। तिण मांही दुष्टी धर्म बतावे, तो दुर्गति जावा रो ए अहनाणी ॥ यां० ॥ ९ ॥ खर्च आघरणी ने भात बरोठी, अनेक आरम्भ कर न्यात जिमावै। ये सर्व संसार तणा कर्त्तव्य छै, तिण मांही मूरख धर्म बतावै ॥ यां० ॥ १० ॥ भेष-धारी श्रावक ने सुपात्र थापै, तिण ने नूंत जिमायां कहै मोक्ष रो धर्मो। उणने सूत्र शस्त्र ज्यूं परगमिया, हिंसा दृढाय बांधे मूढ कर्मो ॥ यां० ॥११॥ कोई बीस पचीस श्रावक न्योतर ने, घरे जाय घरकां ने धंधे लगावे। कोई मूंग दले कोई गेहूं पीसे, कोई अग्नि सूं धूको चूल्हो फंकावै ॥ यां० ॥१२॥ कोई लवण पाणी घाली

आटो गिलोवे. कोई आधण देई करे चोखो टालो। कोई रोटो तवे नांखी खीरां सेंके. कोई तरकारी रांध लेवे तत्कालो ॥ यां० ॥१३॥ छः काय जीवां री हिंसा करने. अनेक चीजां रांधी कीधी रसालो। पछे दांतण कराय ने आगे वेसाणे, वाजोट देई ऊपर मेले थालो ॥ यां० ॥ १४ ॥ पछे भोजन पुरसी ने भेला बैठ्या, आप आप तणा पेट सगलाई भरिया। भेषधार्यां सहित श्रावकां ने पूछीजे, थामें कुण कुण डूबा ने कुण कुण तिरिया ॥ यां० ॥ १५ ॥ जब जीमणवाला ने तो पाप बतावे, हिन्सा करणवाला ने कहे पापी। जिमावणवाला ने धर्म कहे छे, आ श्रद्धा भेषधार्यां थापी ॥ यां० ॥ १६ ॥ जीमणवाल रे ने हिंसावाला रे, आ पाप री उत्पत्ति किण सूं चाली। वली छः काय रा जीव मुवा त्यांरो, न्योत जिमावणवालो दलालो ॥ यां० ॥ १७ ॥ इण पाप दलाली में धर्म परूपे, जे पड़ गया मोह मिथ्यात्व अन्धेरे। ते प्रत्यक्ष हिंसा धर्मी अनार्य, केई डूब गया त्यां कुगुरां रे फेरे ॥ यां० ॥१८॥ श्रावक ने न्योत जिमावे तिण में, धर्म कहे मूढ विना विचारो। मुंहपति बान्धी ने मीठा बोले, पिण जीभ वहे ज्यूं तीखी तरवारो ॥ यां० ॥ १९ ॥ किण ही जीव हणतां ने शङ्का आवे, तो तुरन्त हणे सुण कुगुरां री वाणी। पहले

हिन्सा कियां माझ धर्म बतावे, तो कुगुरु बाणी जेहवी बहतो घाणी ॥ यां० ॥ २० ॥ किण ही रांक भिखारी ने दान उदकियो, उदकियो दान श्रावक ने दिरावे । धनवन्त धर्म रो लेवण लागा, तो रांकां रे हाथ काठा सूं आवे ॥ यां० ॥ २१ ॥ लाडू खोपरा रोकड़ नाणो, सानीकर सामग्री में दिरावे । कुगुरु एहवा चाला चलावे, पेट भरा जाणे पात रे आवे ॥ यां० ॥ २२ ॥ मांय सुखी हुआं गर्भ सुखी हुवे, कूवे पाणी हुवे तो उवारे आवे । इण दृष्टान्ते पेट काजे भेषधारी, आप आप तणी सामग्री में दिरावे ॥ यां० ॥ २३ ॥ जद देवणवाला ने तो धर्म कहे छे, लेवणवाला ने कहे पापज होवे । तो धर्म करण ने मूढ अज्ञानी, सर्व सामग्री में कांय डुबोवे ॥ यां० ॥ २४ ॥ सर्व सामग्री में पाप लगायां, ते पिण होसी निश्चय पापां सूं भारी । साची श्रद्धा ने ऊंधो बोले, तो विकलां ने गुरु मिल्या भेष-धारी ॥ यां० ॥ २५ ॥ धर्म करै ओरां पाप लगावे, यो धर्म कहे मत जाणज्यो रूड़ो । भारी कर्मा लोगां रे अशुभ उदय सूं भेषधार्यां मत काढ्यो कूड़ो ॥ यां० ॥ २६ ॥ कुपात्र दान री चर्चा करतां, पड़िमाधारी श्रावक ने मुख आणे । भोला लोकां ने भ्रष्ट करण ने, ते पिण भेद मिथ्याती न जाणे ॥ यां० ॥ २७ ॥ पड़िमाधारी

श्रावक वहरी ने आणै, तिण ने तो एकान्त पाप बतावै।
दातार ने तो धर्म कहै पिण, प्रश्न पूछ्यां रो जाव न
आवै ॥ यां० ॥२८॥ पड़िमाधारी श्रावक ने पाप लगायो,
तो दातार ने धर्म होसी किण लेखे। उण अव्रत सेवण
ने दान दियो छै, तिण कर्त्तव्य साहमो अज्ञानी न
देखे ॥ यां० ॥ २९ ॥ पड़िमा पड़िमा कर रह्या मूरख
ते पड़िमा तो छै श्रीजिनजी रो धर्मो। पण पड़िमा
आदरतां आगार रह्यो त्यां सूं, सेव्यां सेवायां सूं
बंधसी कर्मो ॥ यां० ॥ ३० ॥
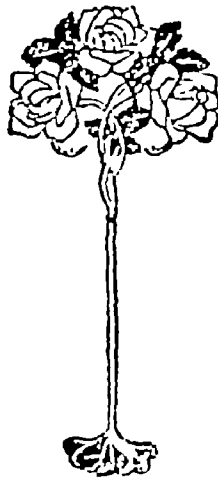
चतुर विचार की ढालां

॥ ढाल पहली ॥

साध ने श्रावक रतारी माला, एक मोटी दूजी न्हो रे। गुण गूँथ्या च्यारूं तीरथ नां, अव्रत रह गयी कानी रे ॥ चतुर विचार करी ने देखो ॥१॥ (आंकड़ी) श्रमणोपासक पड़िमा आदर ने, आपरी न्यात में लीधो रे। तिण ने च्यारूं ही आहार वहिरायां, प्रति संसार न कीधो रे ॥ च० ॥२॥ ए तो गोचरी आपणे छान्दे, जोवो सिद्धान्त सम्भाली रे। दातार ने लेवाल बेहूं में, जिन आज्ञा किण पाली रे ॥ च० ॥ ३ ॥ श्रावक नो खाणो पीणो ने गहणो, अव्रत मांही घाल्यो रे। उववाई सूयगडाअङ्ग मांहि, पाठ उघाड़ो चाल्यो रे ॥ च० ॥४॥ सेवायां अव्रत कर्म जु लागे, ए तो श्रद्धा सूँधी रे। कर्म तणे वश धर्म परूपै, अक्ल तिणांरी ऊन्धी रे ॥ च० ॥ ५ ॥ करण योग विगटावै अज्ञानी, लाग रह्या मत

झूठे रे । न्याय करी समझावे तिण सूँ, क्रोध करी लड़वा ऊठे रे ॥ च० ॥ ६ ॥ खाधां पाप खुवायां धर्म, ए अन्य तीर्थीनो वायो रे । व्रत अव्रतनी खवर न कांई, भोला लोकां ने दे भरमायो रे ॥ च० ॥ ७ ॥ कहे ममता उतारियां धन थी, दे उपजावे साता रे । इसड़ो धर्म बतावे लोकां ने, मोह मिथ्यात में राता रे ॥ च० ॥ ८ ॥ द्रव्ये साता ने भावे साता, मूरख भेद न जाणे रे । सावद्य साता जिन धर्म वारे, ज्ञानी विना कुण पिछाणे रे ॥ च० ॥ ९ ॥ कहे श्रावक रतां रो भाजन, तिण ने पोष्यां नहीं टोटो रे । च्यारू आहार वहिरायने हर्षे, त्यांने लाभज मोटो रे ॥ च० ॥ १० ॥ ए तो श्रद्धा अनार्यकेरी, लोग रिझावण लागा रे । जे कोई साधु कहे तो उणरा, पाचूँ ही महाव्रत भागा रे ॥ च० ॥११॥ रतारो भाजन व्रतां करी ने, गुण आद-रियां हुवो रे । खावो पीवो देवो न लेवो, ए तो मारग जुवो रे ॥ च० ॥ १२ ॥ श्रमण निग्रन्थ ने दानरो दाता, वारहमा व्रत में आण्यो रे । प्रति संसार कियो शुद्ध देने, ज्यांने श्रीमुख वीर वखाण्यो रे ॥ च० ॥ १३ ॥ सामायिक संवर पोषां में, साधां ने हर्ष वहिरावे रे । सौ श्रावक तेला रे पारणे, त्यां ने क्यूँ न जिमावे रे ॥ च० ॥१४॥ ए करणी जिन आज्ञा वारे, व्रतां मांहीं

न आवै रे। सावद्य जोग रा त्याग करी ने, श्रावक कीम जिमावे रे ॥ च० ॥ १५ ॥ श्रावकरा च्यारू विश्रामां, तिण में कोद्यो ते माठो जाणी रे। सावद्य भार ने अलगो मेली, जिन आज्ञा अगवाणी रे ॥ च० ॥ १६ ॥ वार वार दानने प्रशंसे, भेद न जाणे मिथ्याती रे। सूयगडांग अध्ययन इग्यारहमें, कह्यो छः कायारो घाती रे ॥ च० ॥ १७ ॥ दानशाला मण्डाई परदेशी, मोक्ष रो हेतु न जाणी रे। च्यार भाग तिण राज्य रा कीधा, त्यांने साधां नहीं बखाणी रे ॥ च० ॥ १८ ॥ तीनभाग मांहीं पाप कहो थे, एकणरी किम ताणी रे। केशी-कुमार तो मौन जु साधी, च्यारू बरोबर जाणी रे ॥ च० ॥१६ ॥ आनन्द श्रावक व्रत आदरने, एहवो अभि-ग्रह लीधो रे। अन्य तीर्थी ने दान न देऊं, श्रीजिन आगल कीधो रे ॥ च० ॥ २० ॥ छः छण्डी रो आगार राख्यो ते, आपणी जाण कचाई रे। सामायिक संवर पोषा में, ते पिण दे छिटकाई रे ॥ च० ॥ २१ ॥ एक तो त्याग करीने बैठो, एक दानशाला मंडावे रे। भग-वन्त री आज्ञा किण पाली, साधु किण ने सरावे रे ॥ च० ॥ २१ ॥ असंयति ने दान दियां में, धर्म पुण्य कांई थापो रे। श्रीवीर कह्यो भगवती मांहि, निर्जरा नहीं एकान्त पापो रे ॥ च० ॥ २३ ॥ जिण ने अन्न दियां

निपजै पुण्य, तो नमस्कार इम जाणो रे। उलटा पड़ पड़ कर्म म बांधो, कर कर ताणा ताणो रे॥ च०॥ २४॥ निर्णय न आवै नव बोलां रो, तिण रै भोलप मोटो रे। नवूं ही बोल सरीखा न थापै, तिण री श्रद्धा खोटी रे॥ च०॥ २५॥ जितरा द्रव्य सुपात्र वहिरै, तेहिज द्रव्य वताया रे। गाय भैंस धन धान ने धरती, त्यांने क्यूं न जताया रे॥ च०॥ २६॥ कहै करतां पाप देखो म्हे वरजां, धर्म करावां माडाणी रे। मिश्र ठिकाणै मौन जु साधां, ए कुदर्शणांरी वाणी रे॥च०॥ २७॥ साधु श्रावकरो एक ही मारग, दोय धर्म वताया रे। दानूं ही जिन आज्ञा मांहीं, मिश्र अणहुंतो ल्याया रे॥ च०॥ २८॥ मिश्र पक्ष ने मिश्र भाषा, मिश्र गुण ठाणो चाल्यो रे। तिणरो नाम ले ले अज्ञानी, झूठो झगड़ो घाल्यो रे॥ च०॥ २९॥ यां तीनां री तारजु काढ्यो तिण, जिण सिखावण मानी रे। मिश्र धर्म ने किण विध श्रद्दै, भगवन्तना सन्तानी रे॥ च०॥ ३०॥ हाथी घोड़ा रथ बैठी ने, श्रीवीर वन्दन ने चाल्या रे। स्नान किया गहणा फूल पहर्या, ज्यांने श्रीमुखसूं नहीं पाल्या रे॥ च०॥ ३१ पाप तणा फल कड़वा वताया, ए वायक जगन्नाथो रे। सुण सुणने वैराग्य कियो ज्यां, संस लिया जोड़ी हाथो रे॥ च०॥ ३२॥ सूल गाजर

ने काचो माणो, कोई जोरो दावै ले खोसो रे। जे कोई वस्तु छुड़ावे बिना मन, इण विध धर्म न होसी रे ॥च० ॥३३॥ भोगीना कोई भोगजु रून्धे, बले पाड़े अन्तरायो रे। महामोहनी कर्म जु बांधे, दशाश्रुतखन्ध में बतायो रे ॥ च० ॥ ३४ ॥ देव गुरु धर्म रै कारण, मूढ हणे छः कायो रे। उलटा पड़िया जिन मारगथी, कुगुरां दया बहकायो रे ॥ च० ॥ ३५ ॥ धर्मरे कारण श्रावक न्योंतरिया, मन में अधिक हुलासो रे। आरम्भ करी जिमायां धर्म जाणे, तो वोध बीजरो नाशो रे ॥ च० ॥ ३६ ॥ श्रीवीर कह्यो आचारांग मांहीं, ते ओलखायो तन्तसारो रे। समदृष्टि धर्म रै कारण, नहीं करै पाप लिगारो रे ॥ च० ॥ ३७ ॥ एकेन्द्रियमारी ने पंचेन्द्रिय पोषे, तो निश्चय बांधे कर्मों रे। मच्छ गलागल ते चौड़े मांडी, पाखंडियांरो धर्मो रे ॥ च० ॥ ३८ ॥ लोही सूं खरडो पीताम्बर, लोही सूं किम धुपावे रे। तिम हिन्सा में धर्म किहांथी, जीव उज्ज्वल किम थावे रे ॥ च० ॥ ३९ ॥ कहे म्हे पाप करां थोड़ोसो, पछे होसी धर्म अपारो रे। सावद्य काम करां इण हेतु, तिणथी खेवो पारो रे ॥ च० ॥ ४० ॥ चतुर्विध संघना कोठा ठाण्या, पाछल भव दान बतायो रे। सनत्कुमार इन्द्र हुवो तिणथी, ए पिण मूसा वायो रे ॥ च० ॥४१॥ ए तो

पूछा वर्त्तमान काले, पाछल भव नहिं चाली रे। फन्द मांहि न्हाखे अजाण लोकांने, कुबुद्धि हिया में घाली रे ॥ च० ॥ तीन कालरी समझ पड़े नहीं. ते इतने सुख बतावे रे। च्यारूं ही आहारनो नाम लेईने, गोला कांय चलावे रे ॥ च० ॥ ४३ ॥ चोखो सिन्याण धर्म कह्यो जिन, दान सिनांन बतायो रे। आठवां अध्ययन ज्ञाता मांहीं, घणा लोक दिया भरमायो रे ॥ च० ॥ ४४ ॥ जिम कोई सावद्य दान इटाई, मनमांहि होय रलियायत रे। लोकां ने मन गमता बोले, चोखो जोगण रा कीड़ायत रे ॥ च० ॥ ४५ ॥ आ सरधा सुख-देव सन्यासी, सहस्र जणा शिष्य जाणी रे। सेठ सुदर्शन तिण रो भक्ता, हाड़ मींज्यां रङ्गाणी रे ॥ च० ॥ ४६ ॥ कर्म थोड़ा ने सुलटो सूझ्यो, अन्तर्गत निर्णय कीधो रे। थावरचा अणगार प्रतिबोध्या जद, खोटा छोड़ संयम लीधो रे ॥ च० ॥४७॥ अम्बड़ ना शिष्य सात सौ हुन्ता, अणदियो नहीं लीधो रे। काचो पाणी अधर्म जाणी ने, अणमिल्यां अणशण कीधो रे ॥ च० ॥ ४८ ॥ जे कोई मिलतो दातार तिण ने, हर्ष बहरावतो पाणी रे। लेवाल तो अव्रत में लेतो, इमहिज दातार जाणी रे ॥ च० ॥ ४९ ॥ ज्ञानी पुरुषां तो दोनूं जणा री, सावद्य करणी जाणी रे। दातार ने कोई धर्म कहै तो, ए अन्य

तीर्थां नो बाणी रे ॥ च० ॥ ५० ॥ सम्यकित गंवाई नन्दन मणियारे, सांची श्रद्धा भांगी रे। तेलो करी तीन पोषा ठाया, भूख तृषा अति लागी रे ॥ च० ॥५१॥ सङ्गत पाखण्डियां री करने, उलटो मारग लीधो रे। धन्य धन्य कूवा तालाव खुदावै, त्यां सफल जमारो कीधो रे ॥ च० ॥ ५२ ॥ पोषो पार श्रेणिक ने पूछी, पोषरणी बाव खिणाई रे। धन खरची जश लियो लोकां में, वले दानशाला मण्डाई रे ॥ च० ॥ ५३ ॥ सोलह रोग शरीर में उपना, मुवो आर्त्तध्यान ध्याई रे। आप खिणाई में जाय उपज्यो, डेडक नो भव पाई रे ॥ च० ॥५४॥ आर्द्र कुमार ने ब्राह्मण बोल्या, छोड़ तूं सगला परचा रे। म्हारो धर्म उत्तम ने उज्वल, सुण तूं म्हारी चर्चा रे ॥ च० ॥ ५५ ॥ दोय सहस्र ब्राह्मण जिमायां, परलोक में सुखदायक रे। देव हुवे पुण्य खन्ध निपजावै, वेद तणा ये बायक रे ॥ च० ॥५६॥ आर्द्र कुमार कह्यो ए पात्र ने, नित्य जिमाड़े तेही रे। दोय सहस्र ब्राह्मण ने दाता, नरकै पहुंचे वेही रे ॥ च० ॥ ५७ ॥ मंजारी जिम रस ना गृद्धी, कह दियो काण न राखी रे। धर्म पुण्य नो अंश न भाख्यो, सूयगडांग छै साखी रे ॥ च० ॥ ५८ ॥ भृगु पुरोहित कह्यो बेटा ने, सुण तूं म्हारी शिक्षा रे। वेद भणी ब्राह्मण जिमाड़ी, पछै

लेजे दीचा रे ॥ च० ॥ ५९ ॥ कहै ब्राह्मण जिमायां ए फल लागै. पहुंचावै तमतमा रे । उत्तराध्ययन चौदहवें भाष्यो, ए तो छे सावद्य धर्मा रे ॥ च० ॥ ६० ॥ खोटी श्रद्धा ने हीणाचारी, पूजा श्लाघा रा भूखा रे । कर्म घणा ने सुलटो न सूझै, कदाग्रह करवा ढूका रे ॥च०॥६१॥ राते भूला ते आशा राखै; दिने सूझसी सूला रे । कहोनी आशा किण विध राखै, दिन दोफारां रा भूला रे ॥ च० ॥६२॥ भाव मारग थी भूला अज्ञानी, ऊजड़ चलिया जायो रे । मन मांही आशा मुक्ति री राखै, पिण दिन दिन अलगा थायो रे ॥ च० ॥ ६३ ॥ सूत्र नी चर्चा अलगी मेली, लोक करे पखपाती रे । साची श्रद्धा किण विध आवै. हुवा घणां रा साथी रे ॥ च० ॥ ६४ ॥ जो थांरे दिल में कांइयन वेसे, तो सगलो झगड़ो चूको रे । समता आदर ने ममता छोड़ो, जिण तिण आगे मत कूको रे ॥ च० ॥ ६५ ॥ अव्रत ओलखो उत्तम प्राणी. छोड़ दो राग ने द्वेषो रे । मानव रो भव अहलो मत हारो, परभव साहमो देखो रे ॥ च० ॥६६॥ शङ्खने पोखली जीमण कीधो, ते तो आपणे छान्दे रे । तिण ने सरावै ते मूढ़ अज्ञानी, कर्म तणा पुञ्ज वांधै रे ॥ च० ॥ ६७ ॥ तिण जीमण ने साठो जाणी, पोषो कर दियो त्यागी रे । पक्खी रे दिन पोषो जु पचख्यो, शङ्ख

बड़ो वैरागी रे ॥ च० ॥ ६८ ॥ उपला श्रावक पोखली घर आया, विनय कियो शीश नमायो रे। तै तो छान्दो आप रो जाणो, भगवन्त नाहीं सिखायो रे ॥ च० ॥६९॥ नमस्कार अम्बड़ ने कियो चेला, सूत्र उववाई में चाल्यो रे। भगवन्त भाव दीठा जिम भाख्यो, जिन धर्म में नहीं घाल्यो रे ॥ च० ॥ ७० ॥ नवकार ना पद पांच परूप्या, श्रावक ने दियो टालो रे। जिन आज्ञा नहिं गृहस्थ वन्दन री, थे भगवन्त वचन सम्भालो रे ॥ च० ॥ ७१ ॥ मांहो मांही विनय वैयावच कियां, श्री वीर नाहिं वखाण्या रे। गृहस्थ रा कार्य सावद्य दीठा, मन कर भला न जाण्या रे ॥ च० ॥ ७२ ॥ कहै म्हे अव्रत सेवां तिण में, जाणा क्यां बंधता कर्मों रे। पिण कोई अव्रत सेवावे म्हांने, हुवै छै तिणने धर्मों रे ॥ च० ॥७३॥ ए श्रद्धा श्रावक नहिं राखे, नहीं दे किण ने दग्गो रे। धर्म ठिकाणे झूठ बोले तो, जिन शासन सें ठग्गो रे ॥ च० ॥ ७४ ॥ आप तो अव्रत में आणे, भोलां ने दे धर्म बताई रे। श्रावक एहवो झूठ न बोले, जिन धर्म मांही आई रे ॥ च० ॥ ७५ ॥ साधां ने कोई अशुद्ध वहरावे, तो गर्भ में आडो आवे रे। श्रावक ने कोई सचित्त खुवावे, ते शुद्ध गति किण विध जावे रे ॥ च० ॥ ७६ ॥ एक एक मानव कर्म तणे वश, कर रह्या

ऊन्धी ताणो रे । सचित्त अशुद्ध रोकड़ द्यो न्हांने, होसी धर्म्म शङ्का मत आणो रे ॥ च० ॥ ७७ ॥ पेट रे कारण अनर्थ भाषे, परभव साहमी न जोवे रे । वले पखपात करै कुगुरां री, मानव रो भव खोवे रे ॥ च० ॥ ७८ ॥ दान शील तप भावना चारूं, ये सेव्यां मुक्त जावे रे । तिणमें दान सुपात्र आयो, ते अव्रत में नहीं ल्यावे रे ॥ च० ॥ ७९ ॥ समचे दान में धर्म कहै त्यां, नहीं जाणी जिन धर्म शैली रे । आक ने गाय नो दूध अज्ञानी, कर दियो भेल सभेलो रे ॥ च० ॥ ८० ॥ अव्रत में दान लेवै पैला रो, मोक्ष रो मार्ग बतावे रे । धर्म कह्यां विना लोक न देवै, जब कूड़ा कपट चलावै रे ॥ च० ॥ ८१ ॥ और जायगां धन देतां देखी, खर्च तूँ लेखै लेखै रे । ए श्रावक सुपात्र त्यांने, दे तूं दान विशेषै रे ॥ च० ॥ ८२ ॥ कल्पे ते वस्तु श्रावक ने देने, गोत्र तीर्थंकर बान्धो रे । एहवो धर्म्म अनार्य भाषै, ते किण विध लागै सान्धो रे ॥ च० ॥ ८३ ॥ आगारी ने सुपात्र कही कही, सानी कर साहाय्य दिरावे रे । तिण रे दीखै घोर अन्धारो, सम्यक्त्व किण विध आवै रे ॥ च० ॥ ८४ ॥ खेती करै व्याज वोहरा पाले, सुपात्र नाम धरावै रे । करै सगपण आरा ने मोसर, वले बेटा बेटी परणावे रे ॥ च० ॥ ८५ ॥ साधां रे आहार पाणी जो

वधे तो, परठे एकान्त जायो रे। इग्यारमी पड़िमा रो श्रावक मांगे तो, तिण ने न दे किण न्यारो रे॥ च० ॥ ८६ ॥ धरती परठ्यां तो व्रत रहे छे, दियां दोष उघाड़ो रे। पञ्च महाव्रत मूलगा तिण में, सगलां में पड़े बघारो रे॥ च० ॥ ८७॥ धरती परठ्यां तो अर्थ न आवे, आ करणी नहीं नीची रे। दीधां दिरायां भलो जाण्यां, तिण सावद्य अव्रत सींची रे॥ च० ॥ ८८ ॥ जघन्य मध्यम उत्कृष्टा श्रावक, तीनां री एकज पान्तो रे। अव्रत छे सगलां री माठी, तिण में मत जाणो भान्तो रे॥ च० ॥८९॥ कोई श्रावक रा व्रत लेइ साधां पा, आयो जिण दिशि जायो रे। मारग में दोय मन्त्री मिलिया, ते बोले जुदी जुदी बायो रे॥ च० ॥ ९० ॥ एक कहे व्रत चोखा पालो, ज्यूं कटे आठूं ही कर्मों रे। काल अनादि रो रुलते रुलते, पायो जिनजी रो धर्मों रे॥ च० ॥ ९१ ॥ एक कहे तूं आगार सेवे, सचित्ता-दिक सर्व सम्भालो रे। यल घणा करजे डीलां रा, वले कुटुम्ब तणी प्रतिपालो रे॥ च० ॥९२॥ व्रत पालण री आज्ञा दीधी, ते धर्म्म रो मन्त्री मोटो रे। अव्रत री आज्ञा दीधी तिण ने, ज्ञानी तो जाणे खोटो रे॥ च० ॥ ९३ ॥ गुरु तो मिलिया जावक अन्धा, चेला पूरा निरन्धो रे। ए तो जाल रच्यो तिण चौड़े, कोई आय

घड़े तिण फन्दो रे ॥ च० ॥ ६४ ॥ न्याय री चर्चा रो काम पड़े तो, एक होय माण्डे लड़णो रे। पाखण्डियां सूं जाय मिलिया, वलि लियो लोकां रो शरणो रे ॥ च० ॥ ६५ ॥ अति दुष्टी हुवै हिंसा धर्मी, निन्दा करै पर पूठे रे। कोई खांचाताण साधां पे आणे, तो अवगुण लेने ऊठे रे ॥ च० ॥ ६६ ॥ कहे दान दियो तीर्थंकर तिण में, जाणा क्यां कटिया कर्मों रे। तै तो सोनइया देवां आणि दीधा, त्यांने हुन्तो दीसे धर्मों रे ॥ च० ॥ ६७ ॥ कर्म कटै जो सोनइया सांटै, तो करणी नहीं करता रे। इण मारग थी शिवपुर पहुंचै, तो घर छोड़ दुःख में न पड़ता रे ॥ च० ॥६८॥ सोनइया दीधां कर्म कटै तो, वर्ष री जेज न पाड़त रे। सगलां रा घर भर सोनइया, देता कर्म विडारत रे ॥ च० ॥ ६९ ॥ कहे लीधां पाप ने दीधां धर्म्म, तिण लेखे रह गया कोरा रे। देवां वानै ले मनुष्यां ने दीधा, पड़िया अणहुन्ता फोड़ा रे ॥ च० ॥ १०० ॥ एक क्रोड़ आठ लाख सोनइया, निकल्या वर्षी दान देई रे। मुक्ति रो मारग तिण में नहिं जाण्यो, संवर निर्जरा नहीं वेई रे ॥च०॥ १०१ ॥ वर्षी दान महोत्सव सगलो, केवलियां नाहिं वखाण्यो रे। तीर्थंकर ने देव दोनूं अव्रती, त्यां पिण धर्म्म न जाण्यो रे ॥ च० ॥१०२॥ भगवन्त दीक्षा लीधी

तिण काले, चढिया अत्यन्त वैरागो रे। सावद्यदान सिनांन सोनइया, साठा जाणी दीधा त्यागो रे ॥ च० ॥ १०३ ॥ भग्गू पुरोहित धन छोड़ि निसरियो, इक्षुकार राजा मंगायो रे। धनसूं धर्म करीने कर्म कटै तो, अहलो सांटै कांय गमायो रे ॥ च० ॥ १०४ ॥ घर छोड़ै त्यांमें अल्प घणो थो, आलस्य कर आघो न काढ़त रे। धन सूं धर्म हुवै तो करने, काम सिराड़ै चाढ़त रे ॥ च० ॥ १०५ ॥ धर्म री धुरा धन सूं न चालै, भग्गू ने कह्यो बेटा दोई रे। मांहो मांही धन दियां धर्म्म थापै, ते गया जमारो खोई रे ॥ च० ॥१०६॥ ऋषभ-दत्त ब्राह्मण देवानन्दा, बाणी सुण आयो वैरागो रे। ते पिण छोड़्यो धन अधर्म जाणी, धर्म हुंतो तो न काढ़त आगो रे ॥ च० ॥ १०७ ॥ कहै आरा मोसर दायजा-दिक में, मिश्र धर्म कर रह्या ताणो रे। राय उदाई राज्य दियो भाणेजाने, तिण लेखे मोटो लाभ जाणो रे ॥ च० ॥१०८॥ परिग्रह छै अनर्थ रो कारण, करै बोध बीज री घाता रे। श्रीवीर कह्यो दशमा अङ्ग मांहीं, ए नरक तणो छै दाता रे ॥ च० ॥ १०९ ॥ ठाम ठाम सूत्र सिद्धान्त में, धन सूं धर्म्म न थायो रे। किण विध कर्म कटै दातार रा, अव्रत मांहीं आयो रे ॥ च० ॥ ११० ॥ जंबु कुंवर आठ परणी आयो, दायजे ऋद्धि

ल्यायो अपारी रे। क्रोड़ निन्नाणुं तो पहरावणी रा, वलि घर में हुन्ती ऋद्धि भारी रे ॥ च० ॥१११॥ कनक कामिनी सूं विरक्त भाव, उत्तम चारित्र लीधो रे। वैराग्य आणी धन छोड़ि दियो, पिण धन सूँ धर्म न कीधो रे ॥ च० ॥ ११२ ॥ वीस सहस्र सोना रूपारा आगर, खुटै नहिं अखुट भण्डारो रे। चक्रवर्त्ती छ: खण्ड रो साहिब, तिण री ऋद्धि रो घणो विस्तारो रे ॥ च० ॥ ११३ ॥ एहवी ऋद्धि में काल कियो ते, नरके पड़ियो वांधी कर्मो रे। दुर्गति टल जावे धन दीधां तो, धन दे करता धर्मो रे ॥ च० ॥११४॥ श्रावक तो तिण कालिई हूँता, धन लेवा ने त्यारी रे। यांने दीधां उद्धार हुवै तो, दे उतरता भव पारो रे ॥ च० ॥११५॥ चित्त मुनि संभूत समझावण, साधु श्रावक धर्म वतायो रे। धनसूं शुद्धगति जाय विराजै, एहवो न कह्यो उपायो रे ॥ च० ॥११६॥ कहै साधु अहार करै अव्रतमें, संयमरो छै ओटो रे। ए तो वचन अनार्य केरा, तिण आदरियो मत खोटो रे ॥ च० ॥ ११७ ॥ अव्रत ने प्रमाद वेहूं सूँ संयम ने छै धक्को रे। ओटो कहै त्यांरी उन्धी श्रद्धा, त्यां ग्रह्यो मिथ्यात्वने पक्को रे ॥ च० ॥११८॥ साधां तो सावद्य सगलो त्याग्यो, पापरो नहिं आगारो रे। अव्रत में आहार ल्यावे ने खावै, ते निश्चय नहिं अणगारो रे

॥ च० ॥११६॥ चार गुण ठाणा एकलो अव्रत, श्रावक में दोनूं पावे रे। साधांरे अव्रत मूल नहीं छै, कुबुद्धि कूड़ चलावे रे ॥ च० ॥ १२० ॥ अव्रत में साधु आहार करै तो, जिन आज्ञा नहिं देता रे। पाप जाणता तो मौन साधता, ए पिण आज्ञा न लेता रे ॥ च० ॥१२१॥ प्रत्यक्ष पाप जाणे आहार कियां में, कर्मतणो बन्ध होयो रे। तो गुरुरी आज्ञा लेई मूरख, गुरुने कांय डुबोयो रे ॥ च० ॥ १२२ ॥ गुरुनी आज्ञा ले पाप करणारो, ते तो मिलिया छै अनार्य रे। विनय सहित कोई सावद्य सेवै, तिण मोटो कीधो अकार्य रे ॥ च० ॥ १२३ ॥ ते गुरु पिण मिलिया अत्यन्त अज्ञानी, कर्मा करी सूभ्यो भूण्डोरे। पाप करणारो आज्ञा देने पोते, अहलो सांटे कांई बूडो रे ॥ च० ॥ १२४ ॥ चेलांने आज्ञा अव्रतरो देने, घाल्यो पाप में सीरो रे। देखो अक्ल गयी उण गुरुरी, उणरै कांय पड़ीथी भीरो रे ॥ च० ॥ १२५ ॥ पाप करण री जे आज्ञा देसी, ते निश्चय होसी भारी रे। कुण चेलो गुरुने गुरुभाई, जोयज्यो ज्ञान विचारी रे ॥ च० ॥ १२६ ॥ साधु आहार कियां प्रमादने अव्रत, तो दातार ने नहीं धर्म्मो रे। अव्रत ने अव्रत मांहि घाल्यो, तो दोनांरे बंधिया कर्मों रे ॥ च० ॥ १२७ ॥ कर्मतणे वश मूढ अज्ञानी, संवली सीख न धारै रे।

आप डूबै अव्रत मांहीं ल्याई, तो दूजां ने किण विध तारै रे ॥ च० ॥१२८॥ साधु आहार कियां पाप परूपै, तिणरै मोह मिथ्यात्वरो चालो रे । त्यां तीनूं ही कालरा ऋषीश्वरां रे, दियो अणहुन्तो आलो रे ॥ च० ॥१२९॥ आहार करणरी शुद्ध साधुने, भगवन्त आज्ञा दीधी रे । तिण मांहीं पाप बताई अज्ञानी, खांच गला में लीधी रे ॥ च० ॥ १३० ॥ जो थाने समझ पड़े नहीं पूरी, तो राखो जिन प्रतीतो रे । आज्ञा मांहीं पाप परूपो, एहवी म करो अनीतो रे ॥ च० ॥१३१॥ जिन आज्ञा मांहीं पाप परूपै, ते भूला भ्रम अज्ञानी रे । आज्ञा बाहर धर्म बतावै, त्यांने किण विध कहिजे ज्ञानी रे ॥ च० ॥१३२॥ गुण विन स्वांग धरै साधांरो, करै विकलांरो थापो रे । छः कारण विना आहार करै तो, तिण ने छै एकान्त पापो रे ॥ च० ॥ १३३ ॥ छः कारण साधु आहार करै तो, जिन आज्ञा नहिं लोपी रे । पाप तिणाने किण विध लागै, संवर कर आत्म गोपी रे ॥ च० ॥ १३४ ॥ निरवद्य गोचरी ऋषीश्वरांरी, मोक्ष री साधन माखी रे । पाप कर्म आहार करतां न लागै, दशवैकालिक साखी रे ॥ च० ॥१३५॥ सात कर्म साधु ढीला पाड़ै, आहार करै तिण कालो रे । शुद्ध भोगवियां ए फल लागै, सूत्र भगवती सम्भालो रे ॥ च० ॥१३६॥

सेलक यक्ष कान्धे ले निकलियो, रेणादेवीसूं राखी प्रीतो रे। अनुकम्पा आणी सामो जोयो, ते जिन ऋषि हुवो फजीतो रे ॥ च० ॥ १३७ ॥ सेलक यक्ष जिम संयम जाणो, रेणा देवी ज्यूं अव्रत मेली रे। मुक्ति नगर ने सन्त निकलिया, त्यां अव्रत छोड़ी पहली रे ॥ च० ॥ १३८ ॥ सेलक यक्ष ने रेणा देवी, माहो मांहो नाहीं मिलापो रे। व्रत सुधर्म ते पार पहुंचावे, अव्रत लगावे पापो रे ॥ च० ॥ १३९ ॥ रेणा देवी एक भव दुःखदायक, अव्रत अनन्ता कालो रे। सांसो हुवे तो ज्ञाता मांही, नवमो अध्ययन सम्भालो रे ॥ च० ॥ १४० ॥

॥ ढाल दूजी ॥

(चतुर विचार करो ने देखो पदेशी)

सूयगडांग अध्ययन इग्यारमें, दान रो कियो निचोड़ो रे। मूढ़ मिथ्याती विवेक रा विकल ते, करे अणहूंतो झोड़ो रे ॥ च० ॥१॥ सोलहवीं गाथा सूं ले इकवीसमी तांई, छः गाथा रो अर्थ छै सूंधो रे। त्यां सावद्य दान में मिश्र थापण ने, अर्थ करै छै ऊन्धो रे ॥ च० ॥ २ ॥ ते सावद्य दान संसार रो कारण, तिणमें निरवद्य रो नहीं भेलो रे। संसार ने मुक्ति रो मारग न्यारो, ते कठै ही न खावै मेलो रे ॥ च० ॥ ३ ॥ ये छः गाथां रा अर्थ

छे भारी सूंधा, त्यांरो निर्णय कीजो बुद्धिमानो रे। ते अर्थ विवरा शुद्ध छे त्यांरो, ते सुणज्यो सूरत दे कानो रे॥ च०॥ ४॥ दान रे अर्थे जीव हणे त्यांने, साधु तो भलो न जाणे रे। देवे सत्तूकार खुदावे कूवादिक, लाभ जाणे श्रद्धा प्रमाणे रे॥ च०॥ ५॥ ते आय साधां ने प्रश्न पूछे. आरम्भ लियां बोले वाणी रे। इण करणी में पुण्य हुवे कि नाहीं, जब साधु करे मौन जाणी रे॥ च०॥ ६॥ पुण्य पिण साधु न कहे तिण ने, वले न कहे थारे पुण्य नाई रे। दोनूं प्रकारे महा भय रो कारण, मौन करे ते कारण कांई रे॥ च०॥७॥ दान रे कारण लोक करे छे, त्रस स्थावर नी घातो रे। पुण्य कह्यां त्यांरो दया उठे छे, दया बिन नहीं पुण्य साचातो रे॥ च०॥ ८॥ असंयती-ने उदेरी उदेरी, आरम्भ कर अन्न पाणी रे। पुण्य नहीं कह्यां अन्तराय छे, ओहिज कारण जाणी रे॥ च०॥ ९॥ साधु तो अन्तराय किण ने न देवे. उण वेलां जिह्वा क्यांने हिलावे रे। चर्चा रो काम पड़े तिण काले, हुवे जिसा फल बतावे रे॥ च० ॥१०॥ जे कोई दान प्रशंसे तिण ने, कह्यो छः काया रो घाती रे। ते देवे दिरावे त्यांरो सूं कहवो, ते पिण उणां रा साथी रे॥ च०॥ ११॥ हिंसा झूठ चोरी कुशील प्रशंसे, ते बूड़ गया कालीधारो रे। तो करण सूं करा-

वण वाला री, किण विध होसी उद्धारो रे ॥ च० ॥१२॥ कोई गांव जलावे ने गायां कढ़ावे, इत्यादिक कार्य सब भूँडा रे। त्यांने सरावे ते बूड़ गया छै, तो करणवाला विशेष बूड़ा रे ॥ च० ॥ १३ ॥ ज्यूं सावद्य दान प्रशंसे तिण ने, कह्यो छः काया रो घाती रे। देवे तिण ने मिश्र धर्म कहै, तिण ने कहीजे मूढ़ मिथ्याती रे ॥ च० ॥ १४ ॥ माठा काम सरायां बूड़े छै, तो कीधां बूड़सी गाढो रे। ए श्रद्धा सुध संहठी धारी, थे शल्य अभ्यन्तर काढो रे ॥ च० ॥ १५ ॥ सावद्य दान प्रशंसे तिण ने, माठा फल कह्या जिनरायो रे। हिवे दान नहीं निषेधणो साधु ने, ते पिण सुणज्यो न्यायो रे ॥ च० ॥ १६ ॥ दातार दान देवे तिण काले, लेवाल लेवे धर प्रीतो रे। जब साधु कहै मत दे इण ने, निषेधे नहीं इण रीतो रे ॥ च० ॥१७॥ जो दान देता साधु निषेधे, तो लेवाल रे पड़े अन्तरायो रे। अन्तराय दियां फल कड़वा लागे, तिण सूं निषेधे नहीं इण न्यायो रे ॥च० ॥ १८ ॥ अन्तराय सूं डरता साधु न बोले, और परमार्थ मत जाणो रे। ते पिण मौन छै वर्त्तमान काले, बुद्धिवन्त करज्यो पिछाणो रे ॥ च० ॥ १९ ॥ उपदेश देवे साधु तिण काले, दूध पाणी ज्यूं करै निवेरो रे। बिन बतायां चार तीर्थ में, किण विध मिटै अन्धेरो रे

॥ च० ॥ २० ॥ दोनूं भाषा साधु नवि बोलै, पुण्य छै अथवा पुण्य नाहीं रे। ते पिण वर्जी वर्त्तमान काले आश्री, थे सोच देखो मन मांही रे ॥ च० ॥२१॥ कोई कहै पुण्य कहणो न कहणो वर्ज्यों, तो पुण्य सें पाप रो भेल जाणो रे। तिण सूं मिश्र ठिकाणो ले उठ्या अज्ञानी, कर कर ऊन्धी ताणो रे ॥ च० ॥ २२ ॥ पुण्य छै कि नहीं प्रश्न पूछ्यां, पाप रो कथन न चाल्यो रे। मिश्र री श्रद्धा वाले अज्ञानी, घोचो मिश्र रो घाल्यो रे ॥ च० ॥ २३ ॥ दान सें मिश्र नहीं जिन भाष्यो, पुण्य हुसी के पापो रे। सुपात्र सूं पुण्य कुपात्र सूं पाप, मिण खोटी मिश्र री थापो रे ॥ च० ॥ २४ ॥ वले सूयगडांग अध्ययन इकवीसमें, दोय वात जिन भाषी रे। त्यां पिण न कह्यो छै मिश्र ठिकाणो, जोवों वत्तीसवीं गाथा सांखी रे ॥ च० ॥ २५ ॥ दातार ने देतां लेवाल ने लेतां, साधु इसड़ो देखै वृत्तान्तो रे। गुण अवगुण ने कहै तिण काले, मौन करै एकान्तो रे ॥ च० ॥ २६ ॥ तिण दान तणो साधु गुण करै तो, असंयम नी अनु-मोदना लागे रे। ते असंयम छै एकलो अधर्म, अनु-मोद्यां संयम भांगे रे ॥ च० ॥ २७ ॥ तिण दान ने साधु भलो न जाणे, भलो जाण्यां वन्धै पाप कर्मो रे। तो तिणहीज दान तणा दाता ने, किण विध होसी

मिश्र धर्मों रे ॥ च० ॥ २८ ॥ पाप अनुमोद्यां पाप लागै छै, धर्म्म अनुमोद्यां धर्म्म होयो रे। तो मिश्र अनुमोद्यां मिश्र चाहिजै, ते मिश्र न दीसै कोयो रे ॥ च० ॥ २९ ॥ दान देवै दिरावै भलो जाणै, ये तीनूं री एक पांतो रे। पुण्य पाप मिश्र होसी तो तीनूं ने, तिण में मत राखो भ्रान्तो रे ॥ च० ॥ ३० ॥ तिण दान तणा गुण साधु करै तो, असंयम री अनुमोदना लागै रे। ते दान असंयम में जिन घाल्यो, अवगुण कह्यां रो बोलतो छै आगै रे ॥ च० ॥ ३१ ॥ दान तणा अवगुण कीधां में, लेवाल रै पड़ै अन्तरायो रे। अन्तराय देणी तो साधु ने न कल्पै, तिण सूं मौन करै मुनिरायो रे ॥ च० ॥ ३२ ॥ इण न्याय साधु नै मौन कही छै, पिण मिश्र नहीं जाणै तिण में रे। इण दान में मिश्र धर्म थापै, तो कोरो मिथ्यात्व छै उणमें रे ॥ च० ॥३३॥ गुण कह्यां असंयम अनुमोदीजै, अवगुण कह्यां तो लागै अन्तरायो रे। इण दोनां सूं डरतो साधु नहिं बोलै, अठै मिश्र किहां थी थायो रे ॥ च० ॥ ३४ ॥ साधु मौन करै ते वर्त्तमान काले, उपदेश में मौन न राखै रे। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखै, तो हुवै जिसा फल दाखै रे ॥ च० ॥ ३५ ॥ मिश्र थापणने मूढ अज्ञानी, छल छिद्र रह्या नित्य देखी रे। और बोल मिश्रना घणा छै सूत्र में, त्यांमें मिश्र-

दान दे टेकी रे॥ च०॥३६॥ कोई कहै पाप कहे तिण देतां पाल्यो. दूसड़ी बोलै वाणी रे। ये दोनूं भाषाने एकजु श्रद्धै. ते भाषारा मूढ अयाणी रे॥ च०॥ ३७॥ कोई कहै पाप कहे तिण दान निषेध्यो. तै पिण भाषारा अयाणो रे। सावद्य दान थापणने अज्ञानी, बोलै छै ऊन्धी वाणो रे॥ च०॥ ३८॥ दान देता ने कहै तूं मत दे इणने, तिण पाल्यो निषेध्यो दानो रे। पाप हुंतो ने पाप बतायो. तिणरो छै निर्मल ज्ञानो रे॥ च०॥ ३६॥ असंयतिने दान दियां सें, कह दियो भगवन्त पापो रे। त्यां दानने वर्ज्यो निषेध्यो नाहीं, हुंती जिसी कीधी थापो रे॥च०॥४०॥ किण ही साधु ने कह्यो आज पछे तूं, म्हारै घरे कदे मत आयो रे। किण ही करड़ा वचन जु बोल्या, हिवै साधु किसे घर जायो रे॥ च०॥ ४१॥ साधु ने वर्जे तिण घर में न पैसे, करड़ा कह्या तिण घरमें जायो रे। निषेध्यो ने करड़ो बोल्यो दोनूं, एकण भाषा में न समायो रे॥च०॥ ४२॥ जिम कोई दान देतां वर्ज राखै, कोई दीधां में पाप बतावै रे। ये दोनूँ ही भाषा जुदी जुदी छै, पिण एकण भाषा में न समावै रे॥ ४३॥ कोई रांक गरीबने मरतो देखी, त्यांरी अनुकम्पा मन आवै रे। जब पैलांरो धन चोरी कर लेते, रांकांरे हाथ में पक-

ड़ावे रे ॥ च० ॥ ४४ ॥ धणी ने बिन पूछ्यां चोरी कर देवे, रांकांरी अनुकम्पा काजै रे। उणरी श्रद्धारे लेखे उणने ही मिश्र, अठे मिश्र कहतां कांय लाजै रे ॥च०॥ ४५ ॥ मालधणी ने दाह दीधो तिणरो, हुवो एकान्त पाप कर्मों रे। रांकांने दीधो ते अनुकम्पा आणी, उण लेखे ओ प्रत्यक्ष धर्मों रे ॥ च० ॥४६॥ पैलारो धन खोस रांका ने देवै, तिणमें मिश्र कहै नाहीं रे। तो उठ गई मिश्ररी श्रद्धा उणांरे लेखे, सोच देखो मनमांहीं रे ॥ च० ॥ ४७ ॥ पररो धन चोर रांकां ने दीधो, तिणमें मिश्र हुवे नाहीं रे। तो जावक जीव हणी रांक पोषे, अठे मिश्र कठे तिण मांही रे ॥ च० ॥ ४८ ॥ कोई चोरी करी रांकाने पोषे, कोई जीव हणी पोषै रांक रे। इण प्रत्यक्ष पाप में मिश्र कहै त्यांरी, श्रद्धामें छै पूरो बांक रे ॥ च० ॥ ४९ ॥ असत्य ने मिश्र तो जावक छोड़णो, तिण बोल्यां बूड़ जाय बहता रे। जो मिश्र भाषा में मिश्र हुवे तो, जावक छोड़णो नहीं कहता रे ॥ च० ॥ ५० ॥ रांकां ने पोषे घणां जीव हणने, त्यांने चोरी हिन्सा लागै दोय रे। ते चोरी त्यांरे शरीररी लागी, जीव हण्यांरी हिंसा होय रे ॥ च० ॥ ५१ ॥ रांकने परधन चोर देवै त्यांने, एक चोरी तणो पाप होय रे। ये दोनूं कर्त्तव्य करै अनुकम्पा आणी,

ते गया जमारो खोय रे॥ च०॥५२॥ परनी चोरी कर रांकां ने देवै, इण कर्त्तव्यसूं जो वूड़े रे। तो हिंसा करने कुपात्र पोषे, ते क्यूं वैससी नहिं कुराडे रे॥च०॥ ५३॥ कहे अराधवी मिश्र भाषा छे, ते भाषा छे धर्म अधर्मो रे। अराधवी जितरो छे एकान्त धर्म, विराधवी सूं लागे पाप कर्मो रे॥ च०॥५४॥ इम कहि कहि मिश्र करणी थापे, तिण करणी में कहै धर्म पापो रे। इम आंटी घाले छे सावद्य दान में, करै मिश्र धर्मरो थापो रे॥ च०॥५५॥ ते मिश्र भाषा छे सावद्य दान में, तिण बोल्यां वंधै पाप कर्मो रे। मह्मा सोहिनी कर्म वंधै तिणसूं, तिणमें किहांथी धर्मो रे॥ च०॥५६॥ अराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, ते तो बोलवा लेखे रे। अठै पाप धर्मरो कथन न चाल्यो, तिणरो सुणज्यो भेद विशेषै रे॥ च०॥ च०॥५७॥ अराधवी कही छे सत्य भाषाने, ते पिण बोलवा लेखै पिछाणो रे। ते साची भाषा छे सावद्य निरवद्य, तिण सावद्य में धर्म म जाणो रे॥ च०॥५८॥ सांची भाषा सावद्य तिण मे, अराधवी कही बोलवे लेखे रे। पण एकान्त पाप वंधे तिण बोल्यां, तो मिश्रमें मूढ पाप न देखै रे॥ च०॥५९॥ व्यवहार भाषाने कही छे जिनेश्वर, अराधवी विराधवी नाहीं रे। ते पिण कही छे बोलवा लेखै,

धर्म अधर्म लेखो नहीं यांहीं रे ॥ च० ॥६०॥ धर्म अधर्म लेखे तो व्यवहार भाषा, अराधवी विराधवी जाणो रे। निरवद्यने तो अराधवी जाणो, विराधवी सावद्यने पिछाणो रे ॥ च० ॥ ६१ ॥ जो मिश्र भाषा धर्म अधर्म लेखे, अराधवी विराधवी होई रे। व्यवहार भाषा बोले तिण मे, धर्माधर्म न कोई रे ॥ च० ॥६२॥ जो सांची भाषा बोले धर्मरे लेखे, थापे अराधवी कीयो रे। तो सांची भाषा सावद्य बोल्यां, एकान्त धर्म जु होयो रे ॥ च० ॥ ६३ ॥ जो मिश्र भाषा सें मिश्र हुवे तो, सत्य भाषा में एकान्त धर्मो रे। व्यवहार भाषा तो शून्य हो जावे, बोल्यां न धर्म न पाप कर्मो रे ॥ च० ॥ ६४ ॥ ए तो बोलवा आश्री चारूं भाषा, अराधवी विराधवी जाणो रे। अठे धर्म अधर्म रो कथन न चाल्यो, पन्नवणा सूं करज्यो पहिचाणो रे ॥ च० ॥ ६५ ॥ सत्य असत्य मिश्र ने व्यवहार, ये चार भाषा जिन भाषी रे। त्यांमें असत्य ने मिश्र तो जावक छोड़णी, जोवो दशवैकालिक साखी रे ॥ च० ॥ ६६ ॥ सत्य भाषा व्यवहार भाषा, ये तो सावद्य निरवद्य दोई रे। तो सावद्य टालने निरवद्य बोले, तो पाप न लागे कोई रे ॥ च० ॥ ६७ ॥ असत्य ने मिश्र जावक छोडणी, तिण बोल्यां बूड़ जाय वहता रे। जो मिश्र भाषा सें मिश्र धर्म हुवे, जावक छोड़णी

नहीं कहता रे ॥ च० ॥६८॥ धर्म अधर्म आश्री चारूं भाषा, बोलवा नहीं बोलवा चाली रे। सत्य विचार विचारने बोलणी, असत्य मिश्र सर्व पाली रे ॥च०॥६९॥ तीसा बोलां बंधे महा मोहनी कर्म, ते एकान्त छे पाप कर्मो रे। तो मिश्र भाषा बोले तिण मांहीं, किण विध होसी पाप धर्मो रे ॥ च० ॥७०॥ जो उणतीस बोलां में एकान्त पाप, तो मिश्र भाषा में एकान्त पापो रे। कोई मिश्र भाषा में मिश्र धर्म कहै छै, तिण आगम दिया उथापो रे ॥ च० ॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीजिन आगम मांहि इम कह्यो, धर्म अधर्म करणी दोय। धर्म करणी में जिन आगन्यां, अधर्म करणी में आज्ञा नहीं कोय ॥ १ ॥ धर्म अधर्म करणी जुई जुई, ते कठे ही न खावे मेल। जे मूढ मिथ्याती जीवड़ा, त्यां करदी भेल सभेल ॥ २ ॥ चतुर व्यापारी विणज करै, जहर ने अमृत दोय। मांगे ते वस्तु दे ग्राहक ने, पिण और नहीं दे कोय ॥ ३ ॥ विवेक विकल व्यापारी हुवै, तिण ने वस्तु री खबर न कांय। जहर घाले अमृत मध्ये, अमृत घाले जहर रे मांय ॥ ४ ॥ त्यांने वस्तु री

निगह पड़े नहीं, ते घाले और री और मांय। ते नाश करै दोनां तणो, तिम जाणो धर्म नो न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल तीजी ॥

(चतुर विचार करी ने देखो एदेशी)

जो कोई घृत तंबाकू विणजे, पिण वासणरी विगत न पाड़े रे। घृत लेइने तम्बाकू में घालै, तो दोनूं ही वस्तु बिगाड़े रे ॥च०॥१॥ जिम व्रतरो दान अव्रत मांही घालै, पिण वस्तुरी विगत न पाड़े रे। व्रतरी विगत पाड्यां बिना बांहगा, सूनै चित्त दान पुकारै रे ॥ च० ॥ २ ॥ श्रावक मांहो मांहीं जीमै जिमावे, ते एकान्त आस्रव जाणो रे। तिण मांहीं धर्म परूपे अज्ञानी, ते,पूरा छे मूढ अयाणो रे ॥ च० ॥ ३ ॥ जीभ री औषध आख्यां में घाले, आंखरी औषध जीभ में घाल्यो रे। तिणरी आंख फूटी ने जीभ भी फाटी, दोनूं इन्द्रिय खोय चाल्यो रे ॥ च० ॥ ५ ॥ जिम अधर्म रो काम धर्म में घाल्यो, धर्मरो काम अधर्म में घाले रे। ते दोनूं ही विध बूडा अज्ञानी, दुर्गति मांहीं चाले रे ॥ च० ॥५॥ सावद्य कर्त्तव्य में धर्म जाणै, निरवद्यमें पाप जाणै रे। सावद्य निरवद्य में नहीं समझै, अज्ञानी थका ऊन्धी ताणै रे ॥च०॥६॥ सचित्त अचित्त दियां कहे पुण्य, शुद्ध

अशुद्ध दियां कहै पुण्यो रे। वले पुण्य कहै पात्र कुपात्र ने दीधां, ओ मत जावक जवुनो रे॥ च०॥ ७॥ पात्र कुपात्र दोन्यांने दीधां, पुण्य कहै छै कर कर ताणो रे। तिण पात्र कुपात्र गिणिया सरीखा, ए पाखण्डियां री वाणो रे॥ च०॥ ८॥ कुण्डाधर्मी कुण्डा वैठ जीमै जव, भेला जीमै एकण कुण्डा मांयो रे। जात कुजात मे चोखो अचोखो, त्यांरी भिन्न न राखै कांयो रे॥ च० ॥ ६॥ ज्यूं पात्र कुपात्र सर्व ने दीधां, पुण्य कहै एक धारो रे। ओ मत कुण्डापन्थी जिम जाणो, किण सूं भिन्न न राखै लिगारो रे॥ च०॥ १०॥ कोई डाहवो हुवै तो कुण्डापन्थ्यां मे, न्यात जात सूं जाणै भ्रष्टो रे। ज्यूं कुपात्र दान में धर्म कहै छै त्यांने ज्ञानी तो जाणै मिथ्या दृष्टि रे॥ च०॥ ११॥ श्रीवीर कह्यो सुपात्र ने दीधां, धर्म ने पुण्य दोनूं होई रे। कुपात्र दान में धर्म कहै तै, गया जमारो खोई रे॥ च० ॥ १२॥ श्रावक ने सुपात्र कहीने, तिण पोष्यां में धर्म वतावै रे। इसड़ी परूपणा कर कर अज्ञानी, भोला लकांने भमावै रे॥ च० ॥१३॥ श्रावक ने एकान्त सुपात्र कहै छै, इसड़ा वोलै छै मूढ अज्ञानी रे। त्यांने श्रावक पिण इसाहिज मिलिया, त्यांरी श्रद्धा साची कर मानी रे॥ च० ॥१४॥ आन्धाने आन्धो आय मिलियो,

जब कुण बतावे बाटो रे। ज्यूं श्रावक ने एकान्त सुपात्र थापे, त्यांरे अकल आड़ो आयो पाटो रे॥ च० ॥ १५ ॥ श्रावक ने एकान्त सुपात्र श्रद्धे, ते तो उठी जठा थी झूठी रे। निज गुण अवगुण सूल न सूझे, त्यांरी हिया निलाड़ी फूटी रे॥ च० ॥ १६ ॥ श्रावक सुपात्र व्रतां करी ने, अव्रत लेखे जहर रो बटको रे। अव्रतरो दूणरे काम पड़े जब, करे छः काया रो गटको रे॥ च० ॥१७॥ श्रावक सुपात्र व्रतां सूं हुवे, अव्रत लेखे अधर्मी जाणो रे। अव्रत री दूणरे काम पड़े तो, छः काया री करै घमसाणो रे ॥च०॥१८॥ श्रावक स्त्री सेवे सेवावे, वले परणीजे ने परणावे रे। तिणने एकान्त सुपात्र थापे, ते गाला रा गोला चलावे रे ॥च०॥१९॥ कोई श्रावक रे हुवे स्त्री हजारां, खासवान पासवान अनेको रे। एहवा भोगी भ्रमर ने सुपात्र जाणे, त्यांरे सूल में नहीं विवेको रे॥ च० ॥ २० ॥ हिन्सा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह, सेवे विविध प्रकारो रे। एहवा श्रावक ने एकान्त सुपात्र थापे, त्यांरे मत में पूरो अन्धारो रे॥ च० ॥ २१ ॥ श्रावक लाखां बीघा खेती करे छै, क्रोड़ां मण काढ़े छै अणगल पाणी रे। त्यांने एकान्त सुपात्र कहै छै, आ कुदर्शण्यां री बाणी रे॥ च० ॥ २२ ॥ दमड़ां काजे पापड़ा पड़े पड़ावे, आहमी साहमी पजारां चलावे रे।

एहवा श्रावक ने एकान्त सुपात्र कहतां, विकलां ने लाज न आवे रे ॥ च० ॥ २३ ॥ कजियाखोर वथोकड़ा बगिया, मन आवे ज्यूं बोले भूंडा रे। ममा चचा री गाल बस रही मुंहड़े, एकान्त सुपात्र कही कांय बूड़ा रे ॥ च० ॥ २४ ॥ कोई निर्लज्ज नागड़ा फाटा बोलै, दीसै उघाड़ा कुपात्र रे। त्यांने एकान्त सुपात्र कहै छै, त्यांने पिण कहीजे एहवा सुपात्र रे ॥ च० ॥२५॥ कोई दगा-दगी रा बिणज करै छै, कपड़ादिक नग बेचे बदलावे रे। त्यांने एकान्त सुपात्र कही ने, विकलां ने विकल रिझावे रे ॥ च० ॥ २६ ॥ आगे मोटा मोटा श्रावक हुन्ता, जीवादिक नव तत्व रा जाणो रे। रण संग्राम चढ़ता तिण काले, घणा मनुष्यां रा किया घमसाणो रे ॥ च० ॥ २७ ॥ एक कागादिक मारण रा त्याग किया, ते, श्रावक री पांत मांह्यो रे। सावद्य काम बीजा सग-लाई, कुपात्र मांही ताह्यो रे ॥ च० ॥ २८ ॥ श्रावक ने सुपात्र किण न्याय कहीजै, किण न्याय कहीजै असंयती कुपात्र रे। सूत्र मांही जोवो भव जीवां, हिया मांही राखी क्षमा खातिर रे ॥ च० ॥२९॥ सूयगडांग अध्य-यन अठारहमें, तीन पख तणो विस्तारो रे। धर्म अधर्म मिश्र पख तीजो, त्यांरो भेद छै न्यारो न्यारो रे ॥ च० ॥ ३० ॥ सर्व व्रती ने धर्म पख कहीजे, अव्रती ने अधर्म

पख जाणो रे। वले श्रावक ने कहीजे व्रती अव्रती, पण्डित बाल दोनूं पिछाणो रे॥ च०॥ ३१॥ श्रावक ने व्रतां करने संयति कहीजे, गुण रतां री खानो रे। व्रत आदरतां अव्रत रह्यो ते, एकान्त अधर्म जाणो रे॥ च०॥ ३२॥ श्रावक रो खाणो पीणो ने गहणो, अव्रत मांहो घाल्यो रे। तिण मांहो धर्म कहै छै अज्ञानी, खोटो मत तिण झाल्यो रे॥ च०॥ ३३॥ पांच इन्द्रिय मोकली मेल्यां पाप कहै, मेलायां पिण लाग्यो पापो रे। पांच इन्द्रयां नी तेईस विषय छैं, सेवायां पाप कह्यो जिण आपो रे॥ च०॥३४॥ श्रावक री रसेन्द्रिय कोई पोषै, विषय सेवाड़ै तेवीसो रे। तिण मांहों धर्म परूपे मिथ्यात्वी, ते बूड़ा छै विश्वाबीसो रे॥ च०॥ ३५॥ कोई श्रावक ने अशनादिक देवै, ते असंयति पणा मांह्यो रे। असंयति ने दान दे तिण रा, आछा फल किम लागे तायो रे॥ च०॥ ३६॥ असंयति ने दान दियां सें, पाप कह्यो एकान्तो रे। भगवती सूत्र आठमें शतके, छठे उद्देशे कह्यो भगवन्तो रे॥ च०॥ ३७॥ श्रावक ने दान दे तिण री करै प्रशंसा, ते परमार्थ रा अयाणो रे। श्रावक री असंयत अव्रत छै, ते रूड़ी रीत पिछाणो रे॥ च०॥ ३८॥ श्रावक ने एकान्त सुपात्र कहवा, दूसड़ी चर्चा आणे रे। श्रावक

एकान्त सुपात्र न हुवै तो, चार तीर्थ में क्यूं जाणे रे ॥ च० ॥ ३९ ॥ अधर्मी जीव चार गुणठाणा, श्रावक पांचमें गुणठाणो रे । बाकी नव गुणठाणा साधु ऋषी-श्वर, ए संसार में सर्व जीव जाणो रे ॥ च० ॥ ४० ॥ कोई मूढमति जीव अत्यन्त अज्ञानी, ते इसड़ी चर्चा आणै रे । श्रावक एकान्त सुपात्र न हुवै तो, चार तीर्थ कुण जाणै रे । ॥ च० ॥ ४१ ॥ चार तीर्थ ने कही रत्नां री माला, तिण माला रो भेद न जाणै रे । गुण अव-गुण सर्व माला में घालै. अज्ञानी थका ऊन्धी ताणै रे ॥ च० ॥ ४२ ॥ चार तीर्थ गुण रत्नां री माला, तिण मांहीं अव्रत नहीं लिगारो रे । श्रावक रा व्रत माला मांहीं घाल्या, अव्रत ने काढ़ दीधी बारो रे ॥ च० ॥ ४३ ॥ अव्रत ने एकान्त अधर्म कहीजे, तिणमां अनेक माठा माठा नामो रे । ते व्रत मांहीं किण विध आवै, सगलाई सावद्य कामो रे ॥ च० ॥ ४४ ॥ श्रावक ने एकान्त सुपात्र थापण, इसड़ी चर्चा ल्यावै रे । श्रावक एकान्त सुपात्र न हुवै तो, देवलोक में क्यूं जावै रे ॥ च० ॥ ४५ ॥ श्रावक जावै छै देवलोक मांहीं, ते तो समकित व्रत सूं जाणो रे । एक समकित सूं पिण देव-लोक जावै, श्रावक रे छै व्रत पचखाणो रे ॥ च० ॥४६॥ अव्रती समदृष्टि चौथे गुणठाणे, ते एकान्त अव्रती

जाणो रे। ते पिण देवलोक मांहि जावे छे, ते समकित गुण पिछाणो रे ॥ च० ॥ ४७ ॥ श्रावक देवलोक मांहि जावे छे, ते समकित व्रत में पूरा रे। तिण रे पुण्य बंधे छे शुभ योग सूँ, वले पाप कर्म करे दूरा रे ॥च० ॥ ४८ ॥ जे देवलोक जावे छे, निरवद्य गुण सूं, अवगुण ले जावे दुर्गति जाणो रे। ज्यूं श्रावक पिण देवलोक जावे छे, ते गुणां री बहुलताई जाणो रे ॥ च० ॥४९॥ अभवी जीव एकान्त मिथ्याती, ते निश्चय कुपात्र ताही रे। ते पिण कष्ट तणे प्रतापे, जावे नव ग्रैवेयक मांही रे ॥ च० ॥ ५० ॥ ते तो समदृष्टि साधु श्रावक पिण नाहीं, नव ग्रैवेयक जावे रे। वले सन्यासी गोशाला मति, ते पिण वैमानिक थावे रे ॥ च० ॥ ५१ ॥ वले कृष्णपक्षी तिर्यञ्च मिथ्यात्वी, ते आठमें देवलोक जावे रे। देवलोक गयां सूं सुपात्र हुवे तो, ए पिण सुपात्र में आवे रे ॥ च० ॥५२॥ बारह देवलोक ने नव ग्रैवेयक मांहीं, जीव गयो अनन्तो बारो रे। जो देवलोक गयां सुपात्र हुवे तो, जीव नहीं रुलतो अनन्त संसारो रे ॥ च० ॥ ५३ ॥ समदृष्टि ने सुपात्र कहीजे, ते समकित व्रत सूं जाणो रे। अव्रत सावद्य काम करे तिण सूं, एकान्त कुपात्र पिछाणो रे ॥ च० ॥ ५४ ॥ वले सुपात्र समदृष्टि ने कहिजे, समकित ने ज्ञान सूं जाणो रे। दूजी

सावद्य कर्त्तव्य कीधां ते, कुपात्र पणा में पिछाणो रे ॥ च० ॥ ५५ ॥
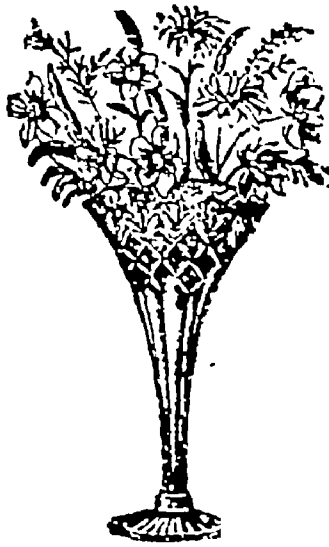
॥ ढाल पहली ॥

(भवियण जोवो रे हृदय विमासी प्रदेशी)

आधाकरमी उदेशिक भोगवै तिणने, निश्चय कह्या अणाचारी। दशवैकालिक रे तीजे अध्ययने, शंका म आणो लिगारी रे ॥ भवियण जोयज्यो हृदय विमासी ॥१॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवै तिणने, भिष्ट कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठे अध्ययने, निरणो करो बुद्धिमान रे ॥ भ० ॥ २॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवै तिणने, नर्कगामी कह्या भगवान। उत्तराध्ययन रे वीसमें अध्ययने निरणो करो बुद्धिमान ॥ भ० ॥ ३ ॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवै, तिणरा छऊं व्रत भांग्या जाय। आचारांग रे दूजे अध्ययने जोय करो पिछाण रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ आधा करमी उदेशिक भोगवै, तिणमें छै मोटी खोड़। आचारांगे पहिले स्रुत खंधे, कह दिया भगवंत चोर रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ आधा करमी उदेशिक

भोगवे अधोगत जीव, वली काह्या छे अनन्त ससारो।
भगवती रे पहले शतक रे नवमें उदेशै. तिहां वहुत
कियो विस्तारी रे॥ भ०॥ ६॥ आधाकरमी उदेशिक
भोगवे तिण ने, काह्या ग्रही ने भेषधारी। दोय पच रा
सेवनहार काह्या छे, सूयगडांग दूजा श्रुत खंध मझारी
रे॥ भ०॥ ७॥ आधा करमी उदेशिक एकवार भोगवे
तिणने, चौमासी प्रायश्चित देणो। सदा नितरो नित
ठठ स्यूं भोगवे, तिणने प्रायश्चित रो कांई केहणो रे॥
भ०॥ ८॥ आधाकरमी उदेशिक भोगवे तिण ने,
सवलो दोषण लागे। सदा नितरो नित ठठ स्यूं भोगवे
तिणने प्रायश्चित रो कांई थाग रे॥ भ०॥ ९॥ साधू
काजे दड़नीपे जठे. कीड़ों मकोड़ी देवे दाटो। अनेक त्रस
जीवां ने मारे त्यांरी, विकलां री गत होसे माठी रे॥भ०
॥१०॥ अनेक त्रस जीवां ने मारे, अनेकां पर देवे दांटो।
कुगुरु काजे जीव इण विध मारे, त्यांरी अकल आडी आई
पांटी रे॥ भ०॥११॥ श्वास उश्वास रूंधी जीव मारे,
महामोहनी कर्म बंधाय। कह्यो दशा श्रुत खंध सूत्र में
ते पिण विकलां ने खबर न काय रे॥ भ०॥ १२॥
चौगटरो तिणखो नाखे जठै, किड़ियां लाखां गमे आवे।
घर नीपे दड़ रूंधे जठै, किड़ियां लाखां गमे मर जावे
रे॥ भ० १३॥ पोती कर्म दोष सेवे तिणने, काह्या

गृहस्थी ने भेषधारी। दोय प्रकारा सेवनहारा कह्या छे, सूयगडांग दूजा श्रुत खंध मझारी रे॥ भ०॥१४॥ मोटो कर्म दोष में आधा करमी, दोष विशेष छे भारी। सदा नित रो नित आधा करमी दोष सेवे छे, ते निश्चय नहीं अणगारी रे॥ भ०॥१५॥ आधा करमी स्थानक सेवे उघाडुं, वलि साधु बाजे अनाखी। महामोहनी कर्म बांधे छे, दशा श्रुत खन्ध सूत्र छे साखी रे॥ भ० ॥ १६ ॥ आधा करमी स्थानक सेवे उघाडुं, पूछ्यां थी पाधरुं बोलणुं नहीं आवे। मिश्र बोल्यां थी महा मोहनी कर्म बंधाय, कूड़ कपट थी काम चलावे रे॥भ०॥१७॥ आधा करमी स्थानक सेवे उघाडुं, पूछ्यां थी बोले कूड़। त्यांरा श्रावक त्यांरी साख पूरे छे, ते गया बहती रे पूर रे॥ भ०॥ आधा करमी स्थानक सेवे उघाडुं, वलो झूठ बोले जाण जाण। त्यांरा जैसाई खामी तैसाज सेवक, निकल गयो जावक दाण रे॥ भ०॥१६॥ कोइक श्रावक त्यांरा भारी कर्मा, झूठ बोलतां न डरे लिगार। आधा करमी ने निर्दोष कहे छै, ते डूब गया कालीधार रे॥भ०॥ २०॥ आधा करमी उदेशिक भोगवे तिण ने, साध सरधे ते मिथ्याती। ठाणांग रे दश में ठाणे कह्यो छे अर्थ, मुंहडे तणी मति जाणो बाती रे॥ भ०॥ २१ ॥ आधा करमी उदेशिक भोगवे, ते छे भारी

करमां। शुद्ध बुद्ध बाहिरा जीव अज्ञानी, कैम पामैं श्री जिण धरमां रे ॥ भ० ॥ २२ ॥ आधा करमी दोष सूतर सूं बतायो, सूत में दोष अनेक। मोलरो लियो दोष कहूं छूं, ते सुणज्यो आणविवेक रे ॥ भ० ॥२३॥ मोलरो लियो भोगवै तिणने, निश्चय कह्या अणाचारी। दशवैकालिक रे तीजै अध्ययने शंका म जाणो लिगारी रे। भ० ॥ २४ ॥ मोलरो लियो भोगवै तिणने, भिष्टी कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठै अध्ययने निरणय करो बुद्धिमान रे ॥ भ० ॥ २५ ॥ मोल रो लियो भोगवै तिण ने, नर्कगामी कह्या भगवान। उत्तराध्ययन रे बीसमैं अध्ययने निरणय करो बुद्धिमान रे। भ० ॥२६॥ मोलरो लियो भोगवै, तिण में छै मोटी खोड़। आचारांगे पहले श्रुत खंधे, कह दिया भगवन्त जोर रे ॥भ०॥२७॥ मोलरो लियो भोगवै तिणरा, सुमत गुप्त महाव्रत भागा। निशीथ रे उगणीसमें उदेशै, कह्या व्रत बिहूणा नागा रे ॥ भ० ॥२८॥ मोलरो लियो एक वार भोगवै, तिणने चौमासी प्रायश्चित देणो। सदा नितरो नित ठेठ स्यूं भोगवै तिणने प्रायश्चित रो काई केहणो रे ॥ भ० ॥ २९ ॥ मोलरो लियो भोगवै तिणने, सबलो दोषण लागै। सदा नित रो नित ठेठ स्यूं भोगवै, तिणने प्रायश्चितरो कांई थाग रे ॥ भ० ॥३०॥ मोलरो लियो दोष सूत्र स्यूं

बताऊं, सूत्र में दोष अनेक। नितपिण्ड रो दोष कहूं कूं, सुणज्यो आण विवेक रे ॥ भ० ॥ ३१ ॥ नित रो नित एकण घर को बहिरै, तिणने निश्चय कह्या अणाचारी। दशवैकालिक रे तीजे अध्ययने, शंका म जाणो लिगारी रे ॥ भ० ॥ ३२ ॥ नित रो नित एकण घर को बहिरै, तिणने भ्रष्ट कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठे अध्ययने, जोय करो पिछाण रे ॥ भ० ॥ ३३ ॥ नित रो नित एकण घर को बहिरै, तिणने नर्कगामी कह्या भगवान। दशवैकालिक रे छट्ठे अध्ययने निरणाय करो बुद्धिमान रे ॥ भ० ॥३४॥ नित रो नित एकण घर को बहिरै, तिण में छै मोटी खोड़। आचारांग पहले श्रुत खंधे कह दिया भगवन्त चोर रे ॥ भ० ॥ ३५ ॥ नित रो नित एकण घरको बहिरै एक बार तिणने, चौमासी प्रायश्चित देणो। सदा नित रो नित ठेठ स्यूं बहिरै, तिणने प्रायश्चित रो कांई केहणो रे ॥ भ० ॥३६॥ नित रो नित एकण घर को बहिरै, तिणने सबलो दोषण लागै। सदा नित रो ठेठ स्यूं बहिरै, तिणने प्रायश्चित रो कांई थाग रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ भागल भेषधारी नित रो नित बहिरै, एकण घर को आहार। पूछ्यां थी पाधरा नहीं बोले, भूठ बोले विविध प्रकार रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ भागल भेषधारी नित रो नित बहिरै, एकण घर को

आहार पाणी। पूछ्यां थकी पाधरा नहीं बोले झूठ बोले जाण जाणी रे॥ भ०॥ ३९॥ आहार तणो संभोग न तोड्या, ते पिण खावा न काजै। एम मांडले रा आहार जुवा जुवा करै छै, निर्लज्जा मूल न लाजै रे॥ भ०॥ ४०॥

॥ ढाल दूजी ॥

(रे मुनिवर जीव दया प्रतिपालो एदेशी)

आधा करमी स्थानक माहे साध रेवै तो, पैहलोई महाव्रत भागो। दया रहित कह्यो सूत्र भगवती में, अनन्ता जनम मरण करसी आगो रे। मुनिवर जीव दया प्रतिपालो॥ ए आंकड़ी॥ १॥ सर्व सावज रा त्याग कीवे तो, दूजोई महाव्रत भागो। जे उवे कीवे स्थानक म्हारे काज न कीधो तो, कपट सहित झूठ लागो रे॥ मु०॥ २॥ जे जीव मुआ त्यांरो शरीर न आपे तो, अदत्त उण जीवां री लागी। आज्ञा लोपी श्री अरिहन्त देव नी, तिणस्यूं तीजो महाव्रत गयो भागी रे॥ मु०॥ ३॥ थानक ने आपणो करि राखे, ममता रहै नित लागी। मठ वासी मठ माहें बसे ज्यूं पांचमों महाव्रत गयो भागी रे॥ मु०॥ ४॥ चौथो ने छट्ठो तें

सो किण विध भाग्या, आचार कुशीलियां ने लेखे। एहवा भागल फिरै साधां ने भेष में, तिण ने बुद्धिवन्त ज्ञान स्यूं देखे रे॥मु०॥५॥ एक काय हण्यां स्यूं उत्कृष्टे भांगे, हिन्सा छः काय री लागे। एक व्रत भांग्या स्यूं उत्कृष्टे भांगे, व्रत छऊं गया भागे रे॥ मु०॥६॥ इण स्यूं तो दोष मोटा मोटा सेवै, साधां रा भेष मझारो। ते चतुर विचक्षण जाण हुसे ते, थांने कीम सरधे अणगारो रे॥ मु०॥ ७॥ दोष बेतालीस कह्या सूत्र मां, बावन कह्या अणाचारो। ए दोष सेव्यां सेवायां, मह्रा-व्रत में पड़से बिगाड़ो रे॥ मु०॥ ८॥ आचारांग रे बीजे अध्ययने, छठे उद्देशे निहालो। वचन सुण सुणने हिये विमासो, मत करो आल पंपालो रे॥ मु०॥ ९॥ कोई स्थानक निमिते ग्रन्थ देवे तिण ने, मुख स्यूं मति सरावो। आपस में छः काय जीवां नें, सानी करि जीव ने कांई मरावो रे॥ मु०॥ १०॥ स्थानक करावण ने धर्म कहो के, भोला ने मत भरमावो। आप रहिवा ने जग्यां कारणे, जीवां ने कांई मरावो रे॥ मु०॥११॥ साधु काजे जीव हणे त्यांरे, होसी भूंडे स्यूं भूण्डो। जे साधु उण जग्यां में रहसी तो, साधपणो तिण रो बूड़ो रे॥ मु०॥ १२॥ जिण स्थानक निमिते ग्रन्थ दियो तिण ने, उत्तरा जीवां रो उणने पापो। धर्म जाणे सो

पाप अठारमों, होसि घणो सन्तापो रे ॥ मु० ॥ १३ ॥ साधु काजे दड़ नींपे छपरा छावे, जीव अनेक विध मारै। आप डूबे वली वधे जीवा स्यूं, गुरां रो जनम विगाड़े रे ॥ मु० ॥ १४ ॥ ये धर्म ठिकाणे जीव हणो तो, दया किसी ठौर पालो। कुगुरां ने भरमाया तुम ने कांई लगावो कालो रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ रात अन्धारी ने जीव न सूझै तो, आडा मत जड़ो किंवाड़ो। छः काय रा पीयर वाजो तो, हाथ स्यूं जीव मत मारो ॥ मु० ॥ १६ ॥ जो थांने साची सीख न लागे, तो मत लेवो साधवियां रो शरणो। साधां ने रहणो द्वार उघाड़े, साधवियां रे चाल्यो के जड़णो रे ॥ मु० ॥१७॥ गृहस्थ साथे मेलो संदेशा, जब मारी जावे छः कायो। वो जोयां विना वेवे मारग में, एहवो मत करो अन्यायो रे ॥ मु० ॥१८॥ ए साधपणो थां स्यूं पलतो न दीसे तो, श्रावक नाम धरावो। शक्ति सारू व्रत चोखा पालो, दोषण मति लगावो रे ॥ मु० ॥ १९ ॥ आचार थां स्यूं पलतो न दीसे तो, औरां रे माथे मति न्हाखो। भग-वन्त ना फैड़ायत वाजो, तो झूठ बोलंता क्यूं न शंको रे ॥ मु० ॥२०॥ व्रत विहूणा साधु वाजे, यों ही लोकां में पुजावे। ठाले वादल ज्यूं थोता वाजे, ओ मोने अचरज आवे रे ॥ मु० ॥ २१ ॥ इत्यादिक आचार माहीं

ने, पूरो क्षेम कहवायो। हिन्सा माहीं जो धर्म थापो तो, पिण खबर न कायो रे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तेलो करै तिण ने तीन दिन कोई, उनुं पाणी कर पावे। तिण ने तो आगले रो श्रद्धा रे लेखे, एकन्त पाप बतावे रे ॥ मु० ॥ २३ ॥ चौथे दिन आरम्भ करी ने, छ: काय हणी ने जीमायो। तिण में मिश्र धर्म परूपो तो ओ किण विध मिलसे न्यायो रे ॥ मु० ॥ २४ ॥ तेला करै तेहने पाणी पायां, एकन्त पाप बतावे। चौथे दिन आरम्भ करी ने जीमावे, तिण में मिश्र किहां थी थावे रे ॥ मु० ॥२५॥ मिश्र माहें धर्म कीवे तिण री सरधा रे लेखे, ओ घणो सल कहवायो। हिन्सा माहें धर्म थापो तो, सूत्र सामो जोवो रे ॥मु०॥२६॥ अर्थ अनर्थ ने धर्म रे काजे, जीव हणे मन्द बुद्धि। धर्म काजे जीव हणे त्यांरी, श्रद्धा ऊन्धी स्यूं ऊन्धी रे ॥मु०॥२७॥ समुचय आचार साधु रो बतायो, तिण में राग द्वेष मति आणो। ए वचन सुण सुण हिये विमासो, मत करो खांचा ताणो रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ प्रीत पुराणी थी थां स्यूं पहली, तिण स्यूं भिन भिन कर समझाऊं। जे थारे मन में शंका हुवे तो, सूत्र काढि बताऊं रे ॥ मु० ॥२९॥ संवत् अट्ठारै वरस तेवीसे, मेड़ता शहर मझारो। वैशाख वदी दशम दिन थां ने, सीख दीनी हितकारो रे ॥ मु० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

पहिलां अरिहन्त ने नमूं, ज्यां साऱ्या आतम काम।
वली विशेषे वीर ने, ते शासण नायक स्वाम ॥१॥
तिण कारज साभी आपणा, पहुन्ता छै निरवाण।
सिद्धा ने वन्दणा करूं, ज्यां मेट्या आवण जाण ॥२॥
आचारज सहु सारसा गुण रतना री खाण।
उपाध्याय ने सरव साधुजी, ए पांचू पद वखाण ॥३॥
वांदीजे नित तेहने, नीचो शीश नमाय।
गुण ओलख वन्दणा करो, ज्यूं भव भवरा दुःख जाय ॥४॥
सुगुरु कुगुरु दोनूं तणी, गुण विना खबर न काय।
प्रथम कुगुरु ने ओलखो, सुणो सूतर रो न्याय ॥५॥
सूतर साख दियां विना, लोक न माने बात।
सांभल ने नर नारियां, छोड़ो मूल मिथ्यात ॥६॥
कुगुरु चरित अनन्त छै, ते पूरा केम कहाय।
थोड़ा सा परगट करूं, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥७॥

॥ ढाल तीजी ॥

(ऊंधी सरधा कोई मत राखो—पदेशी)

ओलखणां दोरी भव जीवां, कुगुरु चरित अनन्त जी। कहितां छेह न आवे तिण रो, इम भाख्यो भगवन्त

जी। साधु मत जाणो इण चलगत सूं ॥ १ ॥ आधा कारमी थानक में रहै तो, पड़्यो चारित में भेदजी। निशीथ रे दशमें उद्देशे, चार मास रो छेदजी ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारै ठाणा कह्या जूवा जूवा, एक विराधै कोयजी। बाल कह्यो श्री वीर जिणेश्वर, साध म जाणो सोयजी ॥ सा० ॥ ३ ॥ आहार सेज्या ने वसतर पातर, असुध लियां नहीं सन्तजी। दशवैकालिक छठे अध्ययने, भीष्ट कह्यो भगवन्तजी ॥ सा० ॥ ४ ॥ अचित वस्तु ने मोल लिरावै, तो सुमत गुपत हुवै खण्डजी। महाबरत पांचूं ही भागे, तिण रो चौमासी डंडजी ॥ सा० ॥५॥ ए तो भाव निशीथ में चाल्या, उगणीसमें उद्देश जी। सुध साधु विण कुण सुणावै, सूत नो ऊंडो रेश जी ॥ सा० ॥ ६ ॥ पुस्तक पातरा उपासरादिक, लिखरावै ले ले नामजी। आछा भूण्डा कही मोल बतावै, करै गृहस्थ रो कामजी ॥ सा० ॥ ७ ॥ ग्राहक ने तो कह्यो कहीजे, कुगुरु बीच दलालजी। बेचणवालो कह्यो वाणियो. तीनां रो एक हवालजी ॥ सा० ॥ ८ ॥ क्रय विक्रय में बरते ते तो, महा दोष छै एहजी। पैंतीसमां उत्तराध्ययन में, साधु न कह्यो तेहजी ॥ सा० ॥ ९ ॥ नित को बहिरै एकण घर को, च्यारां में एक आहारजी। दशवैकालिक तीजे अध्ययने, साधु ने

कह्यो अणाचारजी ॥ सा० ॥ १० ॥ जो लावे नित धोवण प्राणी, तिण लोप्यो सूतर रो न्यायजी। वतलायां बोले नहीं सूधा, दूषण देवे छिपायजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ नहिं कल्पे ते वस्तु वहिरे, तिणमें मोटी खोड़जी। आचाराङ्ग पहिले श्रुतखंधे, कहि दियो भगवन्त चोरजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ पहिलो वरत तो पूरो पड़ियो, जब आडा जड़े किंवाड़जी। कोटा आगल होडा अटकावे, ते निश्चय नहीं अणगारजी ॥ सा० ॥ १३ ॥ पोते हाथे जड़े उघाड़े, करे जीवां रा ज्यानजी। गृहस्थ उघाड़ने आहार वहिरावे, जद करे अणहुन्ता फेनजी ॥ सा० ॥ १४ ॥ साधवियां ने जड़णो चाल्यो, तिण री म करो ताणजी। वां लारे कोई साधु जड़े तो, भागल रा अह-नाणजी ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन करने जो जड़णो वंछे, तिण नहीं जाणी परपीड़जी। पेंतीसमां उत्तराध्ययनमें, वरज गया महावीरजी ॥सा०॥१६॥ परनिन्दा में राता माता, चित्त में नहीं संतोषजी। वीर कह्यो दशमां अंग मांहि, तिण में तेरे दोषजी ॥ सा० ॥ १७ ॥ कहे दीक्षा ले तो मो आगल लीजे, और कने दे पालजी। कुगुरु एहवा सूंस करावे, आ चौड़े ऊन्धी चालजी ॥सा०॥१८॥ इण वंधा थी ममता लागे, गृहस्थ सूं भेलप थायजी। निशीथ रे चौथे उद्देशे, दंड कह्यो जिनरायजी ॥सा०॥१९॥

जिमनवार में बहिरण जावे, आ साधां री नहीं रीतजी। बरज्यो आचारंग वृहत्कल्प में, वली उत्तराध्ययन निशीथजी ॥ सा० ॥२०॥ आलस नहीं भारा में जातां, बेठी पांत विशेषजी। सरस आहार ल्यावे भर पातरा, ज्यां लज्या छोड़ी ले भेषजी ॥ सा० ॥२१॥ चेला करण री चलगत ऊन्धी, चाला बहोत चलायजी। लियां फिरै गृहस्थ नें साथे, रोकड़ दाम दिरायजी ॥ सा० ॥ २२॥ विवेक विकल ने सांग पहिरावे, भेलो करै आहारजी। सामगिरि में जाय वंदावे, फिर फिर हुवे खुवारजी ॥ सा० ॥ २३ ॥ अजोग ने दीक्षा दीधी तें, भगवन्त नी आज्ञा वारजी। निशीथ रो डण्ड मूल न माने, ते बिटल हुवा विकरालजी ॥ सा० ॥२४॥ विण परलेह्यां पुस्तक राखै, तो जमै जीवां रा जालजी। पड़े कुंथवा उपजे मांकड़, जिण बांधी भागी पालजी ॥ सा० ॥२५॥ जावे बरस छमास निकलियां, तो पहिलो बरत हुवे खण्डजी। नित परलेयां बिण मेलै तिण ने, एक मास रो डण्डजी ॥ सा० ॥२६॥ गृहस्थ साथे कहे संदेशो, तो भेलो हुवे संभोगजी। तिण ने साधु किम सरधीजे, लागो जोगने रोगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ समाचार विवरासुध कहो कही, सानी कर गृहस्थ बोलायजी। कागद लिखावे करी आमना; पर हाथ देवे चलायजी ॥ सा० ॥

२८ ॥ आवण जावण बेसण उठण री, जायगा देवै बताय जी। इत्यादिक साधु कहे ग्रहस्थ ने, तो वेहूं बराबर थायजी॥ सा० ॥ २९ ॥ ग्रहस्थ ने देवै लोट पातरा, पूठा परत विशेषजी। रजोहरण ने पूंजणी देवै, ते भिष्ट हवा लेई भेषजो ॥सा०॥३०॥ पूछे तो कहे परठ दिया में कूड कपट मन मांहिजी। काम पड़े जब जाय उराले न मिटी अन्तर चाहिजी ॥ स०॥ ३१ ॥ कहे परठ्या ग्रहस्थ ने देई, बोलै वले अन्यायजी। कह्यो आचारांग उत्तराध्ययन में, साधु परठे एकन्त जायजी ॥सा०॥३२॥ करे ग्रहस्थ सूं सट्ला वट्लो, पंडित नाम धरायजी। पूरो प्रड़ो सगलां वरतां री, भेष ले भूला जायजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ थोरी उपधि ग्रहस्थ ने दीधां, वरत रहे नहीं एकजी। चौमासी डंड निशीथ में गुंथ्यो, तिण छोड़ी जिन धर्म टेकजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ विन आंकुस जिम हाथी चाले, घोड़ो विगर लगामजी। एहवी चाल कुगुरां री जाणो, कहवाने साधु नामजी ॥ सा० ॥ ३५ ॥ अणुकंपा नहीं छहुं षान नो, गुण विन कहे अमे साधजी। आ चरचा अणुयोग दुवारमें, विरला परमारथ लाधजी ॥ सा० ॥ ३६ ॥ कह्यो आचारांग उत्तराध्येन में साधु करे चालतां वातजी। ऊंचो तिरछो दिष्टि जोवे, तो हुवे छःकाय री घातजी ॥ सा० ॥ ३७ ॥ सरस आहार

ले बिन मरयादा, तो बधै देही री लोथजी। काच मणि परकाश करै ज्यूं, कुगुरु माया थोथजी ॥ सा० ॥३८॥ दबक दबक उतावला चाले. त्रस थावर मार्‌या आयजी। इरज्या सुमत जोयां बिन चालै, ते किम साधु थायजी ॥ सा० ॥ ३६ ॥ कपड़ा में लोपी मरयादा, लांबा पना लगायजी। इधका राखै दोय पुर उडें, वले बोले मृषा-वायजी ॥ सा० ॥ ४० ॥ लुष्टपुष्ट कर मांस बधारै, करै विगैरा पूरजी। माठा परिणामा नार्‌यां निरखै, तो साधुपणा थी दूरजी ॥ सा० ॥४१॥ उपग्रण जो अधिका राखै, तिण मोटा कियो अन्यायजी। निशीथ रे सोलमें उद्देशै, चौमासो चारित जायजी ॥ सा० ॥४२॥ मूरख ने गुरु एहवा मिलिया, ते लेई डुबसी लारजी। साचो मारग साधु बतावै, तो लड़वा नै हुवै त्यारजी ॥ सा० ॥ ४३ ॥ एहवा गुरु साचा करी मानै, ते अन्ध अज्ञानी बालजी। फोड़ा पड़ै उत्कृष्टा तिण में, रुले अनन्तो कालजी ॥ सा० ॥४४॥ हलुकरमी जीव सुण सुण हरषै, करै भारी कर्मा द्वेषजी। सूतर रो न्याय निन्दा कर जानै, तो डूबै वले विशेषजी ॥ सा० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

भेष पहर्‌यो भगवान रो, साधु नाम धराय।
आचार में ढीला घणा, ते कार्‌यो काठा लग जाय ॥१

त्यांने वांदे गुरु जाणने, वले कूड़ी करै पखपात ।
त्यां झूठा ने साचा करण खपै, त्यांरे मोटो शाल मिथ्यात ॥
कुगुरु तणा पग वांदने, श्रागै वूडा जीव अनन्त ।
वले वूडे ने वूडसी घणा, त्यांरो कहतां न श्रावै अन्त ॥
साध मारग छै सांकडो, तिण में न चाले खोट ।
आगार नहीं त्यांरे पापरो, त्यां वरत किया नवकोट ॥
भेषधारी भागल घणां, त्यांसूं पलै नहीं श्राचार ।
कुण कुण श्रकारज कर रह्या, ते सुणज्यो विसतार ॥५॥

॥ ढाल चौथी ॥

आदर जीव खिम्याँ गुण आदर (पदेशी)

कुगुरु तणा चरित चावा कर सूं, सूतरनी देई साखजी । सुमता श्राण सुणो भव जीवां, श्रीवीर गया के भाषजी ॥ साध मत जाणो इण आचारे ॥ १ ॥ जो थे कुगुरु संठा कर झाल्या, तो सुण सुण म करो द्वेषजी । साच झूठ रो करो निवेरो, सूतर सामो देख जी ॥ सा० ॥ २ ॥ जीमणवार मांहो सूं कोई गृहस्थ, ल्यावै धोवण पाणी मांडजी । पछे आप तणे घरे श्राण वहिरावे, ते करै भेष ने भांडजी ॥ सा० ॥ ३ ॥ जाण जाणने साधु वहिरे, तिण लोप दियो श्राचारजी । ते प्रत्यक्ष साहमो श्राण्यो लेवै, त्यांने किम कहिजे श्रणगार

जी। सा० ॥ ४ ॥ ए अणाचार उघाड़ी सेवै, जे साहमो आण्यो ले आहारजी। दशवैकालिक तीजे अध्ययने, कोई जोवो आंख उघारजी ॥ सा० ॥ साध साधवी ठले माले, एकण दरवाजे जायजी। वीर वचन सूं उलटा पड़िया, चवड़े करै अन्यायजी ॥ सा० ॥ ६ ॥ गांव नगर पुर पाटण पाड़ो, तिण रो हुवै एक निकालजी। तिहां साध साधवी नहीं रहै भेला, आ बांधी भगवन्त पालजी ॥ सा० ॥ ७ ॥ एकण दरवाजे साध साधवी, जावै नगरी बारजी। तो अप्रतीत उठे लोकां में, कोई वरत भागी हुवै खुवारजी ॥ सा० ॥ ८ ॥ जुदो जुदो निकाल छै तो पिण कोई जावै एकण दरवाजजी। धेठा हटक न मानै किणरी, वले न मानै मन में लाजजी ॥ सा० ॥ ९ ॥ एक मिकाल तिहां रहिणोई वरज्यो, तो किम जाए एकण दुवारजी। ए वृहत्कल्प रै पहिले उद्देशे, तै बुधवन्त करो विचारजी ॥ सा० ॥१०॥ गृहस्थ ने घर जाय गोचरी, जो जड़ियो देखै दुवारजी। तिहां सुध साधु तो फिर जाय पाछा, भागल जावै खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ कोई भेषधार्‌यां रे एहवी सरधा, जो जड़ियो देखै दुवारजी। तो धणी तणी आगन्या लेई ने, मांहि जावै खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ हाथ सूं साध किंवार

उघाड़े, मांहि जावे वहिरण ने आहारजी। इसड़ी ढीली करे परूपणा, ते विटल हुवा विकरालजी॥ सा० ॥ १३ ॥ किंवार उघाड़ी ने आहार वहिरण रो. मूल न सरधे पापजी। कदा न गया तो पण गया सरीखा, आ कर राखी छे थापजी ॥ सा० ॥ १४ ॥ किंवार उघाड़ ने वहिरण ने जावे, तो हिंसा जीवां री थायजी। ते आवसग सूतर मांहि वरज्यो, चौथा अध्ययन रे मांय जी ॥ सा० ॥ १५ ॥ गांव नगर बारे उतरियो, कटक सथवारो ताहिजी। जो साधु रात रहे तिण ठामे, से नहीं जिण आज्ञा मांहिजी ॥ सा० ॥ १६ ॥ एक रात रहे कटक में तिण ने, च्यार मास रो छेदजी। ए वृहत् कल्प रे तीजे उदेशे, ते सुण सुण म करो खेद जी ॥ सा० ॥ १७ ॥ इसड़ा दोष जाणी ने सेवे, तिण छोड़ी जिण धर्म रीतजी। एहवा भिष्ट आचारी भागल, त्यांरी कुण करसी परतीतजी ॥ सा० ॥ १८ ॥ विन कारण आंख्यां में अंजण, जो घाले आंख मझार जी। त्यांने साधवियां किम सरधीजे, त्यां छोड़ दियो आचारजी ॥ सा० ॥ १९ ॥ विन कारण जो अंजण घाले, तो श्री जिन आज्ञा वारजी। दशवैकालिक तीजे अध्ययने, ते उघाड़ो अनाचारजी ॥ सा० ॥ २० ॥ वस्त्र पात्र पोथी पानादिक, जाय गृहस्थ रे घरे मेलजी।

पक्की बिहार कर दे घणो भलामण, तिण प्रवचन दीधा ठेलजी ॥ सा० ॥ २१ ॥ पक्के गृहस्थ थांहमा सांहमा मेलतां, हिंस्या जीवां री थायजी । तिण हिंसा सूं गृहस्थ ने साधु, दोनूं भारी हुवै तायजी ॥ सा० ॥ २२ ॥ भार उपरावे गृहस्थ आगे, ते किम साधु थायजी । निशीथ रे बार में उदेशे, चौमासो चारित आयजी ॥ सा० ॥२३॥ वले बिण पडलेहां रहे सदा नित, गृहस्थ रा घर मांय जी । ओ साधपणो रहसी किम त्यांरो, जोवो सूतर रो न्यायजी ॥ सा० ॥ २४ ॥ जो बिण पडलेह्यां रहे एकण दिन, तिण ने डंड कह्यो मासीकजी । निशीथ रे दूजे उदेशे, तिहां जोय करो तहतीकजी ॥ सा० ॥ २५ ॥ मातपितादिक सगा सनेही, त्यांरा घर में देखे खालजी । त्यांने परिगरो साध दिरावै, आ चौडे कुगुरु री चालजी ॥ सा० ॥ २६ ॥ सानीकर साध दिरावे, रुपिया, बरत पांचमों भागजी । वले पूछ्यां भूठ कपट सूं बोले, त्यां पहिर बिगाड्यो मांगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ न्यातीला ने दाम दिरावे, तिण रे मोह न मिटियो कोयजी । वले सार संभार करावै त्यांरी, ते निश्चय साध न होयजी ॥ सा० ॥ २८ ॥ अनरथ रो मूल कह्यो परिगरो, ठाणांग तीजे ठाणजी । तिण री साध करे दलाली, ते पूरा भूठ अजाणजी ॥ सा० ॥ २९ ॥ ऋतु उन्हाले पाणी ठारै,

गृहस्थ रा ठाम मझारजी । मनमाने जव पाछा सूंपे, ते श्री जिन आज्ञा वारजी ॥ सा० ॥ ३० ॥ गृहस्थ रा भाजन में साधु, जीमे असणादिक आहारजी । तिण ने भिष्ट कह्यो दशवैकालिक में, छठा अध्ययन मझारजी ॥ सा० ॥ ३१ ॥ केई सांग पहिर साधवियां वाजे, पिण घट मांहि नहीं विवेकजी । आहार करे जद जड़े किंवाड़, वले दिन मांहि वार अनेकजी ॥ सा० ॥ ३२ ॥ ठरडे मातरे गोचरी जावे, जब आडा जड़े किंवारजी । वले साधां कने आवे तोही जरने, त्यांरो विगर गयो आचारजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ साधवियां ने जड़णो चाल्यो, ते शीलादिक राखण काजजी ॥ और काम जो जड़े साधवी, तिण छोड़ी संजम लाजजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ आवसग मांहि हिंसा कही जड़ियां, आलोवण खाते ताहिजी । मन करने जड़णो नहिं वंछे, उत्तराध्ययन पैंतीसमां मांहिजी ॥ सा० ॥३५॥ औषध आद दे वहिरी आणे, कोई वासी राखै रातजी । ते जाय मेलै गृहस्थ रा घर में, पछे नित ल्यावै परभातजी ॥ सा० ॥ ३६ ॥ आप री थको गृहस्थ ने सूंपे, श्रो मोटो दोष पिछाणजी । वले वीजो दोष वासी राख्यां रो, तीजो अजैणा रो जाणजी ॥ सा० ॥ ३७ ॥ वले चौथो दोष पूछ्यां झूठ बोले, वासी

राख्यो न कहै लूढजो। कोई भेषधारी छै एहवा भागल, त्यांरे झूठ कपट छै गूढजो॥ सा०॥३८॥ औषध आद दे बासी राख्यां, बरतां में पड़े बघारजी। कह्यो दश-वैकालिक तीजे अध्ययने, बासी राखै तो अणाचारजी॥ स०॥ ३६॥ केई आधाकरमी पुस्तक वहिरै, वले तेहिज लीधां मोलजी। ते पिण साहमां आण्यां वहिरै, त्यांरे मोटो जाणज्यो पोलजी॥ सा०॥४०॥ कोई आप कने दीचा ले तिणरै, सानी कर मेले साजजो। पुस्तक पानादिक मोल लिरावै, वले कुण कुण करै अकाजजी॥ सा०॥ ४१॥ गच्छवासी प्रमुख आगा सूं, लिखावै सूतर जाणजो। पहिला मोल कराय परत री, संचकर दिरावै आणजो॥ सा०॥४२॥ रूपिया मेहलावे और तणे घर, इसड़ो सैंठो करै कामजो। ते पिण हाथ परत आयां दिन, दीचा दे काढ़ै तामजो॥ सा०॥४३॥ पछै गच्छ-वासी विकलां सूं डरतां, परत लिखै दिन रातजो। जीव अनेक मरै तिण लिखतां, करै त्रस थावर री घात जो॥ सा०॥४४॥ इण विध साधु परत लिखावै, तिण संयम दीधो खोयजो। जे दया रहित छै एहवा दुष्टी ते निश्चय साध न होयजो॥सा०॥४५॥ छः काय हणीने परत लिखी ते, आधा करमी जाणजो। तेहिज परत तो साधु वहिरै, तो भागल रा एहनाणजों॥सा०॥४६॥

वले तेहिज परत टोला में राखै, आधा करमी जाण जी । जे शामिल हुवा ते सघला डूबा, तिण में शङ्का मत आणजी ॥ सा० ॥ ४७ ॥ आधा करमी रा लेवाल रुले तो, उत्कृष्टो काल अनन्तजी । दया रहित कह्यो तिण साधु ने, भगवती में भगवन्तजी ॥ सा० ॥ ४८ ॥ कोई श्रावक साध समीपे आए, हरषे वांदे पग झालजी । जद साधु हाथ दे तिण रे माथे, आ चोड़े कुगुरु री चालजी ॥ सा० ॥४९॥ गृहस्थ रै माथे हाथ देवै तो, गृहस्थ वरोवर जाणजी । एहवा विकलां ने साधु सरधै ते पिण विकल समानजी ॥ सा० ॥५०॥ गृहस्थ रै माथे हाथ दियो तिण, गृहस्थ सूं कीधो संभोगजी । तिणने साधु किम सरधीजे, लागै जोग ने रोगजी ॥ सा० ॥ ५१ ॥ दशवैकालिक आचारांग मांही, वले जोवो सूत्र निशीथजी । गृहस्थ ने माथे हाथ देवै आ परत्यक्ष अन्धो रीतजी ॥ सा० ॥ ५२ ॥ चेला करै ते चोर तणी परै, ठग पासोगर ज्यूं तामजी । उजवक ज्यूं तिण ने उचकावे, ले जाय मूंडे और गामजी ॥ सा० ॥ ५३ ॥ आछो आहार दिखावे तिण ने, कपड़ादिक मही दिखायजी । इत्यादिक लालच लोभ वतावे, भोला ने मूंडै भरमायजी ॥ सा० ॥ ५४ ॥ इण विध चेला कर मत बांध्यो, ते गुण विन कोरो भेषजी । साध पणा रो

ले बिन मरयादा, तो बधे देही री लोथजी। काच मणि परकाश करै ज्यूं, कुगुरु माया थोथजी ॥ सा० ॥३८॥ दबक दबक उतावला चालै, त्रस थावर मास्या जायजी। इरज्या सुमत जोयां बिन चालै, ते किम साधु थायजी ॥ सा० ॥ ३९ ॥ कपड़ा में लोपी मरयादा, लांबा पना लगायजी। इधका राखे दोय पुर उडें, वले बोलै मृषा-वायजी ॥ सा० ॥ ४० ॥ लुष्टपुष्ट कर मांस बधारै, करै विगैरा पूरजी। माठा परिणामा नास्यां निरखे, तो साधुपणा थी दूरजी ॥ सा० ॥४१॥ उपग्रण जो अधिका राखै, तिण मोटा कियो अन्यायजी। निशीथ रे सोलमें उद्देशे, चौमासी चारित जायजी ॥ सा० ॥४२॥ मूरख ने गुरु एहवा मिलिया, ते लेई डुबसी लारजी। साचो मारग साधु बतावै, तो लड़वा ने हुवै त्यारजी ॥ सा० ॥ ४३ ॥ एहवा गुरु साचा करी मानै, ते अन्ध अज्ञानी बालजी। फोड़ा पड़े उत्कृष्टा तिण में, रुले अनन्तो कालजी ॥ सा० ॥४४॥ हलुकरमी जीव सुण सुण हरषे, करै भारी कर्मा द्वेषजी। सूतर रो न्याय निन्दा कर जानै, तो डूबै बले विशेषजी ॥ सा० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

भेष पहस्यो भगवान रो, साधु नाम धराय।
आचार में ढीला घणा, ते कह्यो कठा लग जाय ॥ १

त्यांने वांदे गुरु जाणने, वले कूड़ी करै पखपात।
त्यां झूठा ने साचा करण खपै, त्यांरे मोटो शाल मिथ्यात॥
कुगुरु तणा पग वांदने, आगे बूडा जीव अनन्त।
वले वूडे ने वूडसी घणा, त्यांरो कहतां न आवै अन्त॥
साध मारग छै सांकडो, तिण में न चाले खोट।
आगार नहीं त्यांरे पापरो, त्यां वरत किया नवकोट॥
भेषधारी भागल घणां, त्यांसूं पलै नहीं आचार।
कुण कुण अकारज कर रह्या, ते सुणज्यो विसतार॥५॥

॥ ढाल चौथी ॥

आदर जीव खिम्याँ गुण आदर (परदेशी)

कुगुरु तणा चरित चावा कर सूं, सूतरनी देई साखजी। सुमता आण सुणो भव जीवां, श्रीवीर गया छै भाषजी॥ साध मत जाणो इण आचारे॥१॥ जो थे कुगुरु संठा कर झाल्या, तो सुण सुण म करो द्वेषजी। साच झूठ रो करो निवेरो, सूतर सामो देख जी॥ सा०॥२॥ जीमणवार मांही सूं कोई गृहस्थ, ल्यावे धोवण पाणी मांडजी। पछै आप तणे घरे आण वहिरावे, ते करै भेष ने भांडजी॥ सा०॥३॥ जाण जाणने साधु वहिरे, तिण लोप दियो आचारजी। ते प्रत्यक्ष साहमो आण्यो लिवै, त्यांने किम कहिजे अणगार

जी। सा० ॥ ४ ॥ ए अणाचार उघाड़ो सेवे, जे साहमो आण्यो ले आहारजी। दशवैकालिक तीजे अध्ययने, कोई जोवो आंख उघारजी ॥ सा० ॥ साध साधवी ठले माले, एकण दरवाजे जायजी। वीर वचन सूं उलटा पड़िया, चवड़े करे अन्यायजी ॥ सा० ॥ ६ ॥ गांव नगर पुर पाटण पाड़ो, तिण रो हुवे एक निकालजी। तिहां साध साधवी नहीं रहे भेला, आ बांधी भगवन्त पालजी ॥ सा० ॥ ७ ॥ एकण दरवाजे साध साधवी, जावे नगरी बारजी। तो अप्रतीत उठे लोकां में, कोई बरत भागे हुवे खुवारजी ॥ सा० ॥ ८ ॥ जुदो जुदो निकाल छे तो पिण कोई जावे एकण दरवाजजी। धेठा हटक न माने किणरी, वले न माने मन में लाजजी ॥ सा० ॥ ९ ॥ एक निकाल तिहां रहिणोई बरज्यो, तो किम जाए एकण दुवारजी। ए वृहत्कल्प रे पहिले उद्देशे, ते बुधवन्त करो विचारजी ॥ सा० ॥१०॥ गृहस्थ ने घर जाय गोचरी, जो जड़ियो देखे दुवारजी। तिहां सुध साधु तो फिर जाय पाछा, आगल जावे खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ कोई भेषधार्‍यां रे एहवी सरधा, जो जड़ियो देखे दुवारजी। तो धणी तणी आगन्या लेई ने, मांहि जावे खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ हाथ सूं साध किंवार

उघाड़े, मांहि जावे वहिरण ने आहारजी । इसड़ो ढीलो करै परूपणा, ते विटल हुवा विकरालजी ॥ सा० ॥ १३ ॥ किंवार उघाड़ी ने आहार वहिरण रो, सूल न सरधे पापजी । कदा न गया तो पण गया सरीखा, था कर राखी छै थापजी ॥ सा० ॥ १४ ॥ किंवार उघाड़ ने वहिरण ने जावे, तो हिंसा जीवां री थायजी । ते आवसग सूतर मांहि वरज्यो, चौथा अध्ययन रे मांय जी ॥ सा० ॥ १५ ॥ गांव नगर बारै उतरियो, कटक सथवारो ताहिजी । जो साधु रात रहै तिण ठामे, ते नहीं जिण आज्ञा मांहिजी ॥ सा० ॥ १६ ॥ एक रात रहै कटक में तिण ने ; च्यार मास रो छेदजी । ए वृहत् कल्प रे तीजे उदेशे, ते सुण सुण म करो खेद जी ॥ सा० ॥ १७ ॥ इसड़ा दोष जाणी ने सेवै, तिण छोड़ो जिण धर्म रीतजी । एहवा भिष्ट आचारी भागल, त्यांरो कुण करसी परतीतजी ॥ सा० ॥ १८ ॥ विन कारण आंख्यां में अंजण, जो घाले आंख मझार जी । त्यांने साधवियां केम सरधीजे, त्यां छोड़ दियो आचारजी ॥ सा० ॥ १९ ॥ विन कारण जो अंजण घाले, तो श्री जिन आज्ञा बारजी । दशवैकालिक तीजे अध्ययने, ते उघाड़ो अनाचारजी ॥ सा० ॥ २० ॥ वस्त्र पात्र पोथी पानादिक, जाय गृहस्थ रे घरे मेलजी ।

पछी बिहार कर दे घणी भलामण, तिण प्रवचन दीधा ठेलजी ॥ सा० ॥ २१ ॥ पछे गृहस्थ आंहमा सांहमा मेलतां, हिंस्या जीवां री थायजी। तिण हिंसा सूं गृहस्थ ने साधु, दोनूं भारी हुवै तायजी ॥ सा० ॥ २२ ॥ भार उपरावे गृहस्थ आगे, ते किम साधु थायजी। निशीथ रे बार में उदेशे, चौमासो चारित जायजी ॥ सा० ॥२३॥ वले बिण पडलेहां रहे सदा नित, गृहस्थ रा घर मांय जी। ओ साधपणो रहसी किम त्यांरो, जोवो सूतर रो न्यायजी ॥ सा० ॥ २४ ॥ जो बिण पडलेह्यां रहै एकण दिन, तिण ने डंड कह्यो मासोकजी। निशीथ रे दूजे उदेशे, तिहां जोय करो तहतीकजी ॥ सा० ॥ २५ ॥ मातपितादिक सगा सनेही, त्यांरा घर में देखे खालजी। त्यांने परिगरो साध दिरावै, आ चौडे कुगुरु री चालजी ॥ सा० ॥ २६ ॥ सानीकर साध दिरावै, रुपिया, बरत पांचमीं भागजी। वले पूछ्यां झूठ कपट सूं बोले, त्यां पहिर बिगाड्यो मांगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ न्यातीला ने दाम दिरावै, तिण रे मोह न मिटियो कोयजी। वले सार संभार करावै त्यांरी, ते निश्चय साध न होयजी ॥ सा० ॥ २८ ॥ अनरथ रो मूल कह्यो परिगरो, ठाणांग तीजे ठाणजी। तिण रो साध करे दलालो, ते पूरा झूठ अजाणजी ॥ सा० ॥ २९ ॥ ऋतु उन्हाले पाणी ठारे,

गृहस्थ रा ठाम मझारजी। मनमाने जब पाछा सूंपे, ते श्री जिन आज्ञा बारजी ॥ सा० ॥ ३० ॥ गृहस्थ रा भाजन में साधु, जीमे असणादिक आहारजी। तिण ने भिष्ट कह्यो दशवैकालिक में, छठा अध्ययन मझारजी ॥ सा० ॥ ३१ ॥ केई सांग पहिर साधवियां वाजे, पिण घट मांहि नहीं विवेकजी। आहार करे जद जड़े किंवाड़, वले दिन मांहि वार अनेकजी ॥ सा० ॥ ३२ ॥ ठरडे मातरे गोचरी जावे, जब आडा जड़े किंवारजी। वलि साधां कने आवे तोही जरने, त्यांरो विगर गयो आचारजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ साधवियां ने जड़णो चाल्यो, ते शीलादिक राखण कानजी ॥ और काम जो जड़े साधवी, तिण छोड़ी संजम लाजजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ आवसग मांहि हिंसा कही जड़ियां, आलोवणा खाते ताहिजी। मन करने जड़णो नहिं वंछे, उत्तराध्ययन पैंतीसमां मांहिजी ॥ सा० ॥३५॥ औषध आद दे वहिरी आणे, कोई बासी राखे रातजी। ते जाय मेले गृहस्थ रा घर में, पछे नित ल्यावे परभातजी ॥ सा० ॥ ३६ ॥ आप रो थको गृहस्थ ने सूंपे, ओ मोटो दोष पिछाणजी। वले वीजो दोष बासी राख्यां रो, तीजो अजैणा रो जाणजी ॥ सा० ॥ ३७ ॥ वले चौथो दोष पूछ्यां झूठ बोले, बासी

राख्यो न करै सूढजो । कोई भेषधारी के एहवा भागल, त्यांरे झूठ कपट के गूढ़जो ॥ सा० ॥३८॥ औषध आद दे बासी राख्यां, बरतां में पड़े बघारजो । कह्यो दश-वैकालिक तोजे अध्ययने, बासी राखे तो अणाचारजो ॥ स० ॥ ३९ ॥ कोई आधाकरमी पुस्तक बहिरै, वले तेहिज लीधां मोलजो । ते पिण साहमां आण्यां बहिरै, त्यांरे मोटी जाणज्यो पोलजो ॥ सा० ॥४०॥ कोई आप कने दीचा ले तिणरै, सानो कर मेलै साजजो । पुस्तक पानादिक मोल लिरावे, वले कुण कुण करै अकाजजो ॥ सा० ॥ ४१ ॥ गच्छवासी प्रमुख आगा सूं, लिखावे सूतर जाणजो । पहिला मोल कराय परत रो, संचकार दिरावे आणजो ॥ सा० ॥४२॥ रुपिया मेंहलावे और तणे घर, इसड़ो सैंठो करै कामजो। ते पिण हाथ परत आयां दिन, दीचा दे काढ़े तामजो ॥ सा० ॥४३॥ पछे गच्छ-वासी बिकलां सूं डरतां, परत लिखे दिन रातजो । जीव अनेक मरै तिण लिखतां, करै त्रस थावर री घात जो ॥ सा० ॥४४॥ इण विध साधु परत लिखावे, तिण संयम दीधो खोयजो । जे दया रहित के एहवा दुष्टी ते निश्चय साध न होयजो ॥सा०॥४५॥ छः काय हणीने परत लिखी ते, आधा करमी जाणजो । तेहिज परत तो साधु बहिरै, तो भागल रा एहनाणजो ॥सा०॥४६॥

वले तेहिज परत टोला में राखै, आधा करमी जाण जो। जे शामिल हुवा ते सघला डूवा, तिण सें शङ्का मत आणजो ॥ सा० ॥ ४७ ॥ आधा करमी रा लेवाल रुले तो, उत्कृष्टो काल अनन्तजो। दया रहित कह्यो तिण साधु ने, भगवती में भगवन्तजो ॥ सा० ॥ ४८ ॥ कोई श्रावक साध समीपे आए. हरषे वांदे पग झालजो। जद साधु हाथ दे तिण रे माथे, आ चोड़े कुगुरु री चालजो ॥ सा० ॥४६॥ गृहस्थ रे माथे हाथ देवै तो, गृहस्थ वरोवर जाणजो। एहवा विकलां ने साधु सरधे ते पिण विकल समानजो ॥ सा० ॥५०॥ गृहस्थ रे माथे हाथ दियो तिण, गृहस्थ सूं कीधो संभोगजो। तिणने साधु किम सरधीजे, लागे जोग ने रोगजो ॥ सा० ॥ ५१ ॥ दशवैकालिक आचारांग मांही, वले जोवो सूत्र निशोथजो। गृहस्थ ने माथे हाथ देवें आ परत्यंच ऊंधी रीतजो ॥ सा० ॥ ५२ ॥ चेला करे ते चोर तणी परे, ठग पासोगर ज्यूं तामजो। उजवक ज्यूं तिण ने टचकावे. ले जाय मूंडे और गामजो ॥ सा० ॥ ५३ ॥ आछो आहार दिखावे तिण ने, कपड़ादिक मर्हीं दिखायजो। इत्यादिक लालच लोभ वतावे, भोला ने मूंडे भरमायजो ॥ सा० ॥ ५४ ॥ इण विध चेला कर मल बांध्यो, ते गुण विन कोरो भेषजो। साध पणा रो

सूतर पहिले श्रुत खंधे, नवमो उद्देशो जोय संभालो॥ आ०॥ ४२॥ आहार करै गुरु री आगन्या सूं, तिण साधु ने वीर कह्यो छै मोचो। अठारमो अध्ययन ज्ञाता रो जोई, सांसो काटो मेटो मन रो धोखो॥ आ०॥ ४३॥ शब्द रूप गंध रस फरसरी, साधां रे इव्रत मूल न कायो। सूयगडाअंग अध्ययन अठार में और उववाई सूत्र मायो आ०॥ ४४॥ साधां रे इव्रत कहै पाखण्डी, तिण कुमती री संगत दूर निवारो। इम सांभल ने उत्तम नरनारी, सर्व व्रती गुरु माथे धारो॥ आ०॥ ४५॥

॥ दोहा ॥

समदृष्टि आरे पांचमें, थोड़ी ऋद्धि अल्प मान।
मिथ्यादृष्टि जोड़े हुसी, बहु ऋद्ध बहु सम्मान॥१॥
समण थोड़ा नै मूढ़ घणा, पांच में आरै चैन।
भेष लेई साधु तणो, करसी कूड़ा फैन॥२॥
साधु अल्प पूजा हुसी, ठाणा अङ्ग में साख।
असाधु महिमा अति घणो, श्रीवीर गया छै भाख॥३॥
कुदेव कुगुरु कुधर्म में, घणा लोक रह्या बंध होय।
ओलखने निरणो करै, ते तो विरला जोय॥४॥

साध मारग छै सांकड़ो, भोला ने खबर न काय।
जिम दीवे पड़े पतंगियो, तिम पड़े मगां में जाय ॥५॥
घणा साधु ने साधवी, श्रावक श्राविका लार।
उलटा पड़ी जिण धर्म थी, पड़सी नरक मझार ॥६॥
महा निशीथ में मैं सुणी, गुण बिन धारी भेष।
लाखां क्रोड़ा गमे सांवठा, नरक पडंता देख ॥७॥
लीधा व्रत न पालसी, खोटी दृष्ट अयाण।
तिणने कही छै नारकी, कोई आप म लेज्यो ताण ॥८॥
आगम थी अवला वहै, साधु नाम धराय।
सुध करणी थी वेगला, ते कह्या कठा लग जाय ॥९॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

चन्द्रगुप्त राजा सुणो (एदेशी)

सीधा घर आपे साधु ने, वले और करावे आगै रे।
एहवा उपासरा भोगवे, त्यांने वजर किरिया लागै रे।
तिणने साधु मिक जाणिये ॥ १ ॥ आचारांग दूजे कह्यो महा दुष्ट दोषण छै तिणमें रे। जो वीर वचन सवलो करो, तो साधु पणो नहीं तिणमें रे ॥ ति० ॥२॥ साधु अरथे करावे उपासरो, छायो लिप्यो गृहस्थ वाल रागो रे। तिण थानक में रहै तेहने, सावद्य किरिया लागी रे ॥ ति० ॥ ३ ॥ तिणने भावे तो गृहस्थ कह्यो, दियो

आचारांग साखी रे। भेषधारी कह्यो सिद्धान्त में, तिण री भगवन्त काण न राखी रे॥ ति० ॥ ४ ॥ सिज्यातर पिण्ड भोगवे, वले कुबुद्ध केलवे कपटी रे। धणी छोड़ आग्या ले और री, सरस आहारादिक रा लंपटी रे॥ ति० ॥ ५ ॥ सबलो दोषण लागे तेहने, निशीथ में डंड भारी रे। अणाचारी कह्यो दशवैकालिकी, भगवंत री सीख न धारी रे॥ ति० ॥६॥ अणकंपा आण श्रावक तणी, द्रव दिरावण लागे रे। दूजे करण खंड हुवो ब्रत पांचवों, तीजे करण पांचूं ही भागे रे॥ ति० ॥ ७ ॥ गृहस्थ जिमावण री करे आमना, वले करे साधु दलाली रे। चौमासी डंड कह्यो निशीथ में, बरत भांग हुवो खाली रे॥ ति० ॥८॥ करे बांसादिक नो बांधवो, वले किया भींत ना चेजा रे। छायो लीप्यो तेह ने, कहीजे सारी कर्म सेजा रे॥ ति० ॥ ९ ॥ एहवी बसती भोगवे, ते साधु नहीं लवलेशो रे। मासिक डंड कह्यो तेहने, निशीथ रे पांच में उदेशो रे॥ ति० ॥ १० ॥ बांधे पर्दा परेच कनात ने, वले चन्द्रवा सिरकी ने ताटा रे। साधु अरथे करावे ते भोगवे, ज्यांरा ज्ञानादिक गुण न्हाठा रे॥ ति० ॥ ११ ॥ थापीतो थानक भोगवे, त्यां दिया महाब्रत भांगो रे। भावे साधुपणा थी वेगला, त्यां ने गुण विन जाणे सांगो रे॥ ति० ॥ १२ ॥ काच

चसमो वरज्यो ते राखियो, वले जाणै छै दोषण थोरो रे। पांचमों व्रत पूरो पल्यो, वले जिण आगन्या रो चोरो रे ॥ ति० ॥१३॥ गृहस्थ आयो देखी मोटका, हाव भाव सूं हरषित हुवा रे ॥ विछावण री करे आमना, ते साधपणा थी जुवा रे ॥ ति० ॥ १४ ॥ गृहस्थ आयो साधु तेड़वा, कपड़ो वहिरावण लई जावे रे। इणविध वहिरै तेह में, चारित किण विध पावे रे ॥ ति० ॥१५॥ साहमो आख्यो ले जावै तेड़िया, ए दोषण दोनूंई भारी रे। यांने टाले केड़ायत वीरना, सेव्यां नहीं साध आचारी रे ॥ ति० ॥ १६ ॥ धोवणादिक सें नीलोतरी, जीवां सहित कण भिना रे। एहवा वहिरै शंके नहीं, ते परभव सूं नहीं विहना रे ॥ ति० ॥ १७ ॥ एहवो अन्न पाणी भोगवै, त्यांनें साधु किम थापीजे रे। जो सूतर ने साचो करो, त्यांने चोरा री पांत में आपीजै रे ॥ ति० १८ ॥ गृहस्थ ना सजाय बोल थोकड़ा, साधु लिखे तो दोषण लागै रे। लिखायने भणमोदियां, दोय करण ऊपरला भागै रे ॥ ति० ॥ १९ ॥ पहिले करण लिख्या में पाप छै, तो लिखायां दोषण उधारो रे। पांच महाव्रत झूलगा, त्यां सघलां सें परिया बधारो रे ॥ ति० ॥ २० ॥ उपध मोलावे गृहस्थ ने, ओ नहीं साधु आचारी रे। प्रवचन न्याय न मानिये, लियो

मुगत सूं मारग न्यारो रे ॥ ति० ॥ २१ ॥ गृहस्थ उपध रा करे जाबता, किया बरत चकचूरो रे। सेवग हुवा संसारिया, साधुपणा थी दूरो रे ॥ ति० ॥ २२ ॥ साता पूछे पूछावे गृहस्थ री, दूब्रत सेवण लागा रे। अणाचार कह्यो दशवैकालिकी, वले पांचूँही महाव्रत भागा रे ॥ ति० ॥ २३ ॥ श्रावक ने वले श्राविका, करे मांहोमांही कारज रे। साता पूछे विनो वैयावच करे, तिण में धम परूपे अनारज रे ॥ ति० ॥ २४ ॥ अणाचार पूरा नहीं ओलख्या, नव भांगा किण विध टाले रे। गृहस्थ ने सिखावे सेवना, लीधा व्रत नहीं संभाले रे ॥ ति० ॥ २५ ॥ कारण पड़ियां लेणो कहे साधने, करे असुध वहिरण री थापो रे। दातार ने कहे निर्जरा घणी, वली थोरो बतावे पापो रे ॥ ति० ॥ २६ ॥ एहवी ऊन्धी करे परूपणां, घणा जीवां ने उलटा नाखे रे। अण विचारी भाषा बोलतां, भारी कर्मा जीव न शंके रे ॥ ति० ॥ २७ ॥ भिष्ट आचार री करे थापना, कहे कहे दुखम कालो रे। छिवड़ां आचार छै एहवो, घणा दोषण री न हुवे टालो रे ॥ ति० ॥ २८ ॥ एक पोते तो पाले नहीं, मले पाले तिण सूं द्वेषो रे। दोय मूरख कह्या तेहने, पहिलो आचारांग देखो ॥ ति० ॥ २९ ॥ पाट बाजोट आणे गृहस्थ रा, पाछा देवण री नहीं नीतो रे मर-

आद्दा लोपने भोगवै, तिण छोड़ी जिणधर्म री रीतो रे ॥ ति० ॥ ३० ॥ तिणने डंड कह्यो एक मास नो, निशीथ रे उद्देशे बीजे रे। न्याय मारग परूपतां, भारी करमा सुण सुण खीजे रे ॥ ति० ॥ ३१ ॥

॥ इति साधाँ रा आचार सम्पूर्ण ॥
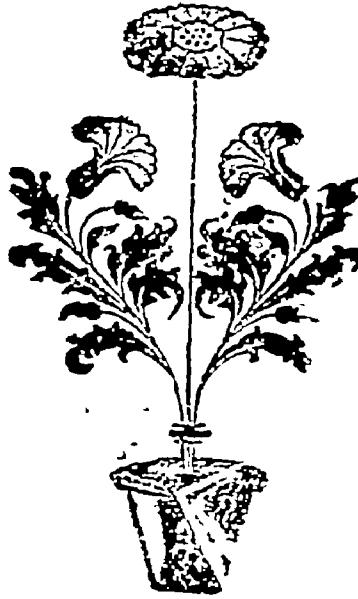
अथ जिन आज्ञा को चौढालियो

॥ दोहा ॥

केई पाषण्डी जैन रा, साधु नाम धराय । ते पाप कहैं जिन आज्ञा मझे, कुड़ा कुहेत लगाय ॥१॥ आहार पाणी साधु भोगवै, ते श्रीजिन आज्ञा सहित । तिण में प्रमाद ने अव्रत कहै, त्यांरी श्रद्धा घणी विपरीत ॥ २ ॥ वले वस्त्र पात्र कामलो, इत्यादिक उपधि अनेक । ते जिन आज्ञा स्यूं भोगवै, तिण में पाप कहै ते विना विवेक ॥३॥ त्यां श्री जिन धर्म नहीं ओलख्यो, जिन आज्ञा पिण ओलखी नांह । तिणस्यूं अनेक बोलां तणी, पाप कहै जिन आज्ञा रे मांह ॥ ४ ॥ कहै नदी उतरै तिण साधु ने, आज्ञा दे जिन आप। आ प्रत्यक्ष हिन्सा देखल्यो, आज्ञा छै तो पिण पाप ॥ ५ ॥ इत्यादिक अनेक बोलां मझे, आज्ञा दे जिनराय। जठे हिंसा होवै छै जीव री, तठे पाप लागे छै आय ॥ ६ ॥ इम कही ने जिन आज्ञा

मर्भे, थापे पाप एकान्त। हिवे ओलखाऊं जिन आगन्यां ते सुणज्यो मतिवन्त ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहली ॥

(भवियण सेवो रे साध सयाणा एदेशी)

जे जे कारज जिन आज्ञा सहित छै, ते उपयोग सहित करे कोय। ते कारज करतां घात होवे जीवांरी, तिण रो साधु ने पाप न होय रे ॥ भवियण जिन आगन्यां सुखकारी ॥ १ ॥ जीवां तणी घात हुई साधु थी, त्यांरो साधु ने पाप न लागे। जिन आगन्यां पिण लोपी न कहिजे, वलि साधु रो व्रत न भांगे रे ॥ २ ॥ आ दूचरज वाली वात उघाड़ी, काचां रे हिये केम समावे। ज्यां जिन आज्ञा ओलखी नहीं पूरी, ते जिन आज्ञा में पाप बतावै रे ॥ ३ ॥ नदी उतरै जब शुद्ध साधु ने, आज्ञा दे श्रीजिन आप। जो यो नदी उतरतां पाप होवे तो, आज्ञा दे त्यांने पिण पापरे ॥४॥ छद्मस्थ साधु नदी उतरे जब, त्यांने केवली आज्ञा दे सोय। पोते पिण केवली नदी उतरै छै, पाप हुसी तो दोयां ने होय रे ॥ ५ ॥ जे नदी उतरै छै केवलज्ञानी, त्यांने पाप न लागे लिगार। तो छद्मस्थ ने पाप किण विध लागे, आं दोयां रो एक आचार रे ॥ ६ ॥ छद्मस्थ ने

केवली नदी उतरे जब, दोयां स्यूं होवे जीवांरी घात। जो जीव मुवा त्यांरो पाप लागै तो, दोयां ने लागै प्राणातिपात रे ॥ ७ ॥ केवल ज्ञानी नदी उतरे त्यांने पाप न लागे कोय। तो छद्मस्थ साधु नदी उतरे जब, त्यांने पिण पाप न होय रे ॥ ८ ॥ कोई कहे केवली ने तो पाप न लागे, नदी उतरतां जोग रहे शुद्ध। पिण छद्मस्थ ने पाप लागै नदी रो, आ प्रत्यक्ष बात विरुद्ध रे ॥ ९ ॥ जिण विध केवली नदी उतरे जिम, छद्मस्थ जो उतरे नाहीं। तो खामी छै तिण रे इर्या सुमति में, पिण खामी नहीं कर्तव्य मांहि रे ॥ १० ॥ ते खामी पड़े ते अजाण पणो छै, इरिया वहि पड़ि-क्कमणो थाप। वले अधिको खामी जाणे इर्या समिति में, तो प्रायश्चित ले उतारे पाप रे ॥ ११ ॥ साधु छद्मस्थ नदी उतरे ते कर्तव्य, सावज म जाणो कोय। जो सावज होवे तो संजम भांगे, विराधक रो पांत होय रे ॥ १२ ॥ आगे नदी उतरतां अनन्त साधां ने उपनो छै केवल ज्ञान। त्यां नदी मांहि आउषो पूरो करी ने, पहोंता पञ्चमी गति प्रधान रे ॥ १३ ॥ केइ कहे साधु नदी उतरे त्यांरे, इतरो हिन्सा रो छै आगार। तिणरो पाप लागे पिण व्रत न भांगे, इम कहे ते मूढ़ गिवार रे ॥ १४ ॥ जो साधु रे हिन्सा रो

आगार होवे तो, नदी उतरतां मोक्ष न जावै। हिंसा रो आगार ने पाप लागे जब, चवदमों गुणठाणों न आवे रे॥ १५॥ कोई कहे नदी उतरे जब साधु ने, लागी असंख्य हिन्सा परिहार। तिणरो प्रायश्चित लियां विन शुद्ध नहीं छै। इम कहे तिण रे हिय छै अन्धार रे ॥ १६॥ जो नदी उतर्यां रो प्रायश्चित विन लीधां, ते साधु शुद्ध नहीं थावे। तो नदी मांहि साधु मरे ते अशुद्ध छै, ते मोक्ष मांहि क्यूंकर जावे रे॥ १७॥ साधु नदी उतर्यां मांहे दोष हुवे तो, जिन आगन्या दे नाहीं। जिन आगन्या दे तिहां पाप नहीं छै, थे सोच देखो मन मांहि रे॥ १८॥ नदी उतरे त्यांरो ध्यान किसो छै, किसी लेश्या किसा परिणाम। जोग किसा अध्यवसाय किसा छै, भला भूण्डा पिछाणो ताम रे॥ १९॥ ए पांचूं भला छै तो जिन आज्ञा छै माठा में जिन आज्ञा न कोय। पांचूं माठा स्यूं तो पाप लागे छै, पांचूं भला स्यूं पाप न होय रे॥ २०॥ छद्मस्थ ने केवली नदी उतरे जब, लारे छद्मस्थ केवली आगे। छद्मस्थ उतरे छै केवली री आज्ञा स्यूं, त्यांने पाप किसे लेखे लागे रे॥ २१॥ जिन शासण च्यार तीर्थ मांहि, जिन आगन्यां छै मोटी। कोई जिन आगन्यां मांहि पाप बतावें, तिण री श्रद्धा छै खोटी रे

॥ २२ ॥ दवरो दाधो जाय पड़ै जल मांहि, पिण जल मांहि लागी लाय। तो किसी ठोड़ वो करै ठंढाई, किसी ठोड़ साता होवे ताय रे ॥२३॥ ज्यूं जिण आज्ञा मांहि पाप होवे तो, किण री आज्ञा मांहे धर्मों। किण री आज्ञा पाल्यां शुद्ध गति जावे, किण री आज्ञा स्यूं कटे कर्मों रे ॥ २४ ॥ कांटा आवे छे तिण मांहि साधु, मात रो परठे दिसां जावे। तिण रे छे पिण जिनजी री आज्ञा, तिण में कुण पाप बतावै रे ॥ २५ ॥ साधु राते लघु बड़ी नीत दोनूं ही, परठण जावें अछांहि। वले सिज्याय करै राते थानक बारै, जावै आवे अछायां मांहि रे ॥ २६ ॥ इत्यादिक साधु राते काम पड़े जब, अछायां आवें ने जावे। तिणने पिण छे जिनजी री आज्ञा, तिण में कुण पाप बतावे रे ॥२७॥ राते अछायां अपकाय पड़े छे, तिण री घात साधु थी थाय। ओ पिण न्याय नदी जिम जाणो, तिण ने पाप किसी विध थाय रे ॥ २८ ॥ नदी मांहि बहती साधवी ने, साधु राखे हाथ संभावे। तिण मांहि पिण छे जिनजी री आज्ञा, तिण में कुण पाप बतावे रे ॥२९॥ इर्या समिति चालतां साधु स्यूं, कदा जीव तणी होवे घात। ते जीव मुआं रो पाप साधु ने, लागे नहीं अंशमात रे ॥ ३० ॥ जो इर्या समिति बिना साधु

चाले, कदा जीव मरै नवि कोय। तो पिण साधु ने हिन्सा क्यूं काय री लागे। कर्म तणो बंध होय रे ॥३१॥ जीव मुआ तिहां पाप न लागो, न मुआ तिहां लागो पाप। जिण आज्ञा संभालो जिण आज्ञा जोवो, जिण आज्ञा में पाप म थापो रे ॥ ३२ ॥ जब कोई कहे गृहस्थी हाल्यां चाल्यां विन, साधु ने किम वहिरावे। हालण चालण री तो नहीं जिण आज्ञा, चाल्यां विन तो वहरावणो नावे रे ॥ ३३ ॥ बैठो होवे तो उठ वहरावें, उभो होवे तो बैठ वहरावे। बैठण उठण री तो नहीं जिण आज्ञा, तो बारमों व्रत कैम निपजावे रे ॥ ३४ ॥ जो जिण आज्ञा बारै पाप होवे तो, हालण चालण रो पाप थावे। साधां ने वहरायां रो धर्म ते चौवड़े, कोई ईसड़ी चरचा ल्यावे रे ॥३५॥ कोई कहे चालण री तो जिण आज्ञा नाही, तोही चाल वहरायां रो धर्म। जिण आगन्यां विन चाल्यो तिण ने, लागो नहीं पाप कर्म रे ॥ ३६ ॥ इण विध कुहेत लगावे अज्ञानी, धर्म कहे जिण आज्ञा बारो। हिवे जिन आगन्यां मांहि धर्म श्रद्धण रा, थे जाव हिया मांहि धारो रे ॥ ३७ ॥ मन वचन काया रा जोग तीनूं हीं, सावद्य निर्वद्य जाण। निर्वद्य जोगां री श्रीजिण आज्ञा, तिण री करजो पिछाण रे ॥ ३८ ॥ जोग नाम व्यापार तणो

छै, ते भला ने भूण्डा व्यापार। भला जोगां री जिण-आज्ञा छै, माठा जोग जिण आगन्यां बार रे॥ ३९॥ मन वचन काया भला प्रवर्तावो, गृहस्थ ने कहे जिण-रायो। ते काया भणी किण विध प्रवर्तावे, तिण रो विवरो सुणो चित्त लायो रे॥ ४०॥ निर्वद्य कर्तव्य री छै श्री जिण आज्ञा, तिण कर्तव्य ने काया जोग जाण। तिण कर्तव्य री छै, श्री जिण आज्ञा, तिण कर्तव्य ने करो आगीवाण रे॥ ४१॥ साधां ने आहार हाथां स्यूं वहरावे, उठ बैठ वहरावे कोय। ते वहरावण रो कर्तव्य निर्वद्य छै, तिण में श्री जिन आगन्यां होय रे॥ ४२॥ निर्वद्य कर्तव्य गृहस्थ करै छै, त्यांने आगन्यां दे जिण-राय। ते कर्तव्य तो काया स्यूं करसी, पिण न कहे थे चलावो काय रे॥ ४३॥ निर्वद्य कर्तव्य री आगन्यां दीधां, पाप न लागे कोय। हालण चालण री आगन्यां दीधां, गृहस्थ स्यूं संभोग होय रे॥ ४४॥ बैसो सुवो उभो रहो ने जावो, गृहस्थ ने साधु न कहे आम। दशवैकालिक रे सातमें अध्ययने. सैंतालीसमीं गाथा में ताम रे॥ ४५॥ उभा रो कर्तव्य बैठा रो कर्तव्य, करणो कहे जिणराय। पिण वैठण उठण रो नहीं कहे गृहस्थ ने, थे विचार देखो मन मांय रे॥ ४६॥ निर्वद्य कर्तव्य री आगन्यां दीधां, निर्वद्य चालवो ते मांहे

आयो। कर्तव्य छोड़ने चालण री आज्ञा देवे तो, गृहस्थ रो संभोगी थायो रे॥ ४७॥ गृहस्थ रे द्वार पड़्यो कपड़ादिक, जब साधु सूं जाणी नावे मांहि। जब कोई गृहस्थ भेलो करे कपड़ादिक, साधु ने मारग देवे ताहि रे॥४८॥ साधां ने मारग देवे जावण आवण रो, ते कर्तव्य निर्वद्य चोखो। जो कपड़ादिक रे काम भेलो करे तो सावद्य काम छै दोखो रे॥ ४९॥ तिण स्यूं साधु कहे गृहस्थ ने, म्हांने जायगां दो जावां मांहि। पिण कपड़ादिक भेलो करो सांवट ने, ईसड़ो न काढे वाइ रे॥ ५०॥ गृहस्थ रो उपधि करे आगो पाछो, वेसायवा सोयवादिक रे काम। ते पिण कर्तव्य निर्वद्य जाणो, नहीं उपधि ऊपर परिणाम रे॥ ५१॥ कोई श्री जिन आगन्यां बारे अज्ञानी, धर्म कहे छे ताम। ते भोला लोकां ने भ्रम में पाड़े, लेइ अनेक बोलां रो नाम रे॥ ५२॥ श्रावक री मांहो मांहि करे वियावच, बले साता पूछे ने पूछावें। तिण में श्री जिन आज्ञा मूल न दिसे, तिण मांहे धर्म बतावे रे॥ ५३॥ श्रावक री मांहो मांहे व्यावच कीधी, तिण दियो शरीर रो साज। छव काया रो शस्त्र तीखो कीधो, तिण स्यूं आज्ञा न दे जिनराज रे॥ ५४॥ गृहस्थी री व्यावच कीधी तिण रे, अठाइसमूं अणाचार। साता पूछ्यां री

अणाचार सोलमूं, तिणमें धर्म नहीं छै लिगार रे ॥५५॥ शरीरादिक ने श्रावक पूंजे. मातरादिक ने परठे पूंजे। इत्यादिक कारज री नहीं जिन आज्ञा, धर्म कहै त्यांने संवलो न सूझै रे ॥ ५६ ॥ शरीर पूंजे मातरादिक परठे, ते तो शरीरादिक रो छै काज। जो धर्म तणो ए कार्य हुवे तो, आगन्यां देता जिनराज रे ॥ ५७ ॥ जो पूंजणो परठणो न करै जावक, तो काया थिर राखणी एक ठाम। पिण हस्तादिक ने विन चलायां, रहणी नावे ताम रे ॥ ५८ ॥ लघु वड़ी नीत तणी अवाधा, खमणी ठमणी न आवे ताम। पूंजे परठै तोइ सावद्य कर्तव्य छै, जिन आज्ञा रो नवि काम रे ॥ ५९ ॥ कदा थोड़ी बुद्धि त्यांने समज न पड़े तो, राखणी जिण प्रतीत। आगन्यां मांहे पाप आज्ञा बारै धर्म; इसड़ी न करणी अनीत रे ॥ ६० ॥ जिन आगन्यां मांहे पाप कहै छै, ज्यांरी मत घणी छै माठी। जिन आगन्यां बारै धर्म कहै छै, त्यांरे आई अकल आड़ी पाटी रे ॥६१॥ जिन आगन्यां मांहे पाप कहतां, मूरख मूल न लाजे। वले धर्म कहै जिन आगन्यां बारै, ते पण्डित पाखण्डियां में वाजे रे ॥६२॥ जिन आगन्यां मांहे पाप कहै छै ते वुड़े छै कर कर ताणो। वले धर्म कहै जिन आगन्यां बारै, ते तो पूरा छै मूढ अजाणो रे ॥६३॥ समत अठाराने वर्ष

इकताले, जेठ सुद तीज ने शुक्रवार। जिन आगन्यां उलखावण काजे, जोड़ कीधी छे पर उपगार रे ॥६४॥

॥ दोहा ॥

जिण शासण में आज्ञा वड़ी, ओलखे ते बुद्धिवान। ज्यां जिण आज्ञा नवि ओलखी, ते जीव छे विकल समान ॥ १ ॥ दोय करणी ससार में, सावद्य निर्वद्य जाण। निर्वद्य में जिण आगन्यां, तिण सूं पामै पद निर्वाण ॥२॥ सावद्य करणी संसार नी, तिण में जिन आगन्यां नहीं होय। कर्म बंधे छे तेह थी, धर्म म जाणो कोय ॥३॥ किहां २ छे जिण आगन्या, किहां २ अगन्यां नांह। बुद्धिवंत करो विचारणा, निरणो करो घट मांह ॥ ४ ॥

॥ ढाल दूजी ॥

(हूं बलिहारी हो श्री पूज्यजी रे नाम री पदेशी)

कोई करै पचखाण नौकारसी, तिणरी आगन्या दो जिन आप हो ॥ स्वामीजी ॥ कोई दान दे लाखां संसार में, पूछ्यां आप रहो चुपचाप हो। स्वामीजी। हूं बलिहारी हो, हूं बलिहारी हो श्री जिनजी री आगन्या

॥ १ ॥ जिण आज्ञा सहित नौकारसी. कीधां कटे सात आठ कर्म हो ॥ स्वा० ॥ कोई दान दे लाखां संसार में, ते तो आप रो भाख्यो नहीं धर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥२॥ अन्तर मुहूर्त्त त्यागे एक भूंगड़ो, तिण री आगन्यां द्ये जिनराज हो ॥ स्वा० ॥ कोई जीव छुड़ावे लाखां दाम दे । तठे आप रहो मौन साझ हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ३ ॥ अन्तर मुहूर्त्त त्यागे एक भूंगड़ो, ते तो आप रो सिखायो छे धर्म हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यूं कर्म कटै तिण जीव रा, उतकृष्टो पामें सुख परम हो ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ कोई जीव छुड़ावे लाखां दाम दे, ते तो आप रो सिखायो नहीं धर्म हो ॥ स्वा० ॥ ओ तो उपकार संसार नो, तिण स्यूं काटता न जाण्या आप कर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ५ ॥ कोई साधां ने बहिरावे एक तिणकलो, तिण री आज्ञा दी आप साख्यात हो ॥ स्वा० ॥ कोई श्रावक जीमावे कोडांगमें, तिण री आज्ञा न दी अंशमात हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ साधा ने बहिरावे एक तिणकलो, तिण रे बारमूं व्रत कह्यो आप हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यूं आज्ञा दीधी आप तेहने, बले काटता जाण्या तिण रा पाप हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥७॥ कोई श्रावक जीमावे कोड़ां न्यूंत ने, ते तो सावद्य कामो जाण्यो आप हो ॥स्वा०॥ उण छव काय शस्त्र पोखियो, तिणने लागो छे एकन्त

पाप हो ॥ स्वा० ॥ हूँ ॥ ८ ॥ कोई करै व्यावच श्रावकां तणी, तठै पिण पापरै छै मौन हो ॥ स्वा० ॥ उण सीखो कीधो छै शस्त्र छव काय नो, ते कर्तव्य जाणो आप जवुन हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ९ ॥ कोई उघाड़े मुख भणे छे सिद्धन्त ने, कोडांगमें गुणे छे नवकार हो ॥ स्वा० ॥ तिण में आप तणी आगन्या नहीं, तिण में धर्म न सरधूं लिगार हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १० ॥ उघाड़े मुख गुणे छे नवकार ने, तिण वाउकाय मास्या असंख्य हो ॥ स्वा० ॥ तिण में धर्म श्रद्धे ते भोला थका, त्यांरे लागा कुगुरां रा डंक हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ११ ॥ जैणां स्यूं गुणे एक नवकार ने, तिण स्यूं कोड़ भवांरा काटे कर्म हो ॥ स्वा० ॥ तिण में आप तणी छै आगन्या, तिण रे निश्चे ही निर्जरा धर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १२ ॥ कोई साधु नाम धराय ने, प्रशंसे छै सावद्य दान हो ॥ स्वा० ॥ त्यां भेष भांड्यो भगवान रो, त्यांरे घट मांहे घोर अज्ञान हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १३ ॥ मौन कही छै साधु ने सावद्य दान में, ते तो अन्तराय पड़ती जाण हो ॥ स्वा० ॥ तिण रो फल तो सूत्र में बतावियो। तिण री बुद्धिवन्त करसी पिछाण हो ॥ स्वा० ॥ हूँ ॥ १४ ॥ प्रदेशी राजा कहे केशी स्वामने, म्हारे तो चढ़तो वैराग हो ॥ स्वा० ॥ म्हारे सात सहंस गांव खालसे,

तिण रा करूं च्यार भाग हो ॥स्वा०॥ हूं॥ १५ ॥ एक भाग राण्यां निमते करूं, दूजो भाग करूं खजान हो ॥ स्वा० ॥ तीजो भाग घोड़ा हाथी निमत करूं, चौथो भाग करूं देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १६ ॥ च्यारूं भाग सावद्य कामो जाणने, मौन साझी रह्या केशी स्वाम हो ॥ स्वा० ॥ जो उवे किणहिक में धर्म जाणता, तो तिण री करता प्रशंसा ताम हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥१७॥ सावद्य कर्तव्य च्यारूं भाग राज रा, त्यांमें जीवां री हिन्सा अत्यन्त हो ॥ स्वा० ॥ तिण स्यूं च्यारूं बराबर जाण ने, मौन साझी रह्या मतिवन्त हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १८ ॥ दान देवा मंडाई दानशाल में, प्रदेशी नामे राजान हो ॥ स्वा० ॥ सात सहंस हुन्ता गांव खालसे, तिणरी चौथी पांती रो देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १९ ॥ च्यार भाग कर आप न्यारो हुवो, तिण जाण्यो संसार नो माग हो ॥ स्वा० ॥ तिण तिथ न कीधी तिण राज री, रह्यो मुक्त स्यूं सन्मुख लाग हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २० ॥ ओ तो दान भोरां ने भोलाय ने, तिण पूछी न दिसै बात हो ॥ स्वा० ॥ चवदे प्रकार रो दान साध ने, ते तो राख्यो निज पोता रे हाथ हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २१ ॥ चौथो भाग दान तालकै करी, नहीं राख्यो पोता रे हाथ हो ॥ स्वा० ॥ तीनूं भाग ज्यूं कूण

ने पिण थापियो, छव काय जीवां री जाणी घात हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥२२॥ साढा सतरे सौ गांव दान तालके, दिन दिन प्रते मठेरा पांच गांव हो ॥ स्वा० ॥ त्यांरे हांसल रो धान रंधाय ने, दानशाला मण्डाई ठाम ठाम हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥२३॥ टालवा गांव जाणीज्यो खालसे, ते तो चौथे आरे रा छा गांव हो ॥ स्वा० ॥ हांसल पिण आवतो जाणज्यो घणो. नेपे मण हुन्ती घणी अमाम हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥२४॥ हांसल आयो हुवै एक एक गांव रो, दश सहंस मण रे उन्मान हो ॥ स्वा० ॥ दिन २ प्रते मठेरा पांच गांव रो, ऊणो पचास हजार मण धान हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ २५ ॥ इण लेखे एक वरस तणो, पूणा दोय क्रोड़ मण धान हो ॥ स्वा० ॥ अधिको ओछो तो आप जाणो रह्या, अटकल स्यूं कह्यो उन्मान हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ २६ ॥ पाणी पांच क्रोड़ मण रे आसरे, पूणा दोय क्रोड़ मण रांध्यां धान हो ॥ स्वा० ॥ अग्न एक क्रोड़ मण आणज्यो, लूण छै लाखां मण रे उन्मान हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ २७ ॥ नित्य धान हजांरा मण रांधतां, अग्न पाणी हजारां मण जाय हो ॥ स्वा० ॥ मणा वन्ध लूण पिण लागतो, वाउ-काय रो वहोत घमसाण हो ॥ स्वा० ॥ छं ॥ २८ ॥ फवारादिक अनेक पाणी मझे, वले वनस्पति पाणी

मांय हो ॥ स्वा० ॥ धान हजारां मण रांधता, तिहां अनेक मुआ त्रसकाय हो ॥ स्वा० ॥ ह्रं ॥ २९ ॥ दिन दिन प्रते मारे छव काय ने, वली अनन्त जीवां री करै घात हो ॥ स्वा० ॥ त्यांरी हिन्सा रो पाप गीणे नहीं, त्यांरे हिंसा धर्म रो मिथ्यात हो ॥ स्वा० ॥ ह्रं ॥ ३० ॥ एहवा दुष्ट हिन्सा धर्मी जीवड़ा, कीई जाणे छे अज्ञानी साध हो ॥ स्वा० ॥ तिण रे घट मांहि घोर अन्धार छे, ते तो नियमा निश्चे छे असाध हो ॥ स्वा० ॥ ह्रं ॥ ३१ ॥ कीई जीव खुवायां में पुन्य कहै, कीई मिश्र कहै छे मूढ़ हो ॥स्वा०॥ ए दोनूं बूड़ा छे बापड़ा कर कर मिथ्यात री रूढ़ हो ॥ स्वा० ॥ ह्रं ॥ ३२ ॥ जीव खाधां खुवायां भलो जाणियां, तीनूं हीं करणा छे पाप हो ॥ स्वा० ॥ आ श्रद्धा प्ररूपी छे आप री, ते पिण देवे छे अज्ञानी उत्थाप हो ॥ स्वा० ॥ ह्रं ॥३३॥ कीई जीव खुवावे छे तेहनां, चोखा कहै अज्ञानी परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ कहै धर्म ने मिश्र हुवे नहीं, जीव खुवायां विन ताम हो ॥ स्वा० ॥ ह्रं ॥ ३४ ॥ जीव खावण रा परिणाम छे अति बुरा, खुवावण रा पिण खोटा परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ युंही भोला ने न्हाखे भ्रम में, ले ले परिणामां री नाम हो ॥ स्वा० ॥ ह्रं ॥ ३५ ॥ कीई कहै जीवां ने मार्‌यां विना, धर्म न हुवे

ताम हो ॥ स्वा० ॥ जीव मास्यां रो पाप लागै नहीं, चोखा चाहिजे निज परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥३६॥ केई कहे जीवां ने मास्यां विना, मिश्र न हुवै ताम हो ॥ स्वा० ॥ ते जीव मारण री सांनी करै, ले ले परिणामां रो नाम हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ३७ ॥ केई धर्म ने मिश्र करवा भणी, छव काय रो करै घमसाण हो ॥ स्वा० ॥ तिण रा परिणाम चोखा कह्यां थकां, पर जीवां रा छूटै प्राण हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ३८ ॥ जिण ओलख लीधी आप री आगन्यां, ओलख लीधी पाप री मौन हो ॥ स्वा० ॥ तिण आप ने पिण ओलख लिया, तिण रे टलसी माठी २ जून हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥३९॥ तिण आज्ञा नवि ओलखी आप री, ओलखी नवि आप री मौन हो ॥ स्वा० ॥ तिण आप ने पिण ओलख्या नवि, तिण रे वन्धसी माठी माठी जून हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४० ॥ केई जिण आज्ञा बारै धर्म कहे, जिण आज्ञा मांहे कहे पाप हो ॥ स्वा० ॥ ते दोनूं विध बूड़ा छै बापड़ा, कुड़ो कर कर अज्ञानी विलाप हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४१ ॥ आप रो धर्म आप री आगन्यां मझे, नहीं आप री आज्ञा बार हो ॥ स्वा० ॥ जिण धर्म जिण आगन्यां बारै कहे; ते तो पूरा छै मूढ़ गिंवार हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥४२॥ आप अवसर देखने बोलिया,

आप अवसर देखी साक्षी मौन हो ॥ स्वा० ॥ जिहां आप तणी आगन्यां नवि, ते करणी छै जावक जबून हो ॥ स्वा० ॥ ह्र ॥ ४३ ॥ भेषधायां सावद्य दान थापियो. तिण दान स्यूं दया उत्पन जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले दया कहै छव काय बचावियां, तिण स्यूं दान उत्पन गयो ताय हो ॥ स्वा० ॥ ह्र ॥ ४४ ॥ छव काय जीवां ने जीवां मारने, कोई दान देवै संसार रे मांय हो ॥ स्वा० ॥ तिण रे घट में छव काय जीवां तणी, दया रही नहीं ताय हो ॥ स्वा० ॥ ह्र ॥ ४५ ॥ कोई दान देवे तिण ने बरजने, जीव बचावे छव काय हो ॥स्वा०॥ ते जीव बचायां दया उत्थपे, तिण स्यूं न्यारा रह्यां सुख थाय हो ॥ स्वा० ॥ ह्र ॥ ४६ ॥ छव काय जीवां ने मारी दान दे, तिण दान स्यूं मुक्त न जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले फिर बचावे छव काय ने, तिणस्यूं कर्म कटै नहीं ताय हो ॥ स्वा० ॥ ह्र ॥ ४७ ॥ सावद्य दान दियां स्यूं दया उत्थपे, सावद्य दया स्यूं उत्थपे अभय दान हो ॥ स्वा० ॥ सावद्य दान दया छै संसार ना, यामें ओलखे ते बुद्धिवान हो ॥ स्वा० ॥ ह्र ॥४८॥ त्रिविधे २ छव काय हणावो नहीं, आ दया कही जिन-राय हो ॥स्वा०॥ दान देणो सुपात्र ने कह्यो, तिणस्यूं मुक्त सुखे सुखे जाय हो ॥ स्वा० ॥ ह्र ॥ ४९ ॥ दान

दया दोनूं मारग मोच रा, ते तो आप री आज्ञा सहित हो ॥ स्वा० ॥ याने रूड़ी रीत आराधिया, ते गया जमारो जीत हो ॥ स्वा० ॥ ह्रं ॥५०॥ आप तणी आज्ञा ओलखायवा, जोड़ कीधी नवा शहर मझार हो ॥ स्वा० ॥ समत अठारे नै वर्ष चमालीसे, मह्रा सुद सातम वृहस्पतिवार हो ॥ स्वामीजी ह्रं बलिहारी हो ह्रं बलिहारी हो श्री जिनजी री आगन्यां ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

श्री जिन धर्म जिन आज्ञा मझे, आज्ञा बारे नहीं जिन धर्म। तिण स्यूं पाप कर्म लागे नहीं, वले कटे आगला कर्म ॥१॥ केई मूढ़ मिथ्याती इम कहै, जिन आज्ञा बारे जिन धर्म। जिन आज्ञा मांहे कहै पाप छै, ते भूला अज्ञानी भ्रम ॥ २ ॥ जिन आज्ञा बारे धर्म कहै, जिन आज्ञा मांहे कहै पाप। ते किण ही सूत्र में छै नहीं, यूंही करै मूढ़ विलाप ॥ ३ ॥ कहै धर्म तिहां देवां आगन्यां, पाप छै तिहां करां निषेध। मिश्र ठिकाणे मौन छै, एह धर्म नो भेद ॥४॥ इसड़ी करै छै परूपणा, ते करै मिश्र री थाप। ते बूड़ा खोटो मत बांधने, श्री जिन वचन उत्थाप ॥ ५ ॥ केई मिश्र

तो माने नवि, माने हिंसा में एकन्त धर्म। ते पण बूड़े छे बापड़ा, भारी करै छे कर्म ॥ ६ ॥ जिन धर्म तो जिण आज्ञा मझे, आज्ञा बारे धर्म नहीं लिगार। तिण में साख सूत्र री दे कहूँ, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ७ ॥

॥ ढाल तीजी ॥

(जीव मारे ते धर्म आछो नवि एदेशी)

आज्ञा में धर्म छे जिनराज रो, आज्ञा बारे कहै ते मूढ रे। विवेक विकल शुद्ध बुद्ध बिना, ते बुड़े छे कर कर रूढ़ रे॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥ १ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ने तप, ए तो मोक्ष रा मारग च्यार रे। यां च्यारां में जिनजी री आगन्यां, यां बिना नहीं धर्म लिगार रे। श्री ॥ २ ॥ यां च्यारां मांहला एक एक री, आज्ञा मांगे जिनेश्वर पास रे। तिण ने देवे जिनेश्वर आगन्या, जब उ पामै मन में हुलास रे ॥ श्री ॥ ३ ॥ यां च्यारां बिना मांगे कोई आगन्यां, तो जिनेश्वर साझे मौन रे। तो जिन आगन्यां बिना करणी करै, ते करणी छे जावक जबुन रे ॥ श्री ॥ ४ ॥ बीसां भेदां रुकै कर्म आंवता, बारै भेदे कटै बन्धिया कर्म रे। त्यांने देवे जिनेश्वर आगन्यां, ओहिज जिण

भाष्यो धर्म रे ॥ श्री ॥ ५ ॥ कर्म रुकै तिण करणी में आगन्यां, कर्म कटै तिण करणी में जाण रे। यां दोयां करणी विना नवि आगन्यां, ते सगली सावद्य पिछाण रे ॥ श्री ॥ ६ ॥ देव अरिहन्त ने गुरु साध छै. केवली भाष्यो ते धर्म रे। और धर्म में नहीं जिन आगन्यां, तिण सूं लागे छै पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ ७॥ जिन भाष्या में जिनजी री आगन्यां, औरां री भाषा में और जाण रे, तिण स्यूं जीव शुद्ध गत जावै नहीं. वलि पाप लागै छै आण रे॥ श्री ॥ ८ ॥ केवली भाष्यो धर्म मंगलीक छै, ओहिज उत्तम जाण रे। शरणो पिण ल्यो इण धर्म रो, तिण में श्रीजिन आज्ञा प्रमाण रे ॥ श्री ॥ ९ ॥ ठाम २ सूत्र मांहि देखल्यो, केवली भाष्यो ते धर्म रे। मौन साझै तिहां धर्मको नहीं, मौन साझै तिहां पाप कर्म रे॥ श्री ॥ १० ॥ मौन साझणियों धर्म माठो घणो, भेषधार्यां परूप्यो जाण रे। खांच बुड़ै छै बापड़ा, ते सूत्र रा मूढ अजाण रे ॥ श्री ॥ ११ ॥ धर्म ने शुक्ल दोनूं ध्यान में, जिण आज्ञा दीधी बारूं बार रे। आर्त रौद्र ध्यान माठा विहुं, याने ध्यावै ते आज्ञा बार रे ॥ श्री ॥ १२ ॥ तेजु पद्म शुक्ल लेश्या भली त्यांमें जिन आगन्यां ने निर्जरा धर्म रे। तीन माठी लेश्या में आज्ञा नहीं, तिण स्यूं बन्धे छै पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ १३॥

च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या, च्यार शरणा कह्या जिनराय रे। ए सगला छै जिन आगन्या मझे, आज्ञा बिन आच्छी वस्तु न काय रे॥ श्री॥ १४॥ भला परिणाम में जिन आगन्यां. माठा परिणामां आज्ञा बार रे। भला परिणामां निर्जरा निपजे. माठा परिणामां पाप द्वार रे॥ श्री॥ १५॥ भला अध्यवसाय में जिन आगन्यां, आज्ञा बारे माठा अध्यवसाय रे। भला अध्यवसायां सूं निर्जरा हुवे, माठा अध्यवसायां सूं पाप बन्धाय रे॥ श्री॥१६॥ ध्यान लेश्या परिणाम अध्यवसाय छै, च्यारूं भला में आज्ञा जाण रे। च्यारूं माठा में जिन आज्ञा नहीं, यांरा गुणां री करज्यो पिछाण रे॥ श्री॥ १७॥ सर्व मूल गुण ने उत्तर गुणे, देश मूल उत्तर गुण दोय रे। दोयां गुणां में जिनजी री आगन्यां, आगन्यां बारे गुण नवि कोय रे॥ श्री॥ १८॥ अर्थ परम अर्थ जिन धर्म छै, उववाई सूयगडांग मांय रे। तिण में तो जिनजी री आगन्यां, शेष अनर्थ में आज्ञा नवि ताय रे॥ श्री॥ १९॥ सर्व व्रत धर्म साधां तणो, देश व्रत श्रावक रो धर्म रे। यां दोयां धर्म में जिनजी री आगन्यां, आज्ञा बारे तो बन्धसी कर्म रे॥ श्री॥ २०॥ उजलो धर्म छै जिनराज रो, ते तो श्री जिन आज्ञा सहित रे। मुगत जावा अजोग अशुद्ध

कह्यो, ते तो जिन आज्ञा सूं विपरीत रे ।।श्री ॥ २१।। आज्ञा लोप छांदे चाले आप रे, ते ज्ञानादिक धन सूं खाली थाय रे। आचारांग अध्ययन दूसरे, जोवो छट्ठा उद्देशा मांय रे ।। श्री ।। २२ ।। आज्ञा सूं रुके ते धर्म मांहरो, एहवो चिन्तवे साधु मन मांय रे। आज्ञा विन करवो जिहांहिं रह्यो, रूड़ो बोलवो पिण नवि थाय रे ॥ श्री ॥ २३ ॥ आज्ञा मांहलो ते धर्म मांहरो, और सर्व पारको थाय रे, आचारांग छट्ठा अध्ययन में, पहले उद्देशे जोय पिछाण रे ।।श्री।।२४।। आगन्यां मांहि संजम ने तप, आगन्यां में दोनूं परिणाम रे। आज्ञा रहित धर्म आछो नवि, जिण कह्यो पराल समान रे ।। श्री ।। २५ ।। आस्रव निर्जरा रो ग्रहण जुदो कह्यो, ते जाणसो जिन आज्ञा रो जाण रे। आचारांग चौथा अध्ययन में, पहले उद्देशे जोय पिछाण रे ।। श्री ।।२६।। निर्वद्य धर्म चतुर विध संघ छै, ते आज्ञा सहित वंछै अनुसन्तान रे। आचारांग चौथा अध्ययन में, तीजै उद्देशे कह्यो भगवान रे ।। श्री ।। २७ ।। तीर्थंकर धर्म कीधो तिको, मोक्ष रो मारग शुद्ध देस रे। और मोक्ष रो मारग को नहीं, पांचमें आचारांग तीजे उद्देश रे ।। श्री ।। २८ ।। जिण आज्ञा बारली करणी तणो, उद्यम करै अज्ञानी कोय रे। आज्ञा मांहली करणी रो आलस

करै, गुरु कहै शिष्य तोने दोय म होय रे ॥ श्री ॥२९॥ कुमारग तणी करणी करै, सुमारग रो आलस होय रे। ए दोनूंहीं करणी दुरगत तणी, आचारांग पांचमें अध्ययन जोय रे ॥श्री॥३०॥ जिण मारगरा अजाणने, जिण उपदेश मों लाभ न होय रे। आचारांग रा चौथा अध्ययन में तीजै उद्देशे में जोय रे ॥ श्री ॥३१॥ ज्यां दान सुपात्र ने दियो, तिणमें श्री जिन आज्ञा जाण रे। कुपात्र दान में आगन्यां नहीं, तिण री बुद्धवन्त करज्यो पिछाण रे ॥ श्री ॥ ३२ ॥ साध बिना अनेरा सर्व ने, दान नहीं दे माठो जाण रे। दीधां भ्रमण करै संसार में, तिण स्यूं साध किया पच्चखाण रे ॥ श्री ॥ ३३ ॥ सूयगडांग नवमा अध्ययन में, वीसमी गाथा जोय रे। वले दीधां भांगे व्रत साध रो, जिन आगन्यां पिण नवि कोय रे ॥ श्री ॥ ३४ ॥ पात्र कुपात्र दोनूं ने दियां, विकल कहै दोयां में धर्म रे। धर्म हुसी सुपात्र दान में, कुपात्र ने दियां पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ ३५ ॥ क्षेत्र कुक्षेत्र श्री जिनवर कह्यो, चौथे ठाणे ठाणाअङ्ग मांय रे। सुक्षेत्र में दियां जिन आगन्यां, कुक्षेत्र में आज्ञा नवि काय रे ॥ श्री ॥ ३६ ॥ आहार पाणी ने वले उपधादिक, साधु देवे गृहस्थ ने कोय रे। तिण ने चौमासी दण्ड निशीथ में, पनरमें उद्देशे जोय रे ॥ श्री ॥ ३७ ॥ गृहस्थ ने

दान दे तिण साधु ने, प्रायश्चित आवे कीधो अधर्म रे। तो तेहिज दान गृहस्थ देवै, त्यांने किण विध होसी धर्म रे॥ श्री ॥ ३८ ॥ असंजम छोड़ संजम आदस्यो। कुशील छोड़ हुवो ब्रह्मचार रे। अणकल्पणीक अकार्य परहरे, कल्प आचार कियो अङ्गीकार रे॥ श्री ॥ ३९ ॥ अज्ञान छोड़ने ज्ञान आदस्यो, माठी क्रिया छोड़ी माठी जाण रे। भली क्रिया ने साधु आदरी, जिण आज्ञा स्यूं चतुर सुजाण रे॥ श्री ॥ ४० ॥ मिथ्यात छोड़ सम्यक्त आदरी, अबोध छोड़ आदस्यो बोध रे। उन्मार्ग छोड़ सन्मार्ग लियो, तिण स्यूं होसी आतमा शुद्ध रे॥ श्री ॥ ४१ ॥ आठ छोड़े ते जिन उपदेश सूं, पाप कर्म तणो बन्ध जाण रे। जिन आज्ञा स्यूं आठ आदस्यां तिण सूं पामै पद निर्वाण रे॥ श्री ॥ ४२ ॥ ठाम ठाम सूत्र में देखल्यो, जिण धर्म जिण आज्ञा में जाण रे। ते मूढ़ मिथ्याती जाणै नहीं, यूंही बूडे छे कर २ ताण रे॥ श्री ॥४३॥ हूं कहि कहि ने कितरो कहूं, आगन्यां बारै नहीं धर्म मूल रे। आगन्यां बारै धर्म कहै तेहना, श्रद्धा कण विना जाणो धूल रे।

॥ दोहा ॥

भेषधारी बिगरायल जैन रा, ते कूड़ कपट री खान । ते आगन्यां बारै धर्म कहै, त्यांरै घट में घोर अज्ञान ॥ १ ॥ त्यांने ठीक नहीं जिन धर्म री, जिण आज्ञा री पिण नवि ठीक । त्यांने परिवार विवेक विकल मिल्या. त्यांमें बाजे पूज मेढीक ॥ २ ॥ ते बड़ा ऊ ट ज्यूं आगे चलै, लार चलै जेम कतार । बोहला बूड़ै छै बापड़ा. बड़ा बूढ़ां री लार ॥ ३ ॥ हिवै बलै विशेष जिन आगन्यां. ओलखजो बुद्धिवान । तिण रा भाव भेद प्रकट करूं, ते सुणज्यो सूरत दे कान ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

(जंबु कुंवर कहै परभव सुणो प्रदेशी)

साधु सामायक व्रत उचरै, तिण में सावद्य रा पच्चखाण ॥ भविक जन हो ॥ तेहिज सावद्य गृहस्थ करै, तिण में श्री जिन धर्म म जाण ॥ भविक जन हो ॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥ १ ॥ श्रावक सामायक पोसो करै, तिण में पिण सावद्य रा पच्चखाण ॥ भ० ॥ तेहिज सावद्य कामो छूटो करै, तिणमें पिण जिन धर्म म जाण ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री ॥ धर्म कहै साधु जिन आगन्यां मझे, आज्ञा बारै धर्म कहै ते मूढ़ ॥

भ० ॥ तिण श्री जिन धर्म न ओलख्यो, तिण झाली मिथ्यात री रूढ़ ॥ भ० ॥ ३ ॥ श्री ॥ जिन धर्म री जिन आगन्यां देवै, जिण धर्म सिखावै जिनराय ॥ भ० ॥ आज्ञा वारै धर्म किण सीखावियो, तिण री आज्ञा देवै कुण ताय ॥ भ० ॥ ४ ॥ श्री ॥ केई आगन्यां वारै मिश्र कहै, केइ धर्म पिण आज्ञा वार ॥ भ० ॥ तिणने पूछिजे ओ धर्म किण कह्यो, तिण रो नाम तूं चौड़े वताय ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री ॥ इण मिश्र ने धर्म रो कुण धणी, तिण री आज्ञा कुण दे जोड्यां हाथ ॥ भ० ॥ देवगुरु मौन साझ न्यारा हुवै, इण री उत्पत रो कुण नाथ ॥ भ० ॥ ६ ॥ श्री ॥ कोई वेश्या रा पुत्र ने पूछा करै, थारी मा कुण ने कुण तात ॥ भ० ॥ जव उ नांव वतावै किण वाप रो, ज्यूं आ मिश्र वालां री छे वात ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्री ॥ वेश्या रा अङ्ग जात नो उपनो, तिण रो कुण हुवै उदेरि ने वाप ॥ भ० ॥ ज्यूं आज्ञा वारै धर्म ने मिश्र री, केई करै छे पाषण्डी थाप ॥ भ० ॥ ८ ॥ श्री ॥ वेश्या रे अङ्ग जात नो उपनो, उण लखणो हुवै उदेरि ने वाप ॥ भ० ॥ ज्यूं जिन आगन्यां वारै धर्म ने मिश्र री, केई करै छे पाखण्डी थाप ॥ भ० ॥९॥ श्री ॥ कोई कहै म्हारी माता छे वांझड़ी, तिण रो हूं छूं आतम जात ॥ भ० ॥ ज्यूं मूरख कहै जिण आगन्यां

बिना, करणी कीधां धर्म साख्यात ॥ भ० ॥१०॥ श्री ॥
बाप बिण बेटो निश्चे हुवे नहीं, ज्यूं जिन आज्ञा बिना
धर्म न होय ॥ भ० ॥ जिन आज्ञा होसी तो जिन धर्म
छै, आज्ञा बिना धर्म न होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ श्री ॥
मा बिन बेटा रो जन्म हुवे नहीं, जन्मे ते बांझ न
होय ॥ भ० ॥ ज्यूं जिन आज्ञा बिना धर्म हुवे नहीं,
जिन आज्ञा तिहां पाप न कोय ॥ भ० ॥ १२ ॥ श्री ॥
गघु पंखी ने चोर दोनूं भणी, गमतो लागे अन्धारी
रात ॥ भ० ॥ ज्यूं भारी कर्मां जीव तेहने, जिन
आज्ञा बाहरलो धर्म सुहात ॥ भ० ॥ १३ ॥ श्री ॥
काग निमोली में रति करै, भण्डसूरा ने भीष्टो भावै
दाय ॥ भ० ॥ ज्यूं काग भण्डसूरा जेहवा मानवी,
रिझै आज्ञा बाहरली करणी मांय ॥ भ० ॥ १४ ॥ श्री ॥
चोर परदारा सेवण कुशीलिया, ते तो सैरो जोवै
दिन रात ॥ भ० ॥ ज्यूं आज्ञा बारै धर्म श्रद्धायवा,
उन्धो कार कर अज्ञानी बात ॥ भ० ॥ १५ ॥ श्री ॥
गुरुवादिक री आज्ञा मांगे नहीं, ते तो अपछन्दा अव-
नीत ॥ भ० ॥ ज्यूं कोई जिन आगन्यां बिन करणी
करै, ते पिण करणी छै विपरीत ॥ भ० ॥ १६ ॥ श्री ॥
दुष्ट जीव मंजारी ने चितरा, छल सूं करै पर जीवां
री घात ॥ भ० ॥ एहवा दुष्ट मिथ्र श्रद्धा रा धणी, छल

स्यूं घाले बिकलां रे मिथ्यात ॥ भ० ॥ १७ ॥ श्री ॥ बिगरायल हुवां न्यात बारे करे, ते बिगरायल फिरे न्यात बाहर ॥ भ० ॥ तेहवो धर्म जिन आगन्यां बारलो, तिण में कादे मत जाणो भलो वार ॥ भ० ॥ १८ ॥ श्री ॥ न्यात बारे ते न्यात मांहि नहीं, तिण ने नवि बैसाणे एक पांत ॥ भ० ॥ ज्यूं जिन आज्ञा बिना धर्म अजोग छै, कीधां पूरीजे नहीं मन खांत ॥ भ० ॥ १९ ॥ श्री ॥ जो आज्ञा बिन करणी में धर्म छै, तो जिन आज्ञा रो काम न कोय ॥ भं० ॥ तो मन मानी करणी करसी तेहने, सगली करणी कियां धर्म होय ॥ भ० ॥२०॥ श्री ॥ जिण आज्ञा बाहरली करणी कियां, पाप नहीं लागे ने धर्म थाय ॥ भ० ॥ तो किण करणी सूं पाप निपजे, तिण करणी रो तूं नांव बताय ॥ भ० ॥ २१ ॥ श्री ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप, ए च्यारूं ही छै आज्ञा मांय ॥ भ० ॥ यां च्यारां मांहि तो धर्म जिण कह्यो, यां विना और नांव बताय ॥ भ० ॥२२॥ श्री ॥ इम पूछ्यां रो जाब न उपजे, झूठ बोले बणाय बणाय ॥ भ० ॥ बिकलां ने विगोवण पापिया, जिण आज्ञा बारे धर्म श्रद्धाय ॥ भ० ॥ २३ ॥ श्री ॥ आगन्यां बारे धर्म कहे, ते पिण छै आगन्यां बार ॥ भ० ॥ इण सरधा सूं बूड़े छै बापड़ा, ते भव २ में होसी खवार ॥भ०॥२४

॥ श्री ॥ जिन आगन्यां बारै धर्म कहै, ते विगरायल जैन रा जाण ॥ भ० ॥ त्यांरी अभिन्तर फूटी छै मांहली, ते अन्धारे उगो कहै भाण ॥ भ० ॥ २५ ॥ श्री ॥ श्री जिन आगन्यां बिन करणी करै, ते तो दुरगत रा आगीवाण ॥ भ० ॥ जिन आज्ञा सहित करणी करै, तिण स्यूं पामै पद निरवाण ॥ भ० ॥२६॥ श्री ॥ आज्ञा बारै धर्म कहै तेहनो, जोड़ कीधी छै खेरवा मझार ॥ भ० ॥ समत अठारे चालीसमें, आसोज बिद पांचम थावर वार ॥ भ० ॥ २७॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥

॥ इति जिन आज्ञा को चौढालियो समाप्त ॥

अथ दश दान नी ढाल ।

॥ दोहा ॥

दश दान भगवन्त भाषिया, सूत्र ठाणांग मांय ।
गुण निपन्न नाम छै तेहना, भोलांनि खबर न काय ॥१॥
धर्म अधर्म दो मूल का, प्रसिद्ध लोक में एह ।
आठां को अर्थ जन्धो करैं, मिश्र धर्म कहै तेह ॥२॥
मिश्र धर्म परूपता, कूड़ो वाद करन्त ।
आठां में अधर्म कह्यो, साम्भलज्यो दृष्टन्त ॥३॥
आम नीम कै रूंखनो, जुदो जुदो विस्तार ।
नीम निमोली तेल खल, नीम तणो परिवार ॥४॥
इम हिज आठूं दान नो, अधर्म तणो परिवार ।
धर्म दान में मिले नहीं, श्रीजिन आज्ञा बार ॥५॥
इतरा में समझो नहीं, तो कहूं भिन्न भिन्न भेद ।
विवरा सहित बताइयां, मत कोई करज्यो खेद ॥६॥

॥ ढाल ॥

कृपण दीन अनाथ ए, म्लेच्छादिक त्यांरी जात ए । रोग शोक ने आरत ध्यान ए, त्यांने दे अनुकम्पा

दान ए ॥ १ ॥ त्यांने देवै मूलादिक जमीकन्द ए, तिण में अनन्त जीवां रा फन्द ए। तिण दियां कीवै मिश्र धर्म ए, तिणरै उदै आया मोह कर्म ए ॥ २ ॥ लूणादिक पृथवी काय ए, आपे अग्नि ढोलै पाणी वाय ए। देवै शस्त्र विविध प्रकार ए, इण दान सूं रूलै संसार ए ॥३॥ वन्धीवानादिक ने काज ए, त्यांने कष्ट पड्यां देवै साज ए। थोरी बावरी भील कसाई ने ए, सचित्तादिक द्रव्य खवाई ने ए ॥ ४ ॥ छोड़वा देवै ग्रंथ ताम ए, संग्रह दान छै तिण रो नाम ए। ए तो संसार रो उपगार ए, अरिहन्त नी आज्ञा बार ए ॥५॥ ग्रह करड़ा लागा जाण ए, सुणी लागी पनोती आण ए। फिकर घणी मरवा तणी ए, वलै कुटुम्ब तणी जतना भणी ए ॥ ६ ॥ भयरो घाल्यो देवै आम ए, भय दान छै तिण रो नाम ए। ते लेवै छै कुपात्र आय ए, तिण में मिश्र किहां थी थाय ए ॥ ७ ॥ खर्च करै मुवां रै कोड़ ए, जिमावे न्यात ने तेड़ ए। तीन बारा दिन अनुमान ए, चौथो कालुणी दान ए ॥ ८ ॥ वलै वरस छमासी श्राद्ध ए, जिम तिम करै कुल मरयाद ए। मुवां पहिली खर्च करै कोय ए, घणा ने तृप्त करै सोय ए ॥ ९ ॥ आरम्भ कियां नहीं धर्म ए, जिमायां पिण वन्धसी कर्म ए। बुद्धिवन्तां करजो विचार ए, या में संवर निर्जरा नहीं लिगार ए ॥१०॥

घणा री लज्जावश थाय ए, सांकड़े पड्यां देवे ताय ए। देवे सचित्तादिक धन धान्य ए, ए तो पांचमों लज्जा दान ए ॥ ११ ॥ ए तो सावद्य दान साक्षात ए, ते दियो कुपात्र हाथ ए। तिण में कहे मिश्र धर्म ए, तिण थी निश्चय बन्धसी कर्म ए ॥ १२ ॥ मुकलावो पहरावणी मुशाल ए, सगां ने जुवा जुवा संभाल ए। त्यांने द्रव्य देवे यश ने काम ए, गर्वदान छे तिण रो नाम ए ॥१३॥ कीर्तियावादी मल्ल ए, रावलियां रामत चल्ल ए। नट भोपा आद विशेष ए, दान देवे त्यांने द्रव्य अनेक ए ॥ १४ ॥ इण दान थी बंधे कर्म ए, मूर्ख कहे मिश्र धर्म ए। जेहनी प्रत्यक्ष खोटी वात ए, खोटी श्रद्धा ने भूल मिथ्यात ए ॥ १५ ॥ गणिकादिक सेवे कुशील ए, दान दे त्यांने करावे कील ए। ए तो प्रत्यक्ष खोटो काम ए, अधर्म दान छे तिण रो नाम ए ॥ १६ ॥ सूत्र अर्थ सिखाय ए, शुद्ध मारग आणे ठाय ए। आपे समकित चारित्र एह ए, धर्म दान छे आठमों तेह ए ॥ १७ ॥ वली मिले सुपात्र आण ए, देवे निर्दोषण द्रव्य जाण ए। ए तो दान मुक्त रो माग ए, तिण दियां दारिद्र जावे भाग ए ॥१८॥ छः काय मारण रा त्याग ए, कोई पच्चखे आणी वैराग ए। अभय दान कह्यो जिनराय ए, धर्म दान में भिलियो आय ए ॥ १६ ॥ सचित्तादिक

द्रव्य अनेक ए, उधारा जेम देवै विशेष ए। पाछो लेवा रो मन में ध्यान ए, नवमों काअन्ती दान ए ॥ २० ॥ सेगायत ने देवै जेह ए, हांती नेतादिक तेह ए। पाछो लेवण रो एकान्त काम ए, कन्तिति दान छै तिण रो नाम ए ॥ २१ ॥ नवमें दशमें दान नी चाल ए, धुर बोरै वालो ख्याल ए। ज्ञाणो माने सावद्य मांय ए, तिणमें मिश्र किहां थी थाय ए ॥२२॥ दश दान रो एह विचार ए, संक्षेप कह्यो विस्तार ए। वीर नी आज्ञा में दान एक ए, आज्ञा बारै दान अनेक ए ॥ २३ ॥ असं-यती घरे आवियो ए, निर्दोषण आहार बहिरावियो ए। तिण ने दियां एकन्त पाप ए, भगवती में कह्यो जिन आप ए ॥ २४ ॥ एम जाणी ने करो विचार ए, आठ अधर्म तणो परिवार ए। घणा सूत्रां नी साख ए, श्रीवीर गया छै भाष ए ॥ २५ ॥ धर्म अधर्म दान दोय ए, मिश्र म जाणो कोई ए। कैम जाणै मिथ्यात्वी जीव ए, मूल में नहीं सम्यक्त नींव ए ॥ २६ ॥

॥ इति ॥

अठारह पाप की ढाल।

॥ दोहा ॥

आज्ञा श्री अरिहन्तनी, निरवद्य दान में जाण।
सावद्य दान में स्थापने, लूखें मांडी ताण ॥ १ ॥
मिश्र धर्म प्ररूपने, नहीं सूलनो न्याय।
लोकांने गेरै फन्द में, कूड़ा चोंच लगाय ॥ २ ॥
अव्रत आस्रव में कह्यो, श्रीजिन मुख से आप ॥
सेयां सेवायां भलो जाणिय, तीनूं कारण पाप ॥ ३ ॥
व्रत धर्म श्रीजिन कह्यो, अव्रत अधर्म जाण।
मिश्र मूल दीसै नहीं, करै अज्ञानी ताण ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

जिन भाख्या पाप अठारह, सेयां नहीं धर्म लिगार।
शंका मत आणज्यो ए, सांची करि जाणज्यो ए ॥ १ ॥
जो थोड़ो घणो करै पाप, तिण थी होय सन्ताप। मिश्र
नहीं जिन कह्यो ए, समदृष्टि श्रद्धियो ए ॥ २ ॥ केई
कहै अज्ञानी एम श्रावक पोषां नहीं केम। भाजन
रत्ना तणो ए, नफो अति घणो ए ॥ ३ ॥ तिण री नहीं
जाणे न्याय, त्याने किम आणीजे ठाय। वहदो घालियो

ए, झगड़ो झालियो ए ॥ ४ ॥ हिवै सुणज्यो चतुर सुजान, श्रावक रतांरी खान । ब्रतां करि जाणज्यो ए, उलटी मत ताणज्यो ए ॥ ५ ॥ कोई रूंख बाग में होय, आम धत्तूरो दोय । फल नहीं सारखा ए, कीजो पारखा ए ॥ ६ ॥ आमांसूं लव लाये, सींचे धत्तूरो आय । आशा मन अति घणी ए, आम लेवण तणी ए ॥७॥ आंम गयो कुम्हलाय, धत्तूरो रह्यो हढाय । आवी ने जोवै जरै ए, नयनां नीर झरै ए ॥ ८ ॥ इण दृष्टान्ते जाण श्रावक ब्रत अम्ब समान । अब्रत अलगो रहो ए, धत्तूरा सम कहो ए ॥ ९ ॥ सेवावे अब्रत कोय, ब्रतां सामो जोय । ते भूला भ्रम में ए, हिन्सा धर्म में ए ॥ १० ॥ अब्रतेसे बन्धे कर्म, तिण में नहीं निश्चय धर्म । तीनूं करण सारखा ए, विरलाने पारखा ए ॥ ११ ॥ खाधां बन्धे कर्म, खुवायां मिश्र धर्म । ए झूठ चलावियो ए, मूर्ख मन भावियो ए ॥ १२ ॥ मिश्र नहीं साक्षात, ते किम श्रद्धीजे बात । अक्ल नहीं मूढ में ए, पड़िया रूढ में ए ॥१३॥ पोते नहीं बुद्धि प्रकाश, वली लाग्यो कुगुरांरो पाश । निर्णय नहीं करै ए, ते भव-सागर परै ए ॥१४॥ साधु संगति पाय, सुणे एक चित्त लगाय । पक्षपात परिहरै ए, ज्यों खबर बेगी परै ए ॥ १५ ॥ आनन्द आदि दे जाण, श्रावक दशूं बखाण । ते पड़िमा आदरी

ए, चर्चा पाधरी ए ॥१६॥ जे जे किया छै त्याग, आणो मन वैराग। ते करणी निर्मली ए, करीमें पूरे रली ए ॥ १७ ॥ बाकी रह्यो आगार, अव्रत में आण्यो आहार। अपनी जात में ए, समझो इण बात में ए, ॥ १८ ॥ अव्रत में दे दातार, ते किम उतरै पार। मार्ग नहीं मोक्ष रो ए, छान्दो इण लोक रो ए ॥ १९ ॥ दाता अन्न शुद्ध थाय, पात्र अव्रत में ल्याय। ते किम तारसी ए, किम पार उतारसी ए ॥ २० ॥ उपासक उववाई अङ्ग, वली सूयगड़ाङ्ग। सूत्रथी उद्धरी ए, अव्रत अलगी करी ए ॥ २१ ॥ जूनो गूढ मिथ्यात, त्यांरै किम बैसे ए बात। कर्म घणा सही ए, समझ पड़े नहीं ए ॥ २२ ॥ आगमनी दे साख, श्रीवीर गया छै भाख। भवियण निर्णय करै ए, भवसागर तिरै ए ॥ २३ ॥ देई सुपात्र दान, न करै मन अभिमान। ते संसार प्रत करै ए, शिवरमणी वरै ए ॥ २४ ॥ दान सूं तरिया अनन्त, ते भाष गया भगवन्त। ते दान न जाणियो ए, न्याय न छाणियो ए ॥ २५ ॥ साधु सुपात्र सोय, दाता सूझतो होय। अशनादिक शुद्ध दियो ए, ते लाभ मोटो लियो ए ॥ २६ ॥ साधु सुपात्र सोय. दाता सूझतो होय। अशनादिक शुद्ध नहीं ए, वैरायां नफो नहीं ए ॥ २७ ॥ कोई मिले मोटा अणगार, दाता अशुद्ध विचार। अश-

नादिक शुद्ध सही ए, बेरायां नफो नहीं ए, ॥ २८ ॥ मिलै कुपात्र कोय, दाता अन्न शुद्ध होय। पड़िलाभ्यां तिरै नहीं ए, सूत्र में इम कही ए ॥ २९ ॥ आणू मन विवेक, तीनां में शुद्ध नहीं एक। प्रतिलाभ्यां में धर्म नहीं ए, श्रीजिन मुख से कही ए ॥ ३० ॥ दाता अन्न पात्र विचार, तीनूं अशुद्ध निहार। तो धर्म न भाषै जती ए, झूठ जाणो मती ए ॥ ३१ ॥

तीन बोलां करि जीव अल्प आउखो बांधे ते ऊपर ढाल ।

॥ दोहा ॥

शुद्ध साधां ने अशुद्ध दान दे, जाणी ने अशुद्ध ले साध ।
दोनूं डूबा बापड़ा, जिनवर वचन विराध ॥१॥

॥ ढाल ॥

तीन बोलां करी जीवने जी, अल्प आउखो बंधाय । हिन्सा करे प्राणी जीव री, वलि बोले मृषा वायजी ॥ साधां ने अशुद्ध वहिरायजी, हिन्सा करि चोखो जायगां वणायजी । साधां ने उतारण री मन मांयजी, तिण रै अशुभ कर्म बंधायजी ॥ तीजे ठाणे कह्यो जिनरायजी, वलि सूत्र भगवती मांयजी । श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥

दड़े लीपे साधू कारणेजी, छपरा देवे छाय । फेलू पिण फिरतां थकां, जमियां जाला उखेले तायजी । लीलण फूलण मारी जायजी, अनन्ता जीव छै तिण रै म्हांयजी । वले अवर हणी छःकायजी, तिण री दया न आणी कायजी । तिण रै अल्प आयु बंधायजी ॥ श्री वीर कहै ॥ २ ॥

नींव दिरावे ठेट सूं जी, टांकी बजावे ताय। भेला करि भाठा चूणे, तिण बहुत हणे छः कायजी। अनन्ता जीव हणियां जायजी, ते पूरा केम कहिवाय जी। साधां ने उतारण रो मन ल्यायजी, तिण मोटो कियो अन्यायजी। तिण रे अल्प आयु बंधायजी॥ श्री वीर०॥ ३॥

जिण गरथ दियो थानक कारणेजी, ते पिण मराई छःकाय। किण मोल भाड़े ले भोगलावे, किण थाप राखी छे तायजी। इत्यादिक दोषीला कहिवायजी, खीणे खोटे समों करे जायजी। विधि २ सूं मारी छः कायजी, वलि मन मांहि हरषित थायजी। तिण रे अल्प आयुष्य बंधायजी॥ श्री वीर०॥॥ ४॥

आहार सिज्या वस्त्र पातराजी, इत्यादिक द्रव्य अनेक। अशुद्ध बहिरावे साधू ने ते डूबा बिना विवेक जी। त्यां झाली कुगुरां री टेकजी, त्यांरे कर्म आडी काली रेखजी। त्यांने सीख न लागे एकजी, गुरु ने पिण भ्रष्ट किया विशेषजी। संशय हुवे तो सूत्र ल्यो देखजी॥ श्री वीर०॥ ५॥

पाप उदे हुवे एहने, तो पड़े निगोद में जाय। अनन्त उत्कृष्टा भव करे, त्यां मार अनन्ती खायजी। रहे घणो संकड़ाई मांयजी, जक नहीं निगोद में

तायजी। वलि मर्ण वेगो वेगो थायजी. उपजे ने विले होजायजी। तिण रो लेखो सुणो चित्त ल्यायजी ॥ श्री वीर० ॥ ६ ॥

सतरह भव जाझेरा करै, एक श्वासोश्वास मझार। एक मुहूर्त्त में भव करै, साडा पैंट हजारजी। वलि छत्तीस अधिक विचारजी, एहवी जनम मरण री धारजी। मरण पामैं अनन्ती वारजी, अनन्त कालचक्र मझारजी। त्यांरो वेगो न आवै पारजी ॥ श्री वीर० ॥ ७ ॥

कदा पहली पड़े बंध नरक नो तो, पड़े नरक में जाय। खित्र वेदन छे अति घणी, परमाधामी मारै बतलायजी। तिहां मार अनन्ती खायजी, उठै कौण छुड़ावे आयजी। भूख तृषा अनन्ती थायजी, दुःख में दुःख उपजे आयजी। अशुद्ध दान दियां ए फल थायजी ॥ श्री वीर० ॥ ८ ॥

दुःख भोगविया नरक में जी, शेष बाकी रह्या पाप, तिण सूं जीव उपज जाय तिर्यंच में। उठै पण घणो शोग सन्तापजी, नहीं छूटै कियां विलापजी। आड़ा नहीं आवै गुरू मा बापजी, दुख भोगवे आपो आपजी। अशुद्ध दान दियां धर्म थापजी, ए पिण कुगुरु तणो प्रतापजी ॥ श्री वीर० ॥ ६ ॥

अशुद्ध जाणी ने भोगवे, त्यां भागी जिनवर पाल। अनन्त उत्कृष्टा भव करै, नर्क में जासे टांको झालजी। उठै मार देसे नर्क ना पालजी, कोधा कर्म लेवै संभालजी। रोसो कर्तव्य सांमो निहालजी, भगवती पहिलो शतक संभालजी। वलि नवमो उद्देशो संभालजी ॥ श्री वीर० ॥ १० ॥

आधा करमो जाणी भोगवे, तो बधे चिकणा कर्म। वलि भ्रष्ट थया आचारथी, त्यां छोड़ दियो जिन धर्मजी। निकल गयो त्यांरो मर्मजी, छोड़ दीधी लज्जा ने शर्म जी। विगोय दियो जिन धर्मजी, दुःख पाम्यो उत्कृष्टो पर्मजी ॥ श्री वीर० ॥ ११ ॥

साधू काजे हणे छःकाय ने, ते बार अनन्ती हणाय। साधू जाणी ने भोगवे ते, पण अनन्ता जनम मर्ण करै तायजी। ए दोनूं दुःखिया थायजी, भव २ में मार्या जायजी। ए कर्तव्य सूं मारी छः कायजी, ते दुःख भोगव लेवै तायजी। त्यांरो पार बेगो नहीं आयजी ॥ श्री वीर० ॥ १२ ॥

छः काय रै अशुभ उदय हुआ, ते पामें एकरसूँ घात। जे साधू पड़िया नर्क निगोद में, सेवकां ने ले जावे साथजी। त्यां मानी कुगुरां री बातजी, कीनी त्रस स्थावर नी घातजी। अनन्ता काल दुःख में जात

जो, यानि पण कुगुरां डबोया साख्यातजी ॥ श्री वीर० ॥ १३ ॥

गुरां ने डबोया श्रावकां, श्रावकां ने डबोया साध। दोनूं पड़िया नर्क निगोद में, श्री जिनवर धर्म विराध जी। संसार समुद्र अगाधजी, जिन धर्म री रहिंस नहीं लाधजी। भव भव में पामें असमाधजी, ए पण कुगुरां तणो प्रसादजी ॥ श्री वीर० ॥ १४ ॥

अशुद्ध जाणी देवै साधु ने, ते साधां ने लूंटी लिया ताय। पाप उदय हुवे इण भवे, दुःख दारिद्र धसे घर मांयजो। ऋद्ध सम्पति जावे विलायजी, दुःख मांहि दिन जायजो। कदा पुन्य भारी हुवे तायजो, तो परभव में शंका नहीं कायजी ॥ श्री वीर० ॥ १५ ॥

इम सांभल नर नारियांजो, कीज्यो मन में विचार। शुद्ध साधां ने जाणनेजी, अशुद्ध मत दीज्यो किणवार जी। अशुद्ध में धर्म नहीं लिगारजी, शुद्ध दान दे लाहो ल्यो सारजी। ज्यूं उतर जावो भव पारजी, ए मनुष्य जनम नो सारजी ॥ श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ १६ ॥

॥ इति ॥